प्रतिनिधि मंचीय नाटक

शास्त्री एवं अनिल

नाटक-क्रम

सांझ का समय

[जंगल में देवता गायें चरा रहे हैं। गायों को इकट्ठा कर स्वर्ग की ओर लौटने की तैयारी कर रहे हैं। इसी बीच तेज आंधी चलती है। आसमान पर धूल छा जाती है। कुछ लोग देवताओं की गायों को चुरा कर भागते हैं।]

देवता — बचाओ, बचाओ।

(जंगल में आवाज गूंजती है)

बचाओ, बचाओ!

एक — हमारी गायें कहां हैं ?

दूसरा — (चारों ओर देखकर) अरे! हमारी गायों को भगाकर ले गये।

तीसरा — देवताओं की गायों को चुराने की हिम्मत !

दूसरा — असुरों का काम है।

तीसरा — ये चोर पणि हो सकते हैं।

सभी — इनका पीछा करो।

[देवता दौड़ते हैं, किन्तु असुर गायों सहित ओझल हो जाते हैं, देवता निराश होकर खड़े रह जाते हैं ।]

पहला न जाने वे कहां गये ?

दूसरा गायें भी नहीं दिखाई दे रही हैं ।

तीसरा लगता है, वे रसा नदी के उस पार चले गये ।

ला वहां तो विशाल पहाड़ है और पहाड़ में गहरी गुफाएं हैं ।

सरा उन्हीं में छिप गये होंगे ।

ीसरा तलाशना मुश्किल है ।

ल को खबर करना चाहिए ।

[सभी का लौटना]

[स्वर्ग में इन्द्र का दरबार]

[देवराज इन्द्र सिंहासन पर बैठे हुए हैं। सेवा में देवता हैं। मेनका नाच रही है]

द्वारपाल (प्रवेश कर) देवराज की जय हो !

[नाच का रुकना]

इन्द्र क्या कहना चाहते हो ?

द्वारपाल वन से देवता आये हैं।

इन्द्र भीतर बुलाओ।

[द्वारपाल जाता है और देवताओं के साथ फिर आता है]

सब देवराज की जय हो !

इन्द्र आप सभी घबरा क्यों रहे हैं।

सब बचाओ। बचाओ !

इन्द्र क्या हुआ ?

सब पणि हमारी गायें चुरा ले गये।

इन्द्र और तुम सब देखते रह गये।

सब हमने बहुत पीछा किया, लेकिन वे ओझल हो गये।

इन्द्र और तुम यह खबर देने यहां आ गये ?

[सब सिर झुकाये खड़े रहते हैं]

इन्द्र (क्रोध से) पणियों का यह साहस। देवताओं की शक्ति को ललकार रहे हैं। हमारी गायें उनसे छुड़ानी होंगी।

बृहस्पति देवराज। धीरज धरिए !

इन्द्र गुरुदेव ! हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे रह सकते।

बृहस्पति हमें यह मालूम करना होगा कि वे कहां छिपे हुए हैं ?

इन्द्र किसी न किसी गुफा में छिपे होंगे।

बृहस्पति कब तक गुफाओं में भटकते रहेंगे। यदि उन्हें शक हो गया तो व एक गुफा से दूसरी गुफा बदलते रहेंगे और हम उन्हें कभी नहीं पा सकेंगे।

इन्द्र (सिर पर हाथ रख कर) गुरुदेव ! फिर आप ही कहिए, हमें क्या करना चाहिए ?

बृहस्पति हमें गुप्तचर द्वारा जानकारी लेनी चाहिए। सही पता मालूम होने पर हमारी सेना उन पर आसानी से हमला कर सकेगी।

इन्द्र गुरुदेव ! आपने सही उपाय बताया है। हम सुपर्ण नाम के गीध को जासूसी करने भेजेंगे। सुपर्ण को बुलाया जाय।

(चर का जाना और सुपर्ण के साथ आना)

सुपर्ण — देवराज की जय हो !

देवराज — सुपर्ण ! तुम्हारा कल्याण हो !

सुपर्ण — आपकी सेवा में हाजिर हूं ।

देवराज — सुपर्ण ! हमारी गायें पणि लोग चुरा कर ले गये । तुम शरीर से कमजोर हो लेकिन् तेज बुद्धिवाले हो ! हमें तुम पर गौरव है ।

सुपर्ण — देवराज । आज्ञा दीजिए !

देवराज — तुम रसा नदी के उस पार जाओ । वे चोर पहाड़ की किसी गुफा में छिपे हुए है । उनका पता लगा कर जल्दी ही लौट आओ । यह राष्ट्रीय कार्य है, इसके लिए तुम्हारा स्वागत किया जायेगा ।

इन्द्र क्या हुआ ?

सब पणि हमारी गायें चुरा ले गये ।

इन्द्र और तुम सब देखते रह गये ।

सब हमने बहुत पीछा किया, लेकिन वे ओझल हो गये ।

इन्द्र और तुम यह खबर देने यहां आ गये ?

[सब सिर झुकाये खड़े रहते हैं]

इन्द्र (क्रोध से) पणियों का यह साहस । देवताओं की शक्ति को ललकार रहे हैं । हमारी गायें उनसे छुड़ानी होंगी ।

वृहस्पति देवराज । धीरज धरिए !

इन्द्र गुरुदेव ! हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे रह सकते ।

वृहस्पति हमें यह मालूम करना होगा कि वे कहां छिपे हुए हैं ?

इन्द्र किसी न किसी गुफा में छिपे होंगे ।

वृहस्पति कब तक गुफाओं में भटकते रहेंगे । यदि उन्हें शक हो गया तो व एक गुफा से दूसरी गुफा बदलते रहेंगे और हम उन्हें कभी नहीं पा सकेंगे ।

इन्द्र (सिर पर हाथ रख कर) गुरुदेव ! फिर आप ही कहिए, हमें क्या करना चाहिए ?

वृहस्पति हमें गुप्तचर द्वारा जानकारी लेनी चाहिए । सही पता मालूम होने पर हमारी सेना उन पर आसानी से हमला कर सकेंगी ।

इन्द्र गुरुदेव ! आपने सही उपाय बताया है । हम सुपर्ण नाम के गीध को जासूसी करने भेजेंगे । सुपर्ण को बुलाया जाय ।

पणि लोग यह इन्द्र का पक्का विश्वासी है।

बूढ़ा असुर लोभ से गला भी काटा जा सकता है।

सभी हमें इसे लालच देना चाहिए।

(आकाश की ओर देखकर)

बूढ़ा पणि सुपर्ण ! आपका स्वागत है।

सुपर्ण (मन में) नीचे उतर कर सारी जानकारी करनी चाहिए।

(गुफा के बाहर उतरता है।)

बूढ़ापणि आपका कल्याण हो ! आप बहुत दूर से चलकर आ रहे हैं। थक गये होंगे ?

सुपर्ण (मनमें) कितने अच्छे लोग है।

बूढ़ा पणि आप हमारे अतिथि हैं।

सुपर्ण (मनमें) दुश्मन का मेहमान। नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता।

बूढ़ा पणि यह आपके लिए ताजा दूध है।

सुपर्ण (ललचाकर) ताजा दूध !

बूढ़ा पणि यही दही भी !

सुपर्ण दही।

बूढ़ा पणि ताजा मक्खन भी !

वृढापणि अभी कहाँ जा रहे हैं ?

सुपर्ण मुझे बहुत दूर जाना है ।

वृढापणि हमारे पास दूध, दही व मक्खन का अथाह भंडार है । आप कुछ दिन यहीं ठहरिए और जीवन का आनन्द लीजिए ।

सुपर्ण (मन में) यह मौका फिर हाथ न लगेगा । (प्रकट) तुम्हारी यही इच्छा है तो कुछ दिन और सही ।

[सुपर्ण वहां रहने लगा और जी भर भोजन करने लगा]

(कुछ दिनों बाद)

सुपर्ण (मन में) अब मुझे यहां से चलना चाहिए, वर्ना देवराज मेरी तलाश में किसी न किसी को भिजवायेंगे ।

वृढापणि श्रीमान् ! आप क्या सोच रहे हैं ?

सुपर्ण अब मैं यहां एक पल भी नहीं ठहर सकता हूं । मुझे इजाजत दीजिए ।

वृढापणि हम तो आपको पाकर निहाल हो गये । आप जैसा सज्जन कहां मिलता है ।

सुपर्ण मैं भी यहां रह कर बहुत खुश हूं, लेकिन सेवा से हटना भी पाप है ।

वृढापणि हम से कोई गलती तो नहीं हो गई ?

सुपर्ण मैं बहुत खुश हूं ।

वृढापणि 'आप हम पर कृपा करेंगे ?

सुपर्ण कहो, क्या चाहते हो ?

वृढापणि आपसे प्रेम का रिश्ता हो गया, आप को कभी हम नहीं भुला सकते । मुझे पूरा भरोसा है कि आप

सुपर्ण   मक्खन !

बूढा पणि आप क्या विचार रहे हैं ?

सुपर्ण   नहीं, नहीं ।

बूढा पणि इस वन में ये चीजें कही नहीं मिलेगी। आप को लेना ही होगा ।

सुपर्ण   (मन में) यहां कौन देख रहा है ? ये पणि भी मुझे नहीं जानते हैं। इतना मधुर रस छोड़ना भी ठीक नहीं है ।

[वह जी भर कर दूध, दही व मक्खन खाने लगता है]

सुपर्ण   (मन में) कितना स्वाद आ रहा है ।

बूढापणि   श्रीमान् ! मक्खन और लीजिए ।

सुपर्ण   मेरा जी भर गया । अब मै जाना चाहूंगा ।

सुपर्ण	महाराज ! रसा नदी के उस पार पहाड़ की सारी गुफाओं पर मंडराता रहा। भूखा-प्यासा भटकता रहा, लेकिन पाणियों का कुछ भी पता न लग सका।

इन्द्र	तुम आज तक कभी निराश नही लौटे।

सुपर्ण	इस बार तो मैं खाली हाथ ही लौट सका हूं।

इन्द्र	घूमने से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो गया।

सुपर्ण	(घबड़ाकर) देवराज ! ऐसी····तो······कोई···· बात नहीं है।

इन्द्र	लगता है, तुम्हारी अच्छी आव-भगत हुई है।

सुपर्ण	महाराज, मैं सच कहता हूं, मुझे कोई नहीं मिला।

इन्द्र	तुम राष्ट्र भक्त हो, तुम पर हम हमेशा भरोसा करते आये हैं। तुम झूंठ क्यों बोलने लगे ?

सुपर्ण	हां, देवराज मैं कभी झूंठ नहीं बोलता।
(कहता हुआ लड़खड़ाता है)

इन्द्र	(देखकर) सुपर्ण ! तुम परेशान क्यों हो ?

सुपर्ण	ऐसी तो कोई बात नहीं है।

इन्द्र	तुम्हारे मुंह पर डर मंडरा रहा है।

सुपर्ण	(संभल कर) नहीं तो।

इन्द्र	तुम्हारे पांव भी लड़खड़ा रहे हैं।
(सुपर्ण कांपने लगता है)

इन्द्र	देवताओं ! आप सभी देख रहे हैं, हमारे सत्यवादी सुपर्ण को। इनका सारा शरीर कांप रहा है, मुंह

हमारी मेहमानदारी को कभी नहीं भूला सकेंगे। इसीलिए हम आपसे कुछ चाहते हैं।..

सुपर्ण कहिए, मैं आपको क्या दे सकता हूं।

बूढापणि आप इन्कार तो नहीं करेंगे ?

सुपर्ण मैंने आपका अन्न खाया है, यह कैसे हो सकता है।

बूढापणि आप देवराज के गुप्तचर हैं ?

सुपर्ण हां

बूढापणि आप गायों का पता लगाने आये हैं ?

सुपर्ण ऐं तुम्हें कैसे मालूम ?

बूढापणि आप सब कुछ जान गये हैं।

सुपर्ण इसीलिए तो आया हूं।

बूढापणि अब आप देवराज से कुछ नहीं कहेंगे।

सुपर्ण (मन में) यह कैसे हो सकता है ?

बूढापणि आपने हमको वचन दिया हैं।

सुपर्ण मैं कुछ नहीं कहूंगा।

बूढापणि (प्रसन्नता के साथ) आप कभी भी पधारे। हमेशा आपका स्वागत होगा। आपके लिए मीठा दूध, दही और ताजा मक्खन रहेगा।

सुपर्ण मैं तुम पर बहुत खुश हूं। तुम भरोसा करो, यह राज राज ही रहेगा।

(सुपर्ण का लौटना)

(इन्द्र की सभा)

(सुपर्ण का प्रवेश)

सुपर्ण देवराज की जय हो !

इन्द्र सुपर्ण ! बहुत समय लगा दिया ?

सुपर्ण महाराज ! रसा नदी के उस पार पहाड़ की सारी गुफाओं पर मंडराता रहा। भूखा-प्यासा भटकता रहा, लेकिन पाणियों का कुछ भी पता न लग सका।

इन्द्र तुम आज तक कभी निराश नही लौटे।

सुपर्ण इस बार तो मैं खाली हाथ ही लौट सका हूं।

इन्द्र घूमने से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो गया।

सुपर्ण (घबड़ाकर) देवराज ! ऐसी····तो······कोई···· बात नहीं है।

इन्द्र लगता है, तुम्हारी अच्छी आव-भगत हुई है।

सुपर्ण महाराज, मैं सच कहता हूं, मुझे कोई नहीं मिला।

इन्द्र तुम राष्ट्र भक्त हो, तुम पर हम हमेशा भरोसा करते आये हैं। तुम झूठ क्यों बोलने लगे ?

सुपर्ण हां, देवराज मैं कभी झूठ नहीं बोलता।
(कहता हुआ लड़खड़ाता है)

इन्द्र (देखकर) सुपर्ण ! तुम परेशान क्यों हो ?

सुपर्ण ऐसी तो कोई बात नही है।

इन्द्र तुम्हारे मुंह पर डर मंडरा रहा है।

सुपर्ण (संभल कर) नहीं तो।

इन्द्र तुम्हारे पांव भी लड़खड़ा रहे हैं।
(सुपर्ण कांपने लगता है)

इन्द्र देवताओं ! आप सभी देख रहे हैं, हमारे सत्यवादी सुपर्ण को। इनका सारा शरीर कांप रहा है, मुंह

पर पसीना आ रहा है। ओह ! देश के लिए कितना कष्ठ उठाया है।

(देवराज अचानक जोर से हँसते हैं)

(सभी देवता हंसते हैं)

इन्द्र — सुपर्ण ! तुम्हारा शरीर वता रहा है कि तुमने स्वादिष्ट भोजन किया है। दुश्मनों के मेहमान वनकर तुम रहे हो।

सुपर्ण — यह सब झूठ है।

इन्द्र — तुम सच नहीं कह सकते हो !

सुपर्ण — मैं सच कह रहा हूं।

इन्द्र — तुम देश के दुश्मन हो !

सुपर्ण — (आगे बढ़कर) देवराज ! मैं आपके चरण पकड़ता हूं।

(चरणों में गिर जाता है)

इन्द्र — मूर्ख ! तुम जिसका अन्न खाते हो, उसी के साथ दगा करते हो। अपनी माटी के भी दुश्मन बन गये (गरदन पकड़कर मरोड़ते हुए) मैं तुम्हें देखना भी नहीं चाहता हूं।

सुपर्ण — दे···दे···दे···व···रा···ज !

(गिड़गिड़ाता है)

इन्द्र — तुझे धिक्कार है। नीच ! तुझे जीने का अधिकार नहीं है। लेकिन मैं तुझे मारूंगा नहीं।

सुपर्ण — दे···दे···व···राज ! मुझे क्षमा करो !

इन्द्र — तू राष्ट्र द्रोही है। तुझे ऐसा शाप दूंगा कि तेरी पीढ़ियां भी तुझ से नफरत करें।

सुपर्ण — मेरी सुनिए भी, मैं हाथ जोड़ता हूं।

इन्द्र — तू लालची निकला। लालच में आकर तूने राष्ट्र के साथ गद्दारी की। जा, आज से तू और तेरे वंश में पैदा होने वाले गन्दी चीजें ही खायेंगे।

सुपर्ण — देवराज! मुझसे गलती हो गई। मैं खाने-पीने के लालच में फंस गया। (गिड़गिड़ाता है)

इन्द्र — तू अपने कर्म का फल भोग! दुनियां में तेरा नाम लेना या देखना भी अशुभ माना जायेगा।

(हाथ से उठाकर दूर फेंक देते हैं)

इन्द्र — आप सभी ने इस गद्दार का हाल देख लिया। दूध-दही के लालच में इसने अपने ही राष्ट्र के साथ विश्वासघात किया।

देवता — इसे स्वर्ग से नीचे फेंकना ठीक होगा।

(उसे उठाकर नीचे फेंकते हैं)

सुपर्ण — हाय! मैं मरा! हाय, मैं मरा! मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

देवता — जैसा किया, वैसा पाया।

दूसरा दृश्य

(इन्द्र की राज सभा)

[इन्द्र व दूसरे देवता सोच-विचार में लगे हुए]

इन्द्र — गुरुदेव! अब क्या किया जाय?

बृहस्पति — सुपर्ण ऐसा करेगा, भरोसा भी नहीं किया जा सकता।

इन्द्र — (झुंझलाकर) उस नीच का नाम भी न लीजिए! उसकी याद करना भी पाप है।

देवता — हमारी गायों का क्या होग?

इन्द्र — इन्द्र के रहते पणि क्या बच सकेंगे।

देवता — लेकिन अभी तो उनका कुछ पता भी नहीं लग पाया।

इन्द्र — यहीं तो मैं विचार रहा हूं।

[illegible] — देवराज! एक उपाय है।

इन्द्र शीघ्र कहिए।

वृहस्पति हमारे पास और भी गुप्तचर हैं।

इन्द्र किसी देवता को भेजना आसान नहीं है।

वृहस्पति सरमा नाम की कुतिया भी है।

इन्द्र (प्रसन्नता से) गुरुदेव ! आपने ठीक उपाय बताया। सुरमा को बुलाया जाय !

(सेवक का जाना व सरमा को साथ लेकर आना)

सरमा देवराज की जय हो !

इन्द्र तुम्हारा कल्याण हो।

सरमा आपने मुझे याद किया ?

इन्द्र सरमा ! आज देवताओं पर बहुत बड़ी आफत आई हुई है। यह हमारे राष्ट्र की इज्जत का सवाल है।

इन्द्र — आप सभी ने इस गद्दार का हाल देख लिया। दूध-दही के लालच में इसने अपने ही राष्ट्र के साथ विश्वासघात किया।

देवता — इसे स्वर्ग से नीचे फेंकना ठीक होगा।

(उसे उठाकर नीचे फेंकते हैं)

सुपर्ण — हाय! मैं मरा! हाय, मैं मरा! मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

देवता — जैसा किया, वैसा पाया।

दूसरा दृश्य

(इन्द्र की राज सभा)

[इन्द्र व दूसरे देवता सोच-विचार में लगे हुए]

इन्द्र — गुरुदेव! अब क्या किया जाय?

बृहस्पति — सुपर्ण ऐसा करेगा, भरोसा भी नहीं किया जा सकता।

इन्द्र — (झुंझलाकर) उस नीच का नाम भी न लीजिए! उसकी याद करना भी पाप है।

देवता — हमारी गायों का क्या होगा?

इन्द्र — इन्द्र के रहते पणि क्या बच सकेंगे।

देवता — लेकिन अभी तो उनका कुछ पता भी नहीं लग पाया।

इन्द्र — यहीं तो मैं विचार रहा हूं।

बृहस्पति — देवराज! एक उपाय है।

[सरमा जाती है, सभी देवता उसकी ओर आशा-भरी नजर से देखते हैं]

(नदी के उस पार पर्वतमाला)

[सरमा अपनी नाक से सूंघती हुई पर्वतमाला पर आगे कदम बढा रही है]

(सामने गुफा देखकर वह ठिठकती है)

सरमा (मन में) इसी गुफा में गायें होनी चाहिए। लेकिन् यहां कोई नहीं दिखाई दे रहा है। आगे कदम बढ़ाती हूं।

(गुफा के दरवाजे पर कान लगाकर) किसी की आवाज आ रही है। मुझे भीतर चलना चाहिए।

सरमा — आज्ञा दीजिए, महाराज ।

इन्द्र — पणि नाम के असुर हमारी गायें चुराकर रसा नदी के उस पार ले गये है ।

सरमा — मुझे क्या करना है ?

इन्द्र — तुम हमारी विश्वास पात्रा हो !

सरमा — आपकी बड़ी कृपा है ।

इन्द्र — तुम्हारे समान समय को पहचानने वाला यहां दूसरा कोई नहीं है ।

सरमा — मैं तो आपकी दासी हूं । आज्ञा दीजिए ।

इन्द्र — तुम्हें रसा नदी के उस पार जाना है । हमारी गायों का पता लगाना है ।

सरमा — देवराज मैं कोशिश करूंगी ।

इन्द्र — हमें भरोसा है कि तुम्हें सफलता जरुर मिलेगी ।

सरमा — आपकी कृपा से ही ।

इन्द्र — वे असुर बड़े छली हैं ।

सरमा — मैं अपने धर्म पर रहूंगी ।

इन्द्र — उनसे सावधान रहना जरूरी है ।

सरमा — अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी गायों का पता लगाऊंगी ।

इन्द्र — तुम्हारी सफलता पर हमारा राष्ट्र गौरव करेगा ।

सरमा — मुझे आज्ञा दीजिए ।

इन्द्र — तुम्हारा मार्ग बाधा रहित हो ।

सरमा — मुझे न दूध, न दही और न मक्खन ही चाहिए। मुझे कुछ नहीं होना है।

बूढ़ापणि — आपके उपवास है क्या ?

सरमा — नहीं।

बूढ़ापणि — इस जंगल में आपको कुछ भी नहीं मिलेगा।

सरमा — रसा का शीतल जल काफी है -

बूढ़ापणि — जल से प्यास बुझती है, भूख नहीं मरती।

सरमा — मैं भूख से मरने वाली नहीं हूं।

बूढ़ापणि — देवीजी ! आप नाराज न हों ! मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं।

सरमा — पूछो !

बूढ़ापणि — आप इस भोजन से नफरत क्यों कर रही हैं ?

सरमा — यह भोजन नहीं, लालच है।

(सरमा गुफा के भीतर जातीं है। पणि लोग उसे देखकर चौंक जाते हैं।

पणिलोग यह कौन है।

बूढ़ापणि यह भी कोई गुप्तचर होगी।

पणिलोग इससे कैसे बचा जाय !

बूढ़ापणि इसे भी गीध की तरह चंगुल में फंसाना होगा।
(सरमा के पास आने पर)

बूढ़ापणि आओ देवि ! तुम्हारा स्वागत है।
(सरमा ने सिर हिला दिया)

बूढ़ापणि आप सकुशल तो है ?

सरमा मुझे क्या होने लगा ?

बूढ़ापणि आप बहुत दूर से चलकर आ रही हैं।

सरमा यात्री के लिए क्या दूरी ?

बूढ़ापणि आप यहां आराम कीजिए। आप हमारी मेहमान हैं।

सरमा मै मेहमान कैसे हो सकती हूं।

बूढ़ापणि आप आराम तो कीजिए, देखिए यह ताजा दूध !
(सरमा ने सिर हिला दिया)
देखिए यह ताजा दही !
(सरमा ने नाक सिकोड़ लिया।)
आपको कुछ भी पसंद नहीं। यह ताजा मक्खन !

पणिलोग — यह क्या किया ?

बूढ़ापणि — देवीजी ! यह अनादर अच्छा नहीं है।

सरमा — मैं जिस लिए आई हूं, वह पूरा हो चुका है।

बूढ़ापणि — आप क्यों आई हैं।

सरमा — गायों की तलाश में।

बूढ़ापणि — कौन सी गायें।

सरमा — जो यहां बन्धी हुई हैं।

बूढ़ापणि — ये तो हमारी हैं।

सरमा — हां, कुछ चोर [illegible] इन्द्र के [illegible] होते हैं, और कुछ चोरों के यहां [illegible] पार है।

बूढ़ापणि — तुम इन्द्र की कुतिया हो !

सरमा — मैं उनकी दासी हूं।

बूढ़ापणि — इन्द्र हमारा क्या कर लेगा ?

सरमा — तुम सभी को मार डालेगा।

पणिलोग — (अपने हाथ में हथियार उठाकर) हम इन्द्र को जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।

सरमा — मैं तुम्हें अभी भी समझाती हूं। तुम्हारा भला इसी में है कि तुम इन्द्र के सामने अपना अपराध मंजूर कर लो इन गायों को उन्हें सौंप दो ! और अपनी जान बचालो !

पणिलोग — सरमा ! हम ऐसे मर्द नहीं हैं, जो तुम जैसी कुतिया के कहने में [illegible] र गायों को लौटा दें।

[illegible] कैसा लालच ?

रमा मैं मुफ्त भोगी नहीं हूं ।

[illegible] यह तो भला देवता था ।

रमा तुम लोगों ने उसे लालच देकर देश द्रोही बना दिया । और मुझे भी उसी चंगुल फंसाना चाहते हो । मैं तुम्हारे चंगुल में फंसने वाली नहीं हूं ।

[illegible] देवीजी ! आपको किसने बहका दिया ? हम तो सीधे-सादे लोग हैं । इधर से जाने वाले मुसाफिरों का आदर करते हैं । आप गलत न समझिए ! यह लीजिए ताजा झाग वाला दूध ।

(उसके आगे दूध का कटोरा रखता है)

रमा (पंजे से बरतन को ठोकर मारती हुई) तुम मुझे अभी भी नहीं समझ सके ।

आकाश में स्वर गूंजता है–बहिन! सरमा ! सरमा, रुको !

(सरमा मुड़ कर देखती है)

सरमा "बहिन सरमा !" यह कोई नई चाल मालूम होती है ।

दृढापणि बहिन सरमा !

सरमा कुतिया और बहिन !

दृढापणि तुम हमारी बहिन हो !

सरमा मैं बहिन कैसे हुई ?

दृढापणि तुम हमारे यहां कुछ क्षण रही हो । हम तुम्हारी हमेशा रक्षा करेंगे । भाई का फर्ज है कि बहिन की रक्षा करना और बहिन का···

सरमा (बीच ही में) भाई की रक्षा करना ।

दृढापणि हां, तुम समझ गई । हम तुम से एक ही दान चाहते हैं ।

सरमा क्या ?

दृढापणि बहिन सरमा ! तुम इन्द्र से जाकर यहां के बारे में कुछ न कहोगी ।

सरमा क्यों ?

दृढापणि बहिन ! हम तुम्हारे भाई हैं ।

[illegible] हां, हां बहिन ! हम सब तुम्हारे भाई हैं । [illegible] का फर्ज है कि भाईयों की रक्षा करे । [illegible] बहिन हो ! तुम अपने भाईयों का [illegible] नहीं चाहोगी ।

सरमा क्या तुम गायें नहीं लौटाओगे –

पणिलोग हम बिना युद्ध के एक भी गाय नहीं देने वाले हैं बेचारे देवता हमें देखकर ही भाग जाते हैं। वे हम से क्या लड़ेंगे। देखो, हमारे पास कितने तेज़ धार के हथियार हैं, इनके आगे कौन ठहर सकता है ?

(आकाश में हंसते हैं)

सरमा यह तुम्हारा झूंठा घमंड है।

पणिलोग तुम जाकर इन्द्र से कह दो कि हम एक भी गाय नहीं देंगे।

सरमा विनाश के समय बुद्धि भी विपरीत हो जाती है। ऐसा लगता है कि अब तुम्हारा आखिरी वक्त आ गया है।

पणिलोग जा ! जा !! जा !!!

[सरमा जाने लगती है] (कुछ कदम आगे जाने पर)

बूढापणि इसे रोको !

पणिलोग इसे रोक कर क्या करेंगे।

बूढापणि यह इन्द्र से सब कुछ कह देगी।

पणिलोग हम इन्द्र का सामना करेंगे।

बूढापणि हमारी विजय आसान नहीं है। सरमा को रोको !

पणिलोग आप ही कोई रास्ता निकालिए।

(बूढा पणि तेज स्वर में आवाज लगाता है)

बहिन ! सरमा ! बहिन सरमा ! रुको !

आकाश में स्वर गूंजता है–बहिन! सरमा ! सरमा, रुको।

(सरमा मुड़ कर देखती है)

सरमा — "बहिन सरमा !" यह कोई नई चाल मालूम होती है।

वृत्रापणि — बहिन सरमा !

सरमा — कुतिया और बहिन !

वृत्रापणि — तुम हमारी बहिन हो !

सरमा — मैं बहिन कैसे हुई ?

वृत्रापणि — तुम हमारे यहाँ कुछ क्षण रही हो। हम तुम्हारी हमेशा रक्षा करेंगे। भाई का फर्ज है कि बहिन की रक्षा करना और बहिन का···

सरमा — (बीच ही में) भाई की रक्षा करना।

वृत्रापणि — हाँ, तुम समझ गई। हम तुम से एक ही दान चाहते हैं।

सरमा — क्या ?

वृत्रापणि — बहिन सरमा ! तुम इन्द्र से जाकर यहाँ के बारे में कुछ न कहोगी।

सरमा — क्यों ?

वृत्रापणि — बहिन ! हम तुम्हारे भाई हैं।

सरमा (चीखकर) कुए में गिर गया यह भाई-बहिन का रिश्ता ।

पणिलोग यह क्या कह रही हो बहिन !

सरमा कैसे भाई ? कैसी बहिन ? तुम लोगों से मेरा क्या रिश्ता ?

पणिलोग तुम नहीं मानोगी ?

सरमा मैंने तुम सभी को बता दिया कि तुम इन गायों को देवराज को लौटा दो !

पणिलोग वर्ना ? यह इन्द्र

सरमा वर्ना क्या ? तुम लोगों को मारकर गायें पालेगा ।

पणिलोग तुम अपनी जिद पर हो !

सरमा मैं अपना धर्म नहीं छोड़ सकती ।

पणिलोग मान भी जाओ । वर्ना···

सरमा वर्ना क्या ?

पणिलोग तुम यहाँ से जा न सकोगी ।

सरमा तुम लोग मुझे रोकने वाले कौन हो ?

बूढ़ापणि इसे पकड़लो ।
(सरमा दौड़ने लगती है । पणि असुर पीछा करते हैं । सरमा उनकी आँखों से ओझल हो जाती है)

[इन्द्र की सभा]

इन्द्र गुरुदेव ! सरमा अभी तक नहीं आई ?

वृहस्पति आने ही वाली होगी ।

इन्द्र कहीं वह भी असुरों के लालच में·········
(घबराई हुई सरमा का प्रवेश)

सरमा देवराज ! यह खयाल कैसे आया ?

इन्द्र सरमा ।

सरमा आपने मुझ पर अविश्वास कैसे किया ।

इन्द्र तुम्हें बहुत देर हो चुकी थी । हमने विचारा कि उन दुष्टों ने तुम्हें भी

सरमा लालच में फंसा लिया होगा ।

इन्द्र हां ।

सरमा उन्होंने कोशिश तो बहुत की । यहां तक कि मुझे जान से भी मारना चाहा, लेकिन् मैं उनके चुंगल से निकल आई ।

इन्द्र तुम्हें पणियों का पता लग गया ।

सरमा हां, देवराज !

इन्द्र वे कहां हैं ?

सरमा रसा नदी के उस पार एक [illegible] में---

इन्द्र हम अभी चलेंगे ।

सरमा पधारिए ।

इन्द्र देवताओं ! तैयार हो जाओ ! हमें अभी सरमा के

साथ उस जगह जाना है, जहां हमारी गायें दुःख पा रही हैं।

देवता हम सभी तैयार हैं।

(हथियार उठाकर इन्द्र का अनुकरण करते हैं)

(इन्द्र की सभा)

देवता देवराज की जय हो !
सुरपति की जय हो !

इन्द्र हमने पणियों पर विजय सरमा के कारण पाई है। सरमा की जय बोलो !

देवता सरमा की जय हो !
राष्ट्र भक्त सरमा की जय हो !

इन्द्र राष्ट्र सेविका सरमा की जय हो !

सरमा देवराज ! नहीं, नहीं, ऐसा न कहिए।

फिर क्या कहें !

सरमा	राष्ट्र की जय हो !
धर्म की जय हो !

सभी	राष्ट्र की जय हो !
धर्म की जय हो !

इन्द्र	सरमा ! तुम महान हो ! तुम पर इस राष्ट्र को गर्व है । हम आज तुम्हारा अभिनन्दन करेंगे ।

सरमा	मैं तो इस राष्ट्र की तुच्छ प्राणी हूं ।

इन्द्र	नहीं, सरमा ! तुमने लालच छोड़कर राज्य की भलाई का काम किया है । देवताओ हमारा आदेश है कि राष्ट्र सेविका सरमा का धूमधाम से स्वागत किया जाय ।

देवता हम सभी हृदय से स्वागत करते है।

इन्द्र आज से सभी कुत्ते सारमेय कहलायेंगे। देवताओं को मिलने वाला भोजन तुम्हारे वंशजों को मिला करेगा।

सरमा राष्ट्र की जय !
धर्म की जय !
चरित्र की जय !

इन्द्र राष्ट्र सेविका सरमा की जय !

(पर्दा गिरता है)

एकता के दीप

पात्र

भूषण	–	वय 30 वर्ष
लीला	–	वय 25 वर्ष
राधेश्याम	–	वय 40 वर्ष
इशाक	–	वय 30 वर्ष
राजू	–	वय 5 वर्ष
रज्जो	–	वय 4 वर्ष
फकीरा	–	वय 28 वर्ष

[परदा खुलने पर मंच पर एक मजदूर की कोठरी का दृश्य दिखाई पड़ता है। चारों ओर विपनता की छाया। एक ओर कोने में बिछी एक पुरानी खाट पर उदास सी चितामग्न बैठी है लीला गौरवर्णीय, आकर्षक-किंतु ऐसा लगता है कि उसके आकर्षण पर उसकी गरीबी की छाया हावी हो गई है। शरीर पर फटी धोती व फटा ब्लाउज।

कुछ पल बाद भूषण का प्रवेश। फटा खाकी का पेंट व थिगड़े लगा बुशर्ट। पैरों में रबर की दोपटियां चप्पल। भूषण सामान्य कद व स्वास्थ्य का आकर्षक युवक यद्यपि उसका आकर्षण भी गरीबी की लपेट में दम तोड़ रहा प्रतीत होता है।]

लीला [उत्सुकता से खड़ी होकर] क्या हुआ ?

भूषण [गहरी सांस छोड़] जिसका डर था, वही हुआ। मिल मालिक और मजदूर नेताओं में होने वाली बातचीत बिना किसी समझौते के टूट गई।

लीला [विचलित सी] कोई समझौता न हो सका ?

भूषण नहीं। दरअसल दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं।

लीला लेकिन इतना बड़ा त्यौहार······

भूषण हाँ, इस त्योहार की बात को सोचकर ही मिल मालिकों ने मजदूरों को झुका लेने की बात सोची थी। उन्होंने सोचा था कि अपनी मांगों को लेकर पिछले दो माह से लड़ रहे ये फटेहाल मजदूर इस समय लाचार और बेबस हैं। उन्होंने हमारी मजबूरी का सौदा करने की कोशिश की।

लीला [दांत भींचकर] ये मतलब परस्त दौलत मद लोग···

भूषण उन्होंने कहा कि अगर उनकी मांगों को मानकर मजदूर अपनी हड़ताल खत्म कर काम पर वापस आ जायें तो पिछले दो माह की तनख्वाह के अलावा वे त्योहार का एडवांस भी फौरन दे देंगे। उनका ख्याल था कि अपनी फटे हालों से परेशान और हलाकान मजदूर फौरन उनके आगे घुटने टेक देंगे। पर मजदूरों ने साफ कह दिया कि वे भूखो मर जायेंगे लेकिन पूंजी पतियों की मनमानी के आगे सर न झुकायेंगे।

लीला फिर अब······अब क्या होगा ? इतना बड़ा त्योहार···

भूषण. यूनियन की ओर से सभी मजदूरों को त्योहार के लिये पचीस-पचीस रुपये दिये गये हैं।

लीला सिर्फ पचीस रुपये···और साल भर का दीवाली का त्योहार···

भूषण अब यूनियन वाले कोई धन्ना सेठ तो हैं नहीं··· हजारों मजदूर हैं···गनीमत कि पचीस दे दिये···

लीला ऐसा करो, जल्दी दुकान जाकर आटा-दाल वगैरह ले आओ···आज लक्ष्मीपूजन है, दुकान जल्दी बंद कर देगा बनिया···

भूषण लेकिन लीला, आज त्योहार···

लीला वही तो मैं कहती हूं। और दिन तो फांका किया भी जा सकता है, पर आज तो कम से कम भरपेट खाना मिल जाये।

भूषण तुम ठीक कहती हो। [कुछ रुककर] बच्चे कहां हैं ?

लीला बाहर होंगे। अपनी गरीबी का मजाक उड़ाती आतिशबाजियों का नजारा देख रहे होंगे।

भूषण मैं सारा सामान लेकर थोड़ी देर में आता हूं।

[भूषण बाहर जाता है। लीला फिर खाट पर गुमसुम सी बैठ जाती है। तभी बाहर से राधेश्याम की आवाज सुनाई पड़ती है।]

राधे भूषण···अरे भाई भूषण···हो क्या घर पर ?

[लीला उठकर दरवाजे तक जाती है]

लीला अरे राधे भैया, आप ! आओ, अंदर आओ !

राधे [लीला के पीछे अंदर आता हुआ] भूषण नहीं है क्या घर पर ?

लीला बाजार तक गये हैं, थोड़ी देर में आ जायेंगे।

[राधे कृषकाय शरीर का मुनीम। शरीर पर धोती-कुर्त्ता, पैरों में पंप-शू, सर पर काली टोपी, आंखों में ऐनक, हाथों में बही खाता। सर के बाल काले, वैसे ही उसकी बड़ी-बड़ी मूंछों के। अंदर आकर खाट पर बैठता है और एक बार चारों ओर देखता है।]

राधे — अरे, यह क्या! आज लक्ष्मी-पूजन है और यहां पूजन की कोई तैयारी नहीं!

लीला — जब लक्ष्मी ही हमसे रुठ गई तो पूजन कहां से करें!

राधे — हां, वक्त बहुत बुरा आ गया है बहू तुम पर, इसमें कोई शक नहीं। पर कभी-कभी इंसान को अपना किया भी भोगना पड़ता है।

लीला — तो ऐसा कोई ऐब तो राजू के बाबू में है नहीं भैया जो···

राधे — तुम घर में बैठी रहती हो, तुम क्या जानों बहू···

लीला — कोई ऐसी-वैसी बात है क्या भैया?

राधे — तो क्या तुम्हें नहीं मालूम? मैं तो सोच रहा था, तुम जानती होगी।

लीला — [संशकित सी] क्या बात है भैया?

राधे — [राज भरे अंदाज में] भूषण गलत संगत में पड़ गया है बहू।

लीला — गलत संगत में। नहीं भैया नहीं, तुम्हें किसी ने गलत खबर दी होगी।

राधे — खबर देते तो मैं उसे गलत ही समझता पर जो कुछ मैंने अपनी आंखों से देखा है, उसे कैसे गलत मान लूं। क्या मलेच्छ की दोस्ती को तुम सही मानती हो?

लीला — कौन मलेच्छ? किस की बात कर रहे हो भैया तुम?

राधे — अरे, उसी इशाक की। पहले तो सुबह-शाम उसके ठेले पर डेरा जमाये रहता था, जब से मिल में हड़ताल हुई है दिन-रात वहीं जमा रहता है।

लीला — तो घर आकर क्या करे? क्या भूख से बिलखते अपने बीबी-बच्चों को देखे?

राधे — चलो, बैठता है तो बैठे। पर उनकी ऐब को अपने गले बांधने की क्या जरूरत थी।

लीला — कौन सी ऐब?

राधे — यही, जुआ खेलने की।

लीला — [हंसकर] अब तो पक्का भरोसा हो गया कि तुम्हें गलत फहमी हो गई है। जिसके पास अनाज के लिये फूटी कौड़ी न हो वह भला जुआ खेलने को रकम कहां से लायेगा।

राधे — यही तो है बात मजे की। माल लगाता है इशाक, खेलता है भूषण।

लीला — नहीं-नहीं, मैं इस पर यकीन नहीं कर सकती। इशाक तो घर पर भी आता है। मैंने तो उसमें ऐसी कोई बात देखी नहीं। यह खबर बिलकुल झूठी है।

राधे — झूठी हो या सच, मुझे क्या लेना देना। मेरा काम तुम्हें चेता देना था, सो चेता दिया। हां, इशाक को कम मत समझना, वह जेल भी काट आया है।

लीला — वह गुण्डा हो, जुआरी हो, शराबी हो, जेल काट आया हो या हवालात में बन्द हो, हमें उससे क्या मतलब! हमसे वह भला है, बस, इतना ही हमारे लिये काफी है।

राधे — [गहरी सांस छोड़] अपना-अपना विचार है बहू।

लीला — यह बताओ भैया, आज तुम इधर कैसे भूल पड़े?

राधे — भूलकर नहीं, जान-बूझकर ही आया हूं।

लीला — तो बिना मतलब तो आये नहीं होंगे?

राधे — [कुटिलता से मुस्कराकर] आज के जमाने में बिना मतलब बेटा भी बाप के पास नहीं जाता [रुककर] दो माह पहले भूषण ने सेठ से सौ रुपया कर्जा लिया था। दो माह हुये, मूलधन की बात दूर, सूद भी नहीं पहुंचा आज सेठ ने भेजा है कि भाई, भूषण से कहो, हिसाब चुकता करे। लक्ष्मी-पूजन

है, पुराना खाता बन्द कर नया खाता शुरू करना है।

लीला हमारी हालत तो तुमसे छिपी नहीं भैया।

राधे वह तो मैं देख ही रहा हूं। पर मेरी भी तो मजबूरी समझो। सेठ जैसा नचायेगा, नाचना पड़ेगा। वह जहां भेजेगा, जाना पड़ेगा। [उठता हुआ] अच्छा मैं तो चलता हूं। भूषण आये तो उसे जरा से की पेढ़ी तक भेज देना कहना, सेठ ने या किया ह।

लीला ठीक है मैं कह दूंगी।

राधे आज बच्चे नहीं दिख रहे हैं तुम्हारे?

लीला बाहर रोशनी देख रहे होंगे।

राधे [हंसकर, जाते-जाते] हां, घर के अंधेरे से ऊब गये होंगे बेचारे।

[राधेश्याम चला जाता है। कुछ पलों तक गहरे विचारों में खोई सी लीला खड़ी रहती फिर साड़ी के पल्लू से आंखों के कोरों को पोंछती हुई, गहरी सांस को छोड़ वह कोठरी के आले में रखी कुप्पी जलाती है। एक बीमार पीली रोशनी कोठरी में फैल जाती है।

वह खाट पर दोबारा बैठने को होती है कि राजू और रज्जी उछलते हुये अंदर आते हैं।

राजू के शरीर पर फटी निकर व फटी चारखाने व बनियान और रज्जो के शरीर पर थिगड़े लगी फ्राक। गरीब और अभाव के शिकाव बच्चे इस समय प्रफुल्लित]

राजू (हथेली फैलाकर) मां-मां, यह देखो। उस सामने वाले लाला ने हमें एक रुपया दिया।

रज्जी (अपनी भी हथेली फैला) मुझे भी मां!

(गुस्से से बिफरती लीला उठ खड़ी होती है और राजू की बांह पकड़ती है।)

लीला (राजू को तमाचा मारकर) तूने उससे रुपये लिया कमीने। (रज्जी को भी तमाचा मार) और तूने भी। (दोनों रोने लगते हैं।)

राजू हमने मांगा नहीं मां, उसने खुद दिया था। (सुबकता है) सच मां, हमने मांगा नहीं···

लीला अभी जाओ और उसके रुपये वापस लौटाकर आओ वरना मार-मारकर तुम दोनों की टांगें तोड़ दूंगी।

रज्जी हम जा रहे हैं मां···

(दोनों सुबकते हुये जाते हैं। लीला खाट पर बैठ दोनों हथेलियों में अपना मुंह छिपा फफक-फफक कर रो पड़ती है।)

इसी समय इशाक प्रवेश करता है। अच्छा स्वास्थ्य, सामान्य से कुछ अधिक कद, श्यामवर्णीय, घुंघराले बाल, संवरी हुई मूंछें। शरीर पर तंग मोहरी की पैंट व धारीदार कॉलर वाली बनियान, पैरों में जूते, गले में तावीज, कलाई में बंधा रुमाल। ओंठ पान से रंगे।]

इशाक बाहर बच्चे रोते हुये मिले, यहां तुम रो रही हो! आखिर माजरा क्या है भाभी? कहीं शास्त्रों में तो यह नहीं लिखा कि लक्ष्मी-पूजन के दिन रोना लाजिमी है?

लीला [आंसू पोंछकर, भरे गले से] रोऊं नहीं तो क्या करूं भैया। किस्मत में ये दिन भी देखना लिखा था कि लोग हमारे बच्चों को भिखारी समझकर उन्हें भीख दें।

इशाक अच्छा! किस गुस्ताख ने की ये हरकत?

लीला वह सामने लाला रहता है न, वह .र साल लक्ष्मी-पूजन के दिन भिखारी बच्चों को रुपये बांटता है। आज उसने राजू और रज्जी को भी एक-एक रुपया थमा दिया। उन्होंने लाकर मुझे दिखाया तो मेरा खून खौल उठा।

इशाक	खून खौलने वाली बात ही है ।

लीला	मैंने गुस्से में उन्हें एक-एक तमाचा जड़ दिया और रुपये वापस देने को भेज दिया ।

इशाक	आज त्योहार का दिन है, बच्चों को मारा क्यों ? डांट-डपट देती ।

लीला	जिस घर में चूल्हा जलने के भी लाले पड़े हों, उनके लिये क्या त्योहार !

इशाक	भूषण लौट आया क्या ?

लीला	हां, बाजार तक गये हैं, आटा-दाल लेने ।

इशाक	आज उनके मिल की तालाबंदी का फैसला था । क्या हुआ ?

लीला	समझौता नहीं हो सका । यूनियन ने त्योहार मनाने को हर मजदूर को पचीस-पचीस रुपये दिये थे, उसे ही लेकर आटा-दाल लाने गये हैं । इधर सेठ हर-किशन का मुनीम राधेश्याम भी आया था ।

इशाक	क्यों, वह क्यों आया था ?

लीला	तुम्हारे भैया ने शायद उनसे सौ रुपये उधार लिये थे । वह तगादा कर रहा था । कह रहा था, आज पुराना खाता बंद कर नया खाता चालू करना है । चौक के बनिये का कारिंदा भी आता ही होगा । उसके भी दो माह के राशन का पैसा देना है ।

इशाक	हां, लक्ष्मी-पूजन से बढ़िया हिसाब मांगने का भला और क्या बहाना हो सकता है ।

लीला	बुरा न मानो तो एक बात पूछूं भैया !

इशाक [हंसकर] तुम्हारी किसी बात का मैंने आज तक कभी बुरा माना है भाभी जो आज मानूंगा।

लीला मैंने सुना है, तुम लोग अपने साथ अपने भैया को जुआ भी खिलाते हो!

इशाक [चौंककर] किससे सुना? कौन कह रहा था?

लीला वही राधेश्याम कह रहा था।

इशाक अगर आज त्योहार का दिन न होता तो भूषण पर खामखा की तोहमत लगाने वाले की मैं जबान खींच लेता। भाभी, मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि मैं बुरा हूं, मैं जुआ खेलता हूं। लेकिन भूषण, वह तो देवता है। हमें तो फख्र है कि भूषण हमारा दोस्त है।

लीला तुम्हारी बातों से दिल को राहत पहुंची, वरना उस मये राधेश्याम ने तो मुझे बेचैन-हो कर डाला था।

इशाक मैं थोड़ी देर में आया भाभी। भूषण आये तो उसे रोकना।

[इशाक पलटकर तेजी से बाहर चला जाता है। इसके दो पल बाद ही राजू और रज्जो प्रवेश करते हैं और सहमे हुये लीला के करीब आते हैं।]

राजू हमने वो रुपया लाला के सामने जाकर फेंक दिया। लाला कहने लगा, इसे कहते हैं च्यूंटी के पर निकल आना।

रज्जो अब तो तुम हमसे गुस्सा नहीं न मां?

लीला [भाव-विह्वल सी] मेरे लाल…मेरे बच्चे…।

[दोनों को अपने से चिपटाकर लीला स्नेह से उनके सर पर हाथ फेरती है। इसी समय भूषण प्रवेश करता है। उसके हाथ में छोटे बड़े कई पुड़े-पुड़िये हैं।]

भूषण — लो, इन्हें संभालो और खाना बनाओ।

(लीला उठकर सभी पुड़े-पुड़िये अपने आंचल में लेती है।)

लीला — इशाक आया था।

भूषण — कमाल है! उसे ढूंढता तो मैं फिर रहा हूं। ठेले पर गया था तो वह वहां नहीं मिला। कहां गया है?

लीला — तुम्हें रुकने को कह गया है। बोला, मैं थोड़ी देर में आता हूं। अरे हां, सेठ हरकिशन का मुनीम राधश्याम भी आया था। कह गया है कि तुम आओ तो तुम्हें उसकी पेढ़ी तक तक भेज दूं।

भूषण — ठीक है, उसकी पेढ़ी तक हो आता हूं। बाजार में बनिये ने भी अपने पुराने पैसों के लिये मुझे टोका था।

लीला — क्या कहा तुमने?

भूषण — कहता क्या! साफ कह दिया–साब, अगर पैसे होते तो बिना तगादे के मिल जाते। पैसे जब नहीं हैं तो चाहे तुम तगादा करो या लाठी मारो, मिलने से रहे। (रुककर) जा रहा हूं, इशाक शायद रास्ते में ही मिल जाये।

(भूषण बाहर निकल जाता है।)

लीला — राजू, जा बेटा पड़ोस-पड़ोस से लकड़ियां उठा ला। चूल्हा जलाकर खाना बनाऊं।

(उत्साहित सा राजू अन्दर की ओर भागता है। दृश्य परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश गुल होता है। पुनः प्रकाश होने पर दृश्य वही किन्तु मंच खाली।)

[चुभने वाले सन्नाटे को तोड़ते हुये इशाक प्रवेश करता है। कई बड़े पैकेट्स उसने सीने के सहारे बांये हाथ से दबा रखे हैं जबकि दाहिने हाथ में नया खरीदा हुआ केनवास का बहुत बड़ा झोला है जो पूरी तरह से भरा हुआ है। इशाक पैकेट्स खाट पर गिरा कुछ पल दम साधता है।]

इशाक (पुकारता हुआ) भाभी'''ओ भाभी'''।

(आंचल में हाथ पोंछती हुई अन्दर से लीला आती है।)

इशाक ये लो, सम्भालो अपना सारा ताम-झाम !

लीला ये सब क्या ले आये भैया ?

इशाक राजू-रज्जो के नये कपड़े, मिठाई, पटाखे-दिये, खील बताशे और बहुत कुछ।

लीला नहीं-नहीं भैया, यह सब तुम ले जाओ, यह सब मैं नहीं लूंगी।

इशाक खुदा के वास्ते मुझ पर शक न करो भाभी।

लीला शक तो नहीं कर रही, पर मैं किसी का एहसान क्यों लूं ! बुरे वक्त पर किसी की दयानतदारी भी एहसान लगती है इशाक। ऐसा एहसान जो बुरे वक्त पर फंसे इन्सान को उसकी लाचारी और बेबसी का एहसास करा देता है।

इशाक देखो भाभी, एहसान करने की न मुझमें हैसियत है और न हिमाकत। यह सारा सामान तो भूपग ने मुझे दिया है।

लीला तो क्या वह तुम्हें मिल गये थे ?

इशाक हां, रास्ते में मिले थे। मैं ये सामान घर पहुंचा आऊं। बस, हुक्म के गुलाम की तरह मैं सारा सामान लेकर चला आया।

लीला वह कहा चले गये ?

इशाक कुछ बताया तो नहीं, पर मुझे लगता है, सेठ हरकिशन की पेढ़ी तक गया है।

लीला पर इतना सारा सामान···कहां से मिले इतने रुपये?

इशाक अब वह आयें तो उसी से पूछना। चोरी की, डाका डाला, जुआ खेला या क्या किया मैंने अपनी ड्यूटी पूरी कर दी। अपना सामान सहेजो, मैं चलता हूं।

(इसी समय राधेश्याम अन्दर आता है। स्वर में भारी मिठास घोलकर आवाज देता हुआ–)

राधे भूषण भैया···भूषण भैया···(सहसा इशाक पर नजर पड़ते ही चिहुंक कर) अरे, तुम !

इशाक तू फिर आ गया वे लालटैन !

राधे जवान संभालकर बात करना इशाक, वरना···

इशाक (आगे बढता हुआ) वरना क्या ?

राधे (पीछे हटता हुआ) मैं कहता हूं, आगे मत बढ़··· आगे मत बढ़···।

इशाक तू कह रहा था न, मै जुआ खेलता हूं। तो आज मैं तेरी जिन्दगी को ही दांव पर लगा दूंगा।

राधे इशाक, आगे मत बढ़···नहीं तो मैं शोर मचा दूंगा···

इशाक आज अगर तू अपने भगवान को भी पुकारेगा तो वह भी तुझे बचाने नहीं आयेगा···

राधे (पीछे हटते हुये) मैं फिर कहता हूं, आगे मत बढ़ नहीं तो मैं···नहीं तो मैं···

इशाक (दांत पीसकर) नहीं तो क्या ?

राधे नहीं तो मैं रो पड़ूंगा ।

लीला (हंसती हुई बीच में आती है ।) इशाक, जाने दो। (राधेश्याम से) अचानक इस समय फिर कैसे आ गये भैया ?

राधे मैं तो भूषण को दीपावली की शुभ कामनायें देने आया था ।

इशाक अब जा, भाग जा । नहीं तो इस शुभ दिन में तेरे घर कोई अशुभ समाचार पहुंच जायेगा···जाता है या नहीं ?

(राधेश्याम पलटकर जल्दी से बाहर भागता है। लीला जोरों से हंस पड़ती है।)

लीला तुमने तो उसे बेजा डरा दिया।

इशाक अल्लाह कसम भाभी, अगर तुम बीच में न पड़ती तो साले का थोबड़ा ऐसा बिगाड़ देता कि घरवाले भी नहीं पहचान पाते। खैर, अब वह भूलकर भी इधर आने की कोशिश नहीं करेगा। अच्छा भाभी, अब इजाजत चाहता हूं।

(इशाक पलटकर तेजी से बाहर निकल जाता है। पहले तो लीला उसे जाता देखती है, फिर खाट पर पड़े पैकेटों को सहेजने लगती है। इसी समय राजू और रज्जो अन्दर से आते हैं।)

राजू (ताली बजाकर) ओहहो, इतना सारा सामान··· और मिठाई भी···कौन लाया है मां?

लीला लायेगा कौन? तेरे बापू ने भेजा है।

रज्जो वाह, अब हम भी फुलझड़ियां जलायेंगे···हमारे घर भी दीया जलेगा···

लीला हां, और नये कपड़े भी हैं। चलो, जल्दी तुम लोग ये कपड़े उतार डालो।

राजू अभी लो मां!

(राजू और रज्जो कपड़े उतारने लगते हैं। एक नई धोती हाथ में लिये भाव-विह्वल सी लीला एकटक शून्य में ताकती खड़ी है। इसी समय दृश्य-परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश लुप्त।)

(पुनः प्रकाश होने पर नई धोती पहने और शृंगार किये लीला दीपक जला रही है। पास ही नये कपड़े पहने राजू और रज्जी उछल-उछलकर फुलझड़ियां छुड़ा रहे हैं।

इसी समय बाहर से भूषण आता है। यह सारा दृश्य देखकर वह कुछ पलों के लिये हतप्रभसा खड़ा रह जाता है।)

भूषण लीला, यह सब क्या गोरखधंधा है ?

लीला (मुस्कराकर) वाह, इसमें गोरख-धंधे की क्या बात है! यह सब वही सामान तो है जो तुमने भेजा था।

भूषण मैंने सामान भेजा था! तुम्हारा दिमाग तो सही है ?

लीला (भूषण के करीब आ) चलो, अब मजाक मत करो। जल्दी से जाकर कपड़े बदल लो। मैंने पूजन का सारा सामान रख दिया है।

भूषण कपड़े बदल लूं! कौन से कपड़े बदल लूं ?

लीला वही जो तुमने अपने लिये खरीद कर भेजे हैं।

(भूषण सर थामकर खाट पर बैठ जाता है।)

लीला तो इशाक जो सामान अभी थोड़ी देर पहले पहुंचा गया था, वह तुमने नहीं भेजा था ?

भूषण (चौंककर) इशाक यहां आया था ?

लीला हां, वही तो यह सारा सामान दे गया है। मुझसे कह गया कि यह सब कुछ तुमने भेजा है। मैं तो पहले कुछ भी नहीं ले रही थी, पर जब उसने तुम्हारा नाम लिया तो···

भूषण — ओह लीला, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि मैं पागल हो जाऊंगा।

लीला — क्यों ? पागल होने वाली कौन सी बात हो गई ?

भूषण — मैं सेठ हरकिशन की पेढ़ी पर गया। सोचा था कि पैसे न चुका पाने के कारण सेठ से माफी मांग लूंगा। पर वहां तो उल्टी ही गंगा बहने लगी। सेठ ने बड़ी गर्मजोशी से मिठाई और पान-सुपारी से मेरा स्वागत किया।

लीला — (साश्चर्य) अच्छा !

भूषण — हां। लौटते हुवे मुझे चौक का बनिया मिल गया।

लीला — जरूर उसने तगादा किया होगा !

भूषण — अरे नहीं। उल्टे उसने कहा कि मुझे जब जिस सामान की जितनी जरूरत हो ले जाऊं। उसका पिछला हिसाब साफ हो गया है।

लीला — जरूर यह सब इशाक ने किया होगा !

भूषण — हां। मेरा नाम लेकर तुम्हें सामान पहुंचा गया, जबकि सच्चाई तो यह है कि अब तक मुझसे उसकी मुलाकात ही नहीं हुई।

(तभी फकोरा प्रवेश करता है। रंग-बिरंगी पैंट-शर्ट पहने। सामान्य कद व स्वास्थ्य)

फकीरा — खुदा का शुक्र है भूषण भैया जो तुम घर पर मिल गये।

भूषण — आओ फकीरा, बैठो। क्या बात है ?

फकीरा भाभीजी, एक प्याली चाय तो पिलाइये ।

लीला अभी लाती हूं ।

[लीला अन्दर जाती है । फकीरा भूषण की बगल में खाट पर बैठता है ।]

भूषण राजू···रज्जी, तुम लोग बाहर जाकर खेलो बेटे ।

[दोनों बच्चे उछलते-कूदते बाहर चले जाते हैं ।]

फकीरा मुझे इशाक ने भेजा है ।

भूषण [चौंककर] इशाक ! कहां है वह ?

फकीरा इशाक गांव चला गया है । कह गया है, जाने अब वह कब लौटे, इसलिये मुझे ये खास हिदायत देकर गया है कि तुमसे मैं जरूर मिल लूं और सारे हालातों से तुम्हें वाकिफ करा दूं ।

भूषण कैसे हालात ?

फकीरा भूषण भैया, इशाक ने कहा है कि भाभी को कुछ बताना नहीं । साथ ही यह भी कहा है कि तुम यह न सोचना कि यह सब कुछ उसने एहसान जताने के लिये किया है ।

भूषण लेकिन इतनी बड़ी रकम···इतना सामान···यह सब कुछ···

फकीरा उसने यह भी कहा है कि भूषण से कहना कि यह सब कुछ उसने हराम के पैसे से नहीं किया है ।

भूषण फिर इतनी बड़ी रकम कहां से लाया वह ?

फकीरा उसने अपने पान का ठेला बेच दिया है ।

भूषण पान का ठेला बेच दिया ! अपने रोजगार का [illegible]···

फकीरा मुझसे कह रहा था, अगर दोस्त के आड़े वक्त पर दोस्त काम न आये तो वह खुदगर्ज कहलाता है, दोस्ती कलंकित होती है। और कह रहा था कि जाते-जाते मैं अपने दोस्त को त्योहार का एक बहुत बड़ा सौगात देकर जाता हूं।

भूषण सौगात !

फकीरा कह रहा था कि अब वह कभी जुआ नहीं खेलेगा।

भूषण अजीब पागल है···चलते रोजगार को खत्म कर अब यह गांव जाकर क्या करेगा ?

फकीरा मुझसे कह रहा था, अब वह खेती करेगा।

भूषण (भाव-विह्वल सा) ओह दशरथ···मेरे दोस्त····

फकीरा (उठ खड़े होकर) अच्छा भूषण भैया, अब मैं चलता हूं।

भूषण और चाय कौन पियेगा ?

फकीरा तुमसे बात करने के लिये भाभी को यहां से हटाना था, इसलिये मैंने चाय की बात कही थी। अच्छा भूषण भैया, चलता हूं। मुझे एक जरूरी काम भी है।

(और पलटकर फकीरा तेजी से बाहर निकल जाता है। संज्ञाशून्य सा जड़वत् भूषण उसे जाता हुआ देखता है। तभी दो प्यालियों में चाय लेकर लोला वहां आती है।)

लीला — अरे, फकीरा कहां गया। (जोर से) तुम इस तरह क्यों बैठे हो। कुछ सुन रहे हो, ये फकीरा अभी यहां बैठा था, कहां चला गया ?

भूषण — (तंद्रा से जागा सा) आं···हां, हम पूजन करेंगे लीला···हम पूजन करेंगे···एकता के दीप से प्रेम की देवी को···

लीला — यह तुम क्या आंय-बांय बकने लगे···

भूषण — हां, एकता के द्वीप का प्रकाश चारों ओर फैलेगा··· हर मन का कोना-कोना जगमगा उठेगा···एकता के दीप का प्रकाश···प्रेम का प्रकाश···

लीला — ओह, लगता है, तुम तो सचमुच बौरा गये···

(भूषण उठकर भाव–विह्वल सा मंच के सामने की ओर आता है।)

(परदा धीरे–धीरे बंद होता है।)

□□

जस बोयो तस काटो

पात्र

लाखनसिंह —

जग्गा —
कल्ला —
मूरत —
नूर मोहम्मद —

रहमान मियां — 60 वर्ष

(परदा खुलने पर मंच पर एक सघन झाड़ियों युक्त पहाड़ी चोटी दिखाई देती है। चोटी के एक टीले की समतल चट्टान पर बैठा है लाखनसिंह। कद्दावर, सुगठित शरीर, बड़ी-बड़ी मूंछें। शरीर पर धोती कुर्ता, कमर में एक साफा बंधा है। सर पर भी एक साफा पगड़ी की तरह बांधा हुआ है। पैरों में नोंकदार चमरौंधे जूते। तांबई वर्ण के लाखन के पीठ पर एक दुनाली बंदूक है जो कंधे से लटकाई गई है। कारतूस की बेल्ट बांये कंधे दाहिनी कमर तक क्रॉस बंधी है। कमर में बंधे साफे में एक खंजर खुंसा हुआ है।)

लाखन के दांये-बांये जग्गा, कल्ला व मूरत खड़े हैं । सभी की वेशभूषा लाखन जैसी, सिर्फ लाखन जैसा उनके सर पर साफा नहीं बंधा है । कद में भी थोड़ा फर्क है । लाखन के ठीक सामने नूर मोहम्मद खड़ा है, दयनीय भाव से । हां, वेशभूषा उसकी भी उसी तरह है ।)

लाखन — हमारे गिरोह के उसूल तो तुम अच्छी तरह जानते हो नूरमोहम्मद ?

नूर — हां सरदार, अच्छी तरह जानता हूं ।

मूरत — अगर भूल गये हो तो हम याद दिलाना भी जानते हैं ।

नूर — नहीं, मैं भूला नहीं हूं । सब अच्छी तरह याद है मुझे ।

लाखन — और सब कुछ जानते हुये भी तुमने ऐसी बात करने की हिम्मत कैसे की ? क्या तुम्हें मालूम नहीं लाखन से ऐसी बात करने का अंजाम क्या होता है ?

कल्ला — मौत और सिर्फ मौत ।

नूर — आगे-पीछे एक दिन सभी को मरना तो है ही ।

(लाखन का चेहरा सहसा कठोर हो जाता है । वह अपनी बंदूक पीठ की ओर से खींच कर सामने अपने हाथ में थाम लेता है । सब कांप जाते हैं, नूर मोहम्मद भी ।)

लाखन — तो तुम क्या सर पर कफन बांध कर आये हो ? अगर ऐसी बात है तो तुम्हारी ख्वाहिश पूरी करने में हमें बड़ी खुशी होगी ।

नूर — मैं तुम्हें चुनौती देने के इरादे से कोई भी बात नहीं कह रहा हूं सरदार । मेरी बात का कोई और अर्थ मत निकालो ।

जग्गा — फिर क्या मतलब निकालें तुम्हारी बातों का ? आज सुबह अपने गांव से वापस लौटते ही तुमने आत्म-समर्पण की बात की । क्यों ?

लाखन — क्या तुम्हारे खून की गर्मी ठंडी पड़ गई है या इन बीहड़ों में भागते-भागते तुम इतने थक गये हो कि हमारा साथ देने में खुद को नाकाबिल पा रहे हो ।

नूर — ऐसी कोई भी बात नहीं है सरदार ।

लाखन फिर निहायत बेवकूफी भरी ये बुजदिली की बातें क्यों ?

नूर मेरी बात पर ठंडे दिल से गौर करने की कोशिश करो सरदार।

लाखन तुमने हमें ठंडा कहां रहने दिया नूर मोहम्मद। आत्म-समर्पण की बात कर तुमने हमारे रग-रग में बला की गुस्सैल गर्मी भड़का दी है।

नूर सरदार, मैं तुमसे मिन्नत करता हूं कि मेरी बात को इन्सान और इन्सानियत के नजरिये से देखने की कोशिश करो।

लाखन लाखन के अन्दर का इन्सान और उसकी इन्सानियत उसी दिन मर गई थी जिस दिन बीहड़ों में उतरकर उसने अपने हाथों में बंदूक सम्भाली थी। [रुककर] फिर भी तुम्हारे लिये कोई भी फैसला करने से पहले हम तुम्हारी पूरी बात जरूर सुनेंगे, ताकि तुम बाद में ये न कह सको कि तुम्हारे साथ नाइंसाफी हुई।

नूर [उत्साहित होकर] सरदार, अपने गांव जाने पर मुझे मालूम हुआ कि मेरी बेटी का निकाह हो रहा है।

लाखन शादी और ब्याह हर लड़कियों के होते ही हैं।

नूर सरदार, मेरी बेटी एक डाकू की बेटी कहलाती पली और बड़ी हुई। मैं नहीं चाहता कि निकाह के बाद उसकी विदाई भी एक डाकू की बेटी की तरह हो।

जग्गा — ग्रौर इसलिये तुम ग्रात्म-समर्पण की सोच बैठे।

मूरत — ग्रात्म-समर्पण कर तुम बेटी के ब्याह में शरीक हो जाग्रोगे, ग्रौर पुलिस ग्रांख मूंदे बैठी रहेगी।

नूर — मैं पुलिस के सामने ही ग्रात्म-समर्पण करूंगा। उनसे हाथ जोड़कर मिन्नत करूंगा कि वे मुझे ग्रपनी बेटी की शादी में शरीक होने दें।

कल्ला — ग्रौर तब पुलिस के लोग तुम्हारे सामने ये शर्त रखेंगे कि तुम लाखन के गिरोह का भेद उन्हें बता दो तो वे तुम्हें हर तरह की रियायत देंगे।

नूर — ऐसा हरगिज नहीं होगा सरदार।

लाखन — तुम पुलिस को मुझसे बेहतर नहीं जानते नूर मोहम्मद। पुलिस जब ग्रपने हथकंडे ग्रपनायेगी तो उसके सामने तुम्हें टूटते देर न लगेगी।

नूर — वे मेरी बोटी-बोटी काट डालें, मुझे कुत्तों से नुचवा दें, लेकिन तुम्हारे या गिरोह के खिलाफ मेरे मुंह से एक भी शब्द नहीं निकलेगा। यकीन जानों सरदार।

मूरत — जब बीहड़ों में उतरकर कोई बागी होकर ग्रपने हाथों में बंदूक थामता है तो यकीन जैसे शब्द ग्रपने शब्दकोष से निकाल देता है।

नूर — ग्राज बहुत मजबूर होकर मिन्नत करता हुग्रा मैं तुमसे गिरोह से ग्रपनी रिहाई की भीख मांग रहा हूं सरदार।

लाखन इसी तरह अपनी मजबूरी का रोना रोते हुये आज से बारह साल पहले तुम एक बार और मेरे सामने मिन्नतें कर रहे थे नूर मोहम्मद। गिरोह में शामिल कर लिये जाने के लिये गिड़गिड़ा रहे थे।

कल्ला अपनी लाचारी और बेबसी का वास्ता दे रहे थे।

जग्गा जमाने मे तुम पर बहुत जुल्मो-सितम किये हैं, यह कह रहे थे।

सूरत साथ ही यह भी कि तुम्हारा परिवार भूखे-प्यासे दम तोड़ देने की हालात में जा पहुंचा है।

लाखन और तब तुम पर तरस खाकर हमने अपने गिरोह में तुम्हें शरण दिया था।

नूर मैं उसके लिये ताजिंदगी तुम्हारा शुक्र गुजार हूं। लेकिन सरदार, अपने दिल पर हाथ रखकर कहो कि क्या इन बारह बरसों तक हर कदम पर मैंने वफादारी से तुम्हारा साथ नहीं दिया है? तुम्हारे खातिर अपनी जान हथेली पर रखकर क्या मैं अंगारों से खेलने में कभी पीछे हटा हूं?

कल्ला इसीलिये तो आज तुम जैसे वफादार साथी के मुंह से आत्म-समर्पण जैसी बुजदिली की बात सुनकर हमें बड़ा अचरज हो रहा है।

नूर काश, मैं अपना सीना चीरकर तुम्हें दिखा सकता कि मैं किस कदर मजबूर हूं।

लाखन [अपने तीनों साथियों से] क्या ख्याल है तुम लोगों का?

सूरत इसकी मजबूरी हमारे लिये खतरे की घंटी साबित हो सकती है सरदार।

जग्गा — आत्म-समर्पण करने के बाद पुलिस इससे हमारे भेद उगलवा लेगी और तब हमारी खैर नहीं।

कल्ला — अगर पुलिस की गोली से हम बच भी जायें तब भी फांसी में लटकना तय है।

लाखन — बोलो नूर मोहम्मद, अब क्या कहते हो?

नूर — इस गिरोह के मुखिया तुम हो सरदार। तुम जो फैसला दोगे, मुझे मंजूर होगा।

[सबकी निगाह लाखन पर टिक जाती है। लाखन कुछ क्षणों तक सर झुकाये विचार-मग्न सा बैठा रहता है, फिर एक गहरी सांस लेकर वह अपने स्थान से उठ नीचे उतरकर आता है। अपनी बंदूक कंधे से उतारकर वह उसकी नाल नूर मोहम्मद की ठोढ़ी से लगा देता है। उसकी आंखों में खून उतर आता है। नूर मोहम्मद कांप जाता है।]

नूर	आह···कमीने···तूने धोखे से···मुझ पर वार किया···

लाखन	लाखन की गिरोह से अलग होकर कोई भी जिंदा वापस नहीं जा सकता। बेवकूफ, क्या तू यह भूल गया था ?

नूर	खुदा तुझे भी कभी···मुआफ नहीं करेगा लाखन···

लाखन	हम माफी मांगेंगे भी नहीं।

[एक हिचकी के साथ नूर मोहम्मद का सर एक ओर लटक जाता है।]

जग्गा	मर गया बुजदिल। ऐसे बुजदिलों का मरना ही ठीक था।

[सूरत पत्तों से अपनी खून सनी कटार पोंछने लगता है।]

लाखन	इसकी लाश खींचकर उधर झाड़ियों में फेंक दो।

[कल्ला दोनों टांग- पकड़कर नूर मोहम्मद की ला खींचता ले जाता है।]

लाखन	जग्गा, ये अचानक मेरी दाहिनी आंख क्यों फड़क लग गई ! लगता है, कुछ अशुभ होने वाला है।

सूरत	[हंसकर] सरदार, कहीं नूर मोहम्मद की बद्दुआ से घबरा तो नहीं गये ?

···	नहीं-नहीं, मैं सच कह रहा हूं, मेरी दाहिनी आंख बड़े जोरों से फड़क रही है।

मूरत [हंसकर] वहम का इलाज हकीम लुकमान के पास भी नहीं था। लगता है सरदार तुमने भी कोई वहम पाल लिया है।

[इसी समय अचानक पार्श्व से ढोल-तासे-तुरही बजने की आवाज उभरती है। आवाज क्रमशः तेज होने लगती है।]

लाखन ये जंगल में मंगल कैसे होने लगा ?

जग्गा मैं अभी पता लगाकर आता हूं सरदार।

[जग्गा तेजी से वहां से जाता है।]

लाखन क्यों मूरत, गिरोह के और लोग कहां हैं ?

मूरत पहाड़ी के नीचे खाना बना रहे हैं। क्यों, उनकी जरुरत है क्या ?

लाखन नहीं, यूं ही पूछ लिया।

[तभी हाथ झाड़ता कल्ला वहां आता है।]

कल्ला काफी दूर कंटीली झाड़ियों के खड्ड में फेंक दी उसकी लाश।

लाखन बेटी की शादी में शरीक होने चला था।

[लाखन ठहाका मारकर हंसता है। मूरत और कल्ला भी उसके साथ हंसते हैं।]

मूरत बेचारा यह भूल गया था कि कायरों और बुजदिलों के लिये लाखन के गिरोह में कोई जगह नहीं।

कल्ला इसलिये बेमौत मारा गया।

[तभी भागता हुआ जग्गा वापस आता है। वह हांफ रहा है।]

जग्गा सरदार, करीब से ही एक बरात गुजर रही है। मोवतपुर के जमींदार के बेटे की बरात है, परतापपुर से आ रही है।

लाखन (चौंककर) परतापपुर से।

जग्गा सरदार, मौका बढ़िया है। जमींदार के बेटे की बरात है। जरा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। काफी माल हाथ लग सकता है।

लाखन कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें घेरने के लिये पुलिस ने बरात का स्वांग रचा हो ?

जग्गा नहीं सरदार, सचमुच की बरात है! जल्दी हुक्म करो सरदार, वरना बरात यहां से दूर चली जायेगी।

मूरत हां सरदार, ऐसा मौका हाथ से गंवाना नहीं चाहिये।

लाखन ठीक है, लूट लो। लेकिन कोशिश करना, खून-खराबा न हो। कल्ला तुम मेरे पास रहो। मूरत और जग्गा, तुम दोनों जाओ। अगर और लोगों की जरूरत हो तो नीचे से ले जाना।

मूरत ठीक है सरदार। आओ जग्गा।

(मूरत के साथ जग्गा जाता है।)

कल्ला एक बात पूछूं सरदार ? परतापपुर का नाम सुनकर तुम चौंके क्यों थे ?

लाखन — क्योंकि मैं खुद परतापपुर का हूं कल्ला। मेरा अपना घर था, सुन्दर घरवाली थी। किस्मत ने सब छीन लिया मेरे हाथ से।

कल्ला — आज तक तुमने कभी हमें यह बताया नहीं सरदार।

लाखन — कभी बताने का मौका ही नहीं आया। जब मैं गांव से भागकर इन बीहड़ों में उतरा था और बंदूक थामकर भवानीसिंह के गिरोह में शामिल हुआ था तब मेरी पत्नी गर्भवती थी।

कल्ला — तो अब तुम्हारी घरवाली और बच्चे कहां हैं?

लाखन — सात रोज बाद छिपता-छिपाता मैं अपने गांव पहुंचा था। देखा, मेरा घर उजाड़ और वीरान पड़ा है। बहुत पता करने पर पता चला कि बच्चे को जन्म देते वक्त मेरी घरवाली चल बसी।

कल्ला — और बच्चा?

लाखन — उसके बारे में आज तक मुझे कुछ भी नहीं मालूम पड़ सका। मेरा ख्याल है कि बच्चा मरा हुआ ही पैदा हुआ था।

कल्ला — तुम्हें बीहड़ में उतरकर बागी क्यों बनना पड़ा सरदार?

लाखन — गांव के एक ठाकुर ने हमारी जमीन दबा ली। मैं उसके सामने जाकर गिड़गिड़ाया। उसने मुझे धक्के देकर बाहर निकलवा दिया।

कल्ला — इस पर तुम्हारा खून खौल उठा होगा।

लाखन	नहीं। तब भी मैं शांत था। पर एक दिन ठाकुर के लठैतों ने मेरे पिता को खेत में घेर लिया और मार-मार कर मौत के घाट उतार दिया। फिर मैं अपने आप पर काबू न रख सका। उसी रात मैंने ठाकुर को मौत के घाट उतार दिया और बीहड़ों में उतर गया।

कल्ला	इसके बाद भवानीसिंह के गिरोह में शामिल होकर तुमने जो-जो करतब किये, हिम्मत और बहादुरी दिखाई वह हम सब जानते ही हैं। और एक मुठभेड़ में भवानीसिंह के काम आ जाने पर हम सबने तुम्हें ही गिरोह का सरदार चुना।

लाखन	हिम्मत और बहादुरी दिखाने का एक कारण भी था कल्ला। जब मैंने जान लिया कि इस दुनिया में मेरा आगे-पीछे कोई नहीं है तो मौत से मेरा डर खत्म हो गया।

(इसी समय पार्श्व से गोली चलने की आवाज गूंजती है। दोनों चौंकते हैं।)

कल्ला	गोली चली है सरदार।

लाखन	मैंने उन्हें खून-खराबे के लिये मना किया था।

कल्ला	लगता है, कुछ गड़बड़ हो गई है।

लाखन	कहीं बरात के साथ जमींदार के अपने बंदूकबाज न हों।

कल्ला	नहीं, ऐसा नहीं है। अगर ऐसा होता तो गोली सिर्फ एक नहीं चलती।

लाखन असलियत का पता तो उनके आने के बाद ही चलेगा।

(इसी समय भागते हुये जग्गा और मूरत प्रवेश करते है।)

जग्गा ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी सरदार। बहुत माल हाथ लगा है।

लाखन गोली कैसे चली थी ?

मूरत हम दुल्हन के गले से मंगलसूत्र उतार रहे थे। दूल्हे ने हमे ऐसा करने से रोका। उसने कहा, और सब ले जाओ लेकिन मंगलसूत्र नही ले जाने दूंगा।

जग्गा हमने उसे हर तरह से समझाने की कोशिश की सरदार, पर वह न माना। मंगलसूत्र ले जाने देने को वह हरगिज तैयार न था। मजबूर होकर हमें उसे गोली मार देनी पड़ी।

लाखन तुम मंगलसूत्र छोड़ देते। पर उसे गोली मारकर तुमने ठीक नहीं किया।

मूरत हमारे पास इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं था सरदार।

जग्गा सरदार तुम माल तो देखो, तबियत खुश हो जायेगी।

[जग्गा लाखन के सामने रखे कपड़े की गठरी खोल देता है। लाखन उसे उचटती निगाह से देखकर निगाह फेर लेता है। सहसा जैसे उसे कुछ याद आता है। गठरी के आभूषणों को

वह एकटक गौर से देखने लगता है। धीरे-धीरे उसकी आंखें फैलने लगती हैं। पल भर बाद आंखें सिकुड़ने लगती हैं और ओंठ थरथराने लगते हैं। वह झुकता है और कांपते हाथों से गठरी में से एक आभूषण उठा लेता है।]

मूरत हां, यही है वह मंगल सूत्र सरदार।

[लाखन उसे अपनी हथेली पर रख कर गौर से देखने लगता है। सहसा उसकी आंखें भर आती हैं।]

लाखन [अवरुद्ध कंठ से] यह कैसे हो सकता है...यह मंगल सूत्र तो गौरी का है...दुल्हन के गले में यह कैसे आया...?

जग्गा क्या हुआ सरदार ?

लाखन कल्ला, मैंने तुझे कहा था न कि मेरी एक सुन्दर सी पत्नी थी...यह मंगल सूत्र उसी का है...

कल्ला लेकिन यह दुल्हन के गले में कैसे पहुंच गया ?

[रहमान मियां का प्रवेश। शरीर पर चूड़ीदार पाजामा, बढ़िया शेरवानी, सर पर जरीदार टोपी, पैरों में जरीदार नागरा जूते। सर व दाढ़ी-मूंछ के बाल सफेद।]

रहमान मैं बताता हूं।

[सब चौंककर उसकी ओर देखते हैं। लाखन पल भर बाद उसे पहचान लेता है।]

लाखन कौन रहमान चाचा···

रहमान मत कह चाचा मुझे···वह मंगलसूत्र इसलिये उसके गले में आया क्योंकि वह उसकी बेटी थी···

लाखन कौन ?···दुल्हन···मेरी बेटी ··

रहमान तेरी बेटी नहीं, गौरी की बेटी···तू तो उसी दिन मेरे लिये मर गया था जिस दिन अपनी गर्भवती पत्नी को छोड़कर बंदूक लेकर बाहड़ों में उतर गया था, बुजदिलों की तरह···अगर मर्द होता तो गांव में रहकर ठाकुरों का मुकाबला करता···

लाखन रहमान चाचा···वो···वो मैं···

रहमान चुप, तू क्या सफाई देगा मुझे ! तेरी घरवाली एक बेटी को जन्म देकर मर गई। तू तो अपना फर्ज भूलकर इन बीहड़ों में सर छिपा बैठा···पड़ोसी के नाते मैंने बच्ची को संभाला, अपनी बेवा बहन के यहां रखकर उसे पाल पोसकर बड़ा किया···(भरे गले से)···कितनी तकलीफें उठाकर मैंने उसे दुल्हन

(रहमान तेज-तेज कदमों से वहां से चल देता है। पलभर लिये वहां मौत का सा सन्नाटा छा जाता है। सहसा लाखन [illegible]गों की तरह चिल्ला उठता है—)

[illegible]न — चाचा, बुला लो पुलिस····मैं आ रहा हूं····

(लाखन आगे बढ़ता है कि जग्गा, कल्ला और सूरत की [illegible]क की नालें उसका रास्ता रोक लेती हैं।)

[illegible]त — कहां जा रहे हो सरदार ?

[illegible]खन — अपने आपको पुलिस के हवाले करने।

[illegible]ग्गा — यानि आत्म-समर्पण करने।

[illegible]ल्ला — गिरोह छोड़कर कोई भी आदमी जिंदा वापस नहीं जा सकता। कम से कम आत्म-समर्पण करके तो नहीं। नूर मोहम्मद····

लाखन — हां, नूर मोहम्मद ठीक कहता था····खुदा भी मुझे कभी माफ नहीं करेगा····

सूरत — खुदा माफ करे या न करे, हम तुम्हें [illegible] हरकत के लिये कभी माफ नहीं करेंगे। आज से तुम हमारे सरदार नहीं। अपनी बंदूक उतारकर हमें दे दो····

(लाखन चुपचाप बंदूक व कारतूस का बेल्ट उतारकर सूरत को थमा देता है।)

जग्गा — अब मरने के लिये तैयार हो जाओ।

लाखन — मैं तैयार [illegible]। लेकिन मेरी एक विनती सुनो। [illegible] [illegible] बेटी से मिल लेने दो फिर मुझे [illegible]

जितनी चाहो उतनी गोली इस सीने में उतार देना ।

मूरत — हालांकि नूर मोहम्मद की मिन्नत तुमने सुनी नहीं थी और उसे बड़े बेजा ढंग से मौत के घाट उतरवा दिया था, पर हम इतने नीच नहीं । इसके अलावा तुम हमारे गिरोह के बरसों सरगना रहे, सरदार रहे, तुम्हारी इतनी विनती हम जरूर सुनेंगे । जाओ अपनी बेटी से मिल लो ।

(लाखन कृतज्ञ दृष्टि से उन्हें देखता हुआ आगे बढ़ता है ।)

कल्ला — (चिल्लाकर) सरदार (लाखन पलटकर देखता है) तुम अकेले नहीं जा सकते ।

(और इसके साथ ही लाखन के पैरों के निकट मूरत, जग्गा व कल्ला द्वारा फेंकी बंदूकें व कारतूसों के बेल्ट आकर गिरते हैं । लाखन चकित सा उन्हें देखता है ।)

जग्गा — हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे ।

मूरत — तुम्हारे साथ हम भी अपने आप को पुलिस के हवाले करेंगे ।

कल्ला — आत्म-समर्पण करेंगे ।

(लाखन छलछलाई आंखों से उन्हें देखता है । वे तीनों लाखन की ओर बढ़ते हैं ।)

(परदा धीरे-धीरे बंद होता है ।)

रूप-सज्जा एवं वेशभूषा

पात्र-परिचय

दीनदयाल—एक स्कूल-मास्टर, उम्र 50 वर्ष
विजय—दीनदयाल का पुत्र, लगभग 24 वर्ष
नीरज—विजय का अभिन्न मित्र, उम्र 25 वर्ष
मांगेलाल—एक बनिया, उम्र लगभग 50 वर्ष
घन्नामल—एक लाला, उम्र 45 से 50 वर्ष के बीच

काल—वर्तमान
समय—पहले दोपहर—बाद में संध्या
स्थान—भारत का कोई भी एक शहर
घटना-स्थल—दीनदयाल के मध्यमवर्गीय आवास की बैठक।

[illegible]नदयाल स्वस्थ किन्तु इकहरा बदन, औसत से अधिक ऊंचाई, उज्ज्वल गेहुंआ वर्ण, बड़ो-बड़ी आँखों के कोणों पर [illegible] मूंछे, सर व मूंछों के बाल लगभग [illegible] है। शरीर पर धुली हुई सफेद धोती [illegible]ले रंग की जाकेट, पांवों में ऐनक [illegible]। उत्तरार्द्ध में वेशभूषा [illegible] आ सकती है।

विजय — मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाला श्याम वर्णीय आधुनिक युवक। ऊंचाई सामान्य, स्वास्थ्य अच्छा। शरीर पर पैंट–बुशर्ट व जूते। उत्तरार्द्ध में चाहने पर इनमें परिवर्तन किया जा सकता है।

नीरज — हाल ही इंजीनियर नियुक्त हुआ आकर्षक युवक। गौर वर्णीय, स्वास्थ्य व कद विजय से बेहतर। पैंट-बुशर्ट व जूते। सर के बाल घुंघराले, छोटी-छोटी संवरी हुई मूंछें। उत्तरार्द्ध में वेशभूषा बदली जा सकती है।

मांगेलाल — इकहरे बदन का औसत से अधिक लंबा श्याम-वर्णीय अधेड़। सर के बाल लगभग सफेद हो चले। दाढ़ी-मूंछें नहीं, किन्तु आंखों से झलकता काइयापन। पहनावे में लट्ठे की धोती-कुर्ता। सर पर सफेद दुपल्ली टोपी, पैरों में सस्ती सी चप्पल।

धन्नामल — मांगेलाल के विपरीत नाटा, मोटा तोंदवाला लाला, गंजी चांद, मोटी-मोटी मूंछें, श्यामवर्णीय। आंखों में हमेशा एक लालची चमक विद्यमान। गंजी चांद पर जो थोड़े बहुत बाल हैं वे तथा मूंछें अधपकी। शरीर पर चिकटी, धोती, उतना ही चिकटा कुर्ता और जाकेट, पैरों में रबर की दो पट्टियों वाली चप्पल। उत्तरार्द्ध में वेशभूषा बदलकर बेहतर दिखाई जा सकती है।

[नोट : यह आवश्यक नहीं कि कलाकारों के चयन में निर्देशक उसके कद व वर्ण के सम्बन्ध में उल्लिखित

निर्देशों का कड़ाई से पालन करे। अपनी सूझ-बूझ व कल्पना के अनुसार वह इसमें आवश्यक परिवर्तन कर सकता है। इसी तरह देश-काल के अनुरूप वेशभूषा भी बदली जा सकती है।]

[परदा खुलने पर मंच पर एक मध्यमवर्गीय परिवार की बैठक दिखाई देती है। मंच पर सोफा-सेट के अलावा पीछे दीवार से लगी हुई एक रैक है जिसके टॉप पर एक टाइमपीस और शो-पीस की वीनस की मूर्ति के अलावा विजय की फ्रेम में जड़ी हुई एक स्टैण्ड फोटो है। रैक से थोड़ा हटकर दीवार पर एक नये साल का कैलेण्डर लगा हुआ है।

परदा खुलने पर सोफे पर बैठकर विजय एक मोटी सी पुस्तक पढ़ता नजर आता है। कुछ पलों तक यही स्थिति

रहती है, फिर नीरज प्रवेश करता है। उसके हाथ में एक ब्रीफ-केस है।]

विजय [सर उठाकर] क्यों बे, नौकरी क्या मिली कि हमें तक भूल गया। आज दस दिनों बाद अपनी मनहूस सूरत दिखाने आ रहा है!

नीरज (बगल में बैठते हुये) और वह भी बड़ी मुश्किल से दो दिनों की छुट्टी लेकर। नई-नई नौकरी लगी है न, छुट्टी मिले भी तो कैसे। पर तुझे देखे बगैर दस दिन क्या बीते, ऐसा लगा एक युग बीत गया हो।

विजय (चपत लगाते हुये) चल-चल अब मक्खन मत लगा। ऐसा क्यों नहीं कहता कि जैसे नये-नये मुल्ले को रोज नमाज पढने का शौक चर्राता है, वैसे ही नई-नई नौकरी में तू भी कुछ ज्यादा ही उत्साह दिखा रहा है।

नीरज तू मेरी बात का यकीन कर या न कर पर मैं सेंट-परसेंट हकीकत बयान कर रहा हूं। तेरी याद में जब बहुत बेजार हो गया तो साहब के सामने रोनी सूरत लेकर खड़ा हो गया।

विजय मेरी याद में बेजार हो गया (हंसकर) वाह बेटा, बात तो ऐसी कर रहा है कि मैं तेरा दोस्त नहीं तेरी प्रेमिका होऊं!

नीरज प्रेमिका से भी बढ़कर! (दिल पर हाथ रखकर) कोई मेरे दिल से पूछे कि तू मेरे लिये क्या है!

विजय अच्छा-अच्छा, अब शायरी छोड़ और ये बता, तूने साहब से क्या कहकर छुट्टी ले ली ?

नीरज साहब से रोनी सूरत बनाकर बोला कि मुझे घर की याद बहुत सता रही है इसलिये मैं एक बार दो दिनों के लिये घर जाना चाहता हूं ।

विजय (चौंककर) घर की याद ! यानि क्या तेरी पोस्टिंग शहर के बाहर हो गई है ?

नीरज यही तो रोना है यार !

विजय लेकिन तूने तो बताया था कि तेरी पोस्टिंग यहीं है!

नीरज हां ! जैसा मेरे एपोइंटमेंट लेटर में लिखा था वैसा ही मैंने तुझे बताया था । पर यहां आकर ड्यूटी ज्वाइन करते ही बड़े साहब ने फरमान जारी किया कि मैं विशेष सुपरविजन के लिये डैम प्रोजेक्ट पर चला जाऊं ।

विजय डैम प्रोजेक्ट ! यह कहां है ?

नीरज यहां से बीस मील दूर । दरअसल सरकार पिछड़े इलाकों के कल्याण के लिये कई योजनायें चला रही है । यह डैम प्रोजेक्ट भी उन्हीं में से एक है । यहां से बीस मील दूर पहाड़गढ़ गांव में एक नहर की खुदाई का काम चल रहा है । मुझे वहां रहकर यह देखना पड़ रहा है कि काम-काज सब ठीक चल रहा है या नहीं ।

विजय (हंसकर) यानि नौकरी की शुरूग्रात ही राष्ट्र-निर्माण की योजना से हो रही है।

नीरज बिलकुल [सीना फुलाकर] कल जब वह नहर पूरी हो जायेगी तो मैं भी सीना तान कर गर्व से कहूंगा कि इसके निर्माण में इस बंदे का भी योगदान है। लेकिन यार, जब से आया हूं, थानेदार की तरह तू मेरी ही पूछ ताछ कर रहा है। जरा अपनी भी तो बता, तेरे क्या हालचाल हैं ?

विजय [गहरी सांस लेकर] अपने भला क्या हाल चाल होंगे। न सावन हरे न भादों सूखे !

नीरज अबे, तेरे हाल चाल जानने में इतनी दूर से मरता हुआ भागा-भागा आ रहा हुं और तू मुझे ऐसे ही टाल रहा है।

विजय अच्छा, अब जब तू गले ही पड़ रहा है तो सुन मेरे हाल चाल। परीक्षा दे दी है, पेपर्स ठीक-ठाक हुये हैं, पास होने की उम्मीद है।

नीरज यानि दो साल बाद तू डाक्टर हो जायेगा !

विजय दो साल तो बड़ा लंबा अरसा होता है यार, यहां इंसान को अगले पल की खबर नहीं होती।

नीरज अबे, दार्शनिकों की तरह बात कर के अपना मूड खराब मत कर वरना मार बैठूंगा। ये बता बाबूजी कहां हैं ? स्कूल गये हैं क्या ?

विजय नहीं। स्कूल से दो दिनों की छुट्टी ले रखी हैं। लेकिन ये दो दिनों की छुट्टी तेरी तरह तफरीह करने को नहीं बल्कि एक ऐसी समस्या का हल ढूंढ़ने के लिये है जिसे वह अपनी जिंदगी का एक अहम् मसला समझ बैठे हैं।

नीरज क्या मतलब ?

विजय मतलब मोना की शादी !

नीरज तो क्या मोना की शादी तय हो गई ?

विजय तय तो अभी नहीं हुई। तेरे जाने के बाद लगभग सप्ताह भर पहले एक लड़का उसे देखने आया था। कल शाम लड़के के बाप ने बाबूजी को एक संदेश भेजा था, मिलने के लिये बुलाया था। बाबूजी ने दो दिनों की छुट्टी ले ली है और अभी सुबह-सुबह उसी से मिलने गये हैं।

नीरज सचमुच, मोना ने जब से एम. ए. पास किया है तब से बाबूजी जल्द से जल्द उसके हाथ पीले करने को परेशान हो उठे हैं।

विजय यह तो आम बात है नीरज। हमारे समाज में बेटी के जवान होते ही हर बाप परेशान हो जाता है। और अगर वह बाप मध्यम या गरीब वर्ग का हुआ तो उसके ओंठों की मुस्कान गायब हो जाती है, रातों की नींद हराम हो जाती है।

नीरज हाँ, तू ठीक कहता है यार। इसी फिक्र में घुलने लगता है बेचारा कि कैसे करेगा अपनी बेटी के हाथ पीले। कहाँ से जुटा पायेगा वह उसके ब्याह का दहेज !

[विजय खड़ा होकर भावुक सा मंच के सामने की ओर आता है]

विजय बस, यहीं आकर हमारे समाज की प्रगति का लेखा-जोखा महज लोगों का दिल बहलाव के लिये एक कोरी बकवास लगने लगता है। आज पैंतीस साल से ज्यादा हो गये हमें आजाद हुये लेकिन अब तक हम एक ऐसी दानवी प्रथा का अंत नहीं कर सके जिसने कई बाप और कई बेटियों को या तो तबाह कर दिया या आत्महत्या करने के लिये मजबूर !

नीरज — [विजय के करीब जाते हुये] कौन करेगा अंत ? इसका अंत महज भाषण और बयान बाजी से नहीं होगा और न ही एक-दो लोगों के नारे लगाने या जुलूस निकालने से। इसके लिये सभी को सम्मिलित रूप से प्रयास करना होगा ।

विजय — [घूमकर] सभी कौन ?

नीरज — सबसे पहले आता हैं बेटी का बाप । वह यह प्रतिज्ञा कर ले कि मैं किसी ऐसे लड़के से अपनी बेटी का ब्याह नहीं करूंगा जो दहेज की मांग करेगा । फिर आती है बेटी । वह भी अपने पिता की तरह ही इसी बात की शपथ ले । फिर आते हैं हम-तुम जैसे नौजवान !

विजय — बेटी का बाप भला क्या शपथ लेगा बेचारा । समाज में रहते हुये वह कई सामाजिक मर्यादाओं से घिरा होता है ?

नीरज — तुम जिन्हें सामाजिक मर्यादा कह रहे हो वे सामाजिक मर्यादा नहीं बल्कि ऐसे रूढ़िवादी परंपरागत अंधविश्वास हैं, जैसे साल भर पढ़ाई न कर परीक्षा के वक्त रोज बजरंग बली को लड्डू या पेड़े का भोग चढ़ा दो तो बजरंग बली पास करा देंगे ।

विजय — यह तो मैं भी जानता हूं । लेकिन इन अन्धविश्वासों की जिस जंजीर में हमारा समाज जकड़ा हुआ है उन्हें तोड़ेगा कौन ? सदियों से चली आ रही ये परम्परायें अब हमारे जीवन और समाज की मान्यतायें बन चुकी हैं ।

नीरज — इस जंजीर को तोड़ने के लिये ही हम सबको एक साथ मिलकर आगे आना होगा, क्रांति करनी होगी। ऐसी मान्यतायें किस काम की जो इन्सान की जिंदगी और समाज को गम और बरबादी के अंधेरे गड्ढे में गर्क कर दे।

(इसी समय सहसा बाहर से दीनदयाल प्रवेश करते हैं।)

दीनदयाल — कौन है भाई, बड़ी गरमागरम बहस कर रहा है। (नीरज को देख) अरे नीरज बेटे, तू कब आया?

नीरज — (चरण छूकर) अभी थोड़ी देर पहले ही आया हूं बाबूजी!

दीनदयाल — (हंसकर) किस बात पर चल रही है बहस?

नीरज — आप तो जानते ही हैं बाबूजी, मैं और विजय किसी न किसी बात पर बहस करते ही रहते हैं।

दीनदयाल — हां, सो तो है। (सोफे पर बैठते हुये). कैसी चल रही है तेरी नौकरी?

नीरज — सरकारी नौकरी को जैसी चलनी है वह तो चलती ही रहेगी। यह बताइये, आप कहां से आ रहे हैं?

दीनदयाल — अरे बेटा, मीना को पिछले सप्ताह एक लड़का देख गया था। उसी के पिता ने बुलावा भेजा था, सो उसी के पास से आ रहा हूं।

नीरज — क्या कहा उसके पिता ने?

दीनदयाल — लड़के का बाप लड़की के बाप से कहता ही क्या है? बस कीमत बता दी लड़के की। लड़के की कीमत देने का दम लड़की के बाप में हो, तो आगे बात चलाये वरना रिश्ता टूटा हुआ समझो।

विजय क्या कीमत बताई मांगेलाल ने अपने लाड़ले की ?

दीनदयाल पचास हजार रुपये नकद।

नीरज फिर आपने क्या जवाब दिया ?

दीनदयाल मेरी फटी कुर्त्ती की जेब में है ही क्या जो जवाब देता, उठ आया। मान लो, मैं उन्हें पचास हजार देने की बात मान भी लेता, तो फिर आगे मांग की बात होती। फिर शादी का खर्च अलग। पूरे लाख रुपयों की बात थी बेटा। और तुमसे मेरी हैसियत और औकात छिपी नहीं।

नीरज मेरा तो ख्याल है बाबूजी कि आप मीना की शादी के लिए खामखा परेशान हो रहे हैं बाबूजी। मीना पढ़ी-लिखी है, समझदार है, बालिग है। उसे अपना जीवन-साथी चुनने की छूट खुद दीजिये।

विजय यही बात तो मैं इन्हें कबसे समझा रहा हूं। आखिर अपने जीवन साथी के साथ जिंदगी भर मीना को ही निबाहना है तो उसे चुनने की छूट उसे ही दी जाये। उसे वह अच्छी तरह देख ले, परखले।

दीनदयाल तुम लोग आजकल के पढ़े-लिखे लड़के हो इसलिये हर तरह से सोच सकते हो, शायद उसे कर सकने का दम भी रखते होंगे। पर जिस समाज में रहकर जिस समाज की हर मान्यता का निर्वाह कर मैंने अपने बाल सफेद किये हैं उसी के सामने मैं अपने फर्ज व जिम्मेदारी से मुंह नहीं मोड़ सकता। आज अगर मीना की मां भी जिंदा होती तो शायद मेरी

ये जिम्मेदारी कुछ कम ही रहती । पर यह भी तो नहीं है ।

नीरज चलिये, मैं आपकी हर बात मान लेता हूं, आप सिर्फ मेरी एक बात मान लीजिये ।

दीनदयाल कौन सी बात ?

नीरज मीना को आप किसी दहेज लोलुप भेड़िये के हाथ मत सौंपिये ।

दीनदयाल पर बेटा, इसकी पहचान कैसे होगी कि यह भेड़िया है या भेड़ ?

विजय बड़ी आसान सी बात है बाबूजी, जो शादी के नाम पर आपसे लड़के की नीलामी बोली में शामिल होने को कहे वह बेशक भेड़िया है ।

दीनदयाल मैं जानता हूं बेटा कि तुम लोग दहेज मिटाने की बात कर रहे हो। (हंसकर) पर दहेज मिटाने की दिशा में महज नेताओं की बयानबाजी और नारे-बाजी के और कुछ नहीं हुआ है।

नीरज जो कल्याण हम खुद अपना कर सकते हैं उसके लिये नेताओं का मुंह ताकना कहां तक ठीक है और नेताओं या सरकार के पास और भी अहम् मामले हैं निपटाने को, हर किसी के व्यक्तिगत मामलों की ताक-झांक वे कहां तक करें!

दीनदयाल (हंसकर) अरे भाई, तुम लोग पढ़े-लिखे हो, बहस ही तुम्हारा गुण है। (उठता हुआ) मैं तुमसे नहीं जीत सकता।

नीरज अच्छा चलिये, मैं आपसे कोई बहस नहीं करता। आप मेरा सिर्फ एक अनुरोध स्वीकार कर लीजिये।

दीनदयाल कैसा अनुरोध?

नीरज कल मांगेलाल को आप बात करने के लिये यहां बुला लीजिये।

दीनदयाल इससे क्या होगा? यहां बुलाने से क्या उसकी मांगें घट जायेंगी?

नीरज घटे या बढ़े इसकी फिक्र करने की जरूरत आपको नहीं। आप तो अन्दर बैठकर आराम कीजियेगा। बात तो उससे मैं करूंगा।

दीनदयाल (सोचता हुआ) ठीक है भला मुझे क्या एतराज है! मैं आज ही उसे खबर भेज दूंगा, वह कल दोपहर आ जायेगा।

(दीनदयाल अन्दर चले जाते हैं।)

विजय मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मांगेलाल से अब तुम क्या बात करना चाहते हो?

नीरज विजय, इन दहेज लोलुपों से हम रिश्ता जोड़ें या तोड़ें यह तो बाद की बात है, लेकिन हम इन्हें एक बार सबक जरूर सिखाकर छोड़ें।

विजय क्या सबक सिखाओगे तुम उसे?

नीरज अबे, बिना कुछ खिलाये पिलाये ही सब पूछ लेगा? यहां आये इतनी देर हो गयी, चाय तक के लिये नहीं पूछा।

विजय पूछा मेहमानों से जाता है और तू इस घर के लिये मेहमान नहीं है। आ, चल अन्दर। चाय के साथ तुझे गरमागरम पकौड़ियां भी खिलाता हूं।

नीरज गरमागरम पकौड़ियां! किस होटल से मंगवायेगा?

विजय उस होटल से, जिसकी मालकिन है मोना। उसे तेरे आने की खबर क्या नहीं लग गई होगी? पकौड़ियां तेरी कमजोरी है, यह वह अच्छी तरह जानती है, इसलिये वह जरूर पकौड़ियां तल रही होगी।

नीरज (खुश होकर) अच्छा! चलें, तो देखें!

(दोनों अन्दर जाते हैं। दृश्य-परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश लुप्त होता है। पुनः प्रकाश होने पर मंच पर वही दृश्य दिखाई देता है। सोफे पर दीनदयाल, नीरज और विजय विचारमग्न मुद्रा में बैठे नजर आते हैं। विजय अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखता है।)

विजय बारह बजने में पांच मिनट रह गये हैं। मांगेलाल ने बारह बजे का वक्त दिया था आने को। अब आता ही होगा।

दीनदयाल लेकिन बेटा, अब तक तुम लोगों ने मुझे यह नहीं बताया कि तुम लोग उससे बात क्या करोगे?

नीरज बस, पांच मिनट की ही तो बात है। पांच मिनट बाद आप खुद सुन लीजिये, हम उससे क्या बात कर रहे हैं।

दीनदयाल वह तो ठीक है, पर तुम जानते हो बेटा कि मैं समाज का एक सीधा-सच्चा आदमी हूं। तुम लोग जोश-खरोश में कुछ ऐसा कह या कर न डालो जिससे मेरी प्रतिष्ठा को आंच आये।

विजय [तिलमिलाकर] आप कैसी बात करते हैं दादूजी! क्या आपकी प्रतिष्ठा मेरी प्रतिष्ठा नहीं?

मांगेलाल [बाहर से आवाज] दीनदयाल जी···अरे भाई दीन दयाल जी···

लो, वह आ गया। आइये बाबूजी, अंदर चलें। विजय, तुम मोर्चा संभालो तब तक मैं आता हूं।

[नीरज और दीनदयाल उठकर अंदर जाते हैं। विजय मंच के एक कोने तक जाता है और हाथ जोड़कर नमस्कार करता है।]

विजय नमस्कार मांगेलाल जी…आइये-आइये, अंदर पधारिये…

[विजय के पीछे-पीछे मांगेलाल अंदर आकर सोफे पर बैठता है।]

मांगेलाल भाई, कल तो दीनदयाल जी से मेरी बात हो गई थी जो है सो…

विजय बात ये है कि पिताजी ठहरे पुराने जमाने के आदमी आगे-पीछे की बात गंभीरता से सोचते नहीं वरना आप ही बताइये कि क्या पचास हजार रुपये उनके बूते की बात नहीं ?

मांगेलाल हां, कल जब वे चुपचाप उठ आये सो पचास हजार रुपये की बात सुन कर तो अचरज तो मुझे भी हुआ था। समाज में गरीब स्कूल मास्टर होने का दिखावा जाने भले ही करते रहे, जो है सो, पर क्या मैं नहीं जानता कि स्कूल-मास्टर की दो नंबर की कमाई कितनी है !

जय [आश्चर्य से] स्कूल मास्टर और दो नंबर की कमाई !

मांगेलाल हां, भले ही वे तुमसे भी छिपाते रहे हो, जो है सो, पर मैं तुम्हें बताता हूं। भाई, परीक्षा के समय मोटी रकमों की कई ट्यूशनें कर ली, पेपर-आऊट कर दिया, फेल होने वाले को पास करा दिया, ये सब दो नम्बर की कमाई नहीं तो और क्या है। और मैंने सुना है, आजकल तो सरकार परीक्षा के उत्तर-पत्रों को जंचाई के भी अलग से पैसे देती है, जो है सो···

विजय हां-हां, आप ठीक कह रहे हैं।

मांगेलाल भाई, वैसे तो मैं शुद्ध गांधीवादी विचारधारा का आदमी हूं। दहेज-प्रथा के उन्मूलन के लिये कृत-संकल्प। लेकिन मैंने भी अपने लल्लू को पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, जो है सो, पढ़ाया-लिखाया···

विजय तो पचास हजार दे रहे हैं आप ?

मांगेलाल (चौंककर) क्या मतलब, जो है सो !

विजय भाई, हमने अपनी प्यारी सी बहन को पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया···

मांगेलाल जो है सो, वह तो तुम्हारा फर्ज था !

विजय आपका फर्ज इन्वेस्टमेंट हो गया और हमारा फर्ज-फर्ज ही रह गया। खैर, एम. ए. पास किया है हमारी बहन ने। अब वह आपके घर जायेगी।

कल को अगर वह कुछ कमा-धमाकर लायेगी तो उसका लाभ तो आप को ही पहुंचेगा न ?

मांगेलाल हम क्या अपने घर की बहू को कमाने-धमाने भेजेंगे, जो है सो···

विजय यह बात और है कि आप उसे कोई नौकरी धंधा न करायें लेकिन उसके पढ़ाई-लिखाई का फायदा तो आपको ही पहुंचेगा न ? और कुछ नहीं तो समाज में सीना तानकर आप यही कहेंगे कि आपकी बहू एम. ए. है ।

मांगेलाल (घुर्राकर) हूं, जो है सो······

विजय आगे···उससे जो संतान होगी उससे आपका ही वंश चलेगा······

बताइये, चलेगा कि नहीं ? जब आपको हर तरफ से लाभ ही लाभ है तो पचास हजार देने में एतराज क्या ?

(गुस्से से मांगेलाल उठ खड़ा होता है ।)

मांगेलाल क्या ऐसी ही उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाने के लिये तुमने मुझे अपने घर में बुलाया था, जो है सो··· कान खोलकर सुन लो, मेरे पास तुम्हारी दाल नहीं गलने वाली है, जो है सो···मैं जा रहा हूं···

[सहसा नीरज प्रवेश करता है ।]

नीरज — अरे-अरे, मांगेलाल जी ! बात करने के लिये तो मैंने आपको बुलाया है । और आप मुझसे बात किये बगैर नाराज होकर जा रहे हैं ।

मांगेलाल — जाऊं नहीं तो क्या, इसकी सनकभरी बातों में अपना माथा खपाऊं, जो है सो । वैसे आपकी तारीफ ?

विजय — ये मेरे अभिन्न मित्र हैं नीरज । सिंचाई विभाग में इंजीनियर हैं ।

नीरज — पहले आप शांति से बैठ जाइये, फिर इत्मीनान से बात करते हैं ।

मांगेलाल — [बैठते हुये] सिंचाई विभाग में इंजीनियर···वहां तो दो नम्बर की कमाई बड़ी जबरदस्त है, जो है सो···

कल को अगर वह कुछ कमा-धमाकर लायेगी तो उसका लाभ तो आप को ही पहुंचेगा न ?

मांगेलाल हम क्या अपने घर की बहू को कमाने-धमाने भेजेंगे, जो है सो···

विजय यह बात और है कि आप उसे कोई नौकरी धंधा न करायें लेकिन उसके पढ़ाई-लिखाई का फायदा तो आपको ही पहुंचेगा न ? और कुछ नहीं तो समाज में सीना तानकर आप यही कहेंगे कि आपकी बहू एम. ए. है।

मांगेलाल (घुर्राकर) हूं, जो है सो······

विजय आगे···उससे जो संतान होगी उससे आपका ही वंश चलेगा······

बताइये, चलेगा कि नहीं ? जब आपको हर तरफ से लाभ ही लाभ है तो पचास हजार देने में एतराज क्या ?

(गुस्से से मांगेलाल उठ खड़ा होता है।)

मांगेलाल क्या ऐसी ही उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाने के लिये तुमने मुझे अपने घर में बुलाया था, जो है सो··· कान खोलकर सुन लो, मेरे पास तुम्हारी दाल नहीं गलने वाली है, जो है सो···मैं जा रहा हूं···

प्रवेश करता है।]

नीरज — अरे-अरे, मांगेलाल जी ! बात करने के लिये तो मैंने आपको बुलाया है। और आप मुझसे बात किये बगैर नाराज होकर जा रहे हैं।

मांगेलाल — जाऊं नहीं तो क्या, इसकी सनकभरी बातों में अपना माथा खपाऊं, जो है सो। वैसे आपकी तारीफ ?

विजय — ये मेरे अभिन्न मित्र हैं नीरज। सिंचाई विभाग में इंजीनियर हैं।

नीरज — पहले आप शांति से बैठ जाइये, फिर इत्मीनान से बात करते हैं।

मांगेलाल — [बैठते हुये] सिंचाई विभाग में इंजीनियर···वहां तो दो नम्बर की कमाई बड़ी जबरदस्त है, जो है सो···

नीरज — हां, हां क्यों नहीं ! इसीलिये तो आज अपने दोस्त की मदद करने आया हूं ।

विजय — मेरी समझ में नहीं आता कि भला सिंचाई विभाग में दो नम्बर की कमाई कैसे होती है ! क्या लोग पानी चुराकर बेचते हैं ?

नीरज — पानी और मिट्टी की तो छोड़ो, बेचने वाले कफन चुराकर भी बेच देते हैं ।

मांगेलाल — जो है सो, तुम क्या जानो इस दुनिया में क्या-क्या होता है···कालेज में पढ़ लेने से दुनियादारी नहीं आ जाती···अब ये इंजीनियर हैं, एकाद ठेकेदार का एकाद ठेका पास करा दिया, चालीस-पचास हजार रुपये चित्त कर लिये···जो है सो, मैं गलत कह रहा हूं···

नीरज — बिलकुल सही कह रहे हैं !

मांगेलाल — [विजय से] अपने भाग्य को सराहो कि ऐसा बढ़िया आदमी तुम्हारा दोस्त हुआ, जो दोस्त की तकलीफ सुनकर ही उसकी मदद को आ पहुंचा···सिर्फ पढ़ाई कर लेने और गाल बजा लेने से समस्याओं के हल नहीं निकल आते, जो है सो···

नीरज — अब आप विजय को छोड़िये और मुझसे बात कीजिये । (कुछ रुककर) हां, तो कितनी मांग है आपकी ? पचास हजार रुपये !

गेलाल दीनदयाल जी ने नहीं बताया जो है सो···

रज उन्होंने तो इतना ही बताया था ।

गेलाल तब सही ही बताया है जो है सो···

रज मैं पचास हजार क्या एक लाख देने को तैयार हूं। पर मुझे मालूम भी तो हो कि आपकी इतनी लेने की हैसियत भी है या नहीं !

ांगेलाल दीनदयाल की बेटी से रिश्ते की बात की इसलिये आप हैसियत की बात कहकर मुझे गाली दे रहे हो जो है सो···

ीरज इसमें नाराज होने की बात नहीं माँगेलाल जी ! शादी-ब्याह जिंदगी भर का बंधन होता है। कोई भी भाई बिना सब जाने-परखे अपनी बहन को अंधे कुंये में तो ढकेल नहीं देगा !

ांगेलाल तो कान खोलकर सुन लो नीरज बाबू, जो है सो मेरे लल्लू के लिये एक से एक जोरदार रिश्ते आये···लोग लाख-दो लाख तक देने को तैयार थे···पर जो है सो लल्लू ने दीनदयाल जी की बेटी को ही पसन्द क्यों किया और उसी से शादी की जिद क्यों की ? क्योंकि वह पढ़ी-लिखी थी और सुन्दर भी···लल्लू मेरा इकलौता बेटा है इसके कारण मुझे उसकी जिद के आगे झुकना पड़ा।

ीरज आपने दीनदयाल जी की बेटी को अपनाने का फैसला कर सचमुच उन पर बहुत बड़ी कृपा की ।

मांगेलाल हां-हां, कृपा नहीं तो और क्या है जो है सो! चम्पा वनस्पति की पूरे शहर को क्या पूरे जिले की एजेंसी मेरे पास है। सरे बाजार दुकान है अपनी चार लाख एक नम्बर से और चार लाख दो नम्ब से सालाना कमाई है मेरी!

विजय यानि आठ लाख रुपये सालाना!

मांगेलाल हां-हां तो इसमें आंख क्यों फाड़ रहे हो जो है सो''

विजय लेकिन आठ लाख तो बहुत होते हैं!

मांगेलाल हां, तो चम्पा वनस्पति के पूरे जिले का एजेन्ट हूं कोई भड़भूंजा नहीं जो है सो'''

नीरज वह तो ठीक है मांगेलाल जी, लेकिन ये एक नम्बर और दो नम्बर वाली बात मेरी समझ में नहीं आई, जरा खुलासा करके समझाइये!

मांगेलाल यह तो बहुत सीधी सी बात है जो है सो! मुझे साल भर में चम्पा वनस्पति घी के एक लाख बीस हजार टिन मिलते हैं। इनमें से जो है सो तीस हजार या चालीस हजार टिन मैं बाजार में बेचता हूं। उसका जो मुनाफा मिलता है, वह तो मिलता ही है जो है सो'''

विजय अब बाकी रह गये वनस्पति के अस्सी हजार कनस्तर!

मांगेलाल इन्हें गोदाम में दबा देता हूं, जब बाजार में वनस्पति की किल्लत बहुत बढ़ जाती है तो इन एक लाख

टिनों को निकालकर ड्योढ़ी कीमत पर बाजार में बेच देता हूं।

विजय — अभी तो गोदाम में अस्सी हजार टिन आपने दबाये थे, फिर एक लाख कैसे निकल आये ?

मांगेलाल — इसीलिये तो कहता हूं कि जो है सो पढ़ने से ही इन्सान होशियार नहीं हो जाता। अरे भाई, अस्सी हजार टिन में मिलावट कर हमने उसे एक लाख टिन बना दिया। अब समझ में आया जो है सो ?

नीरज — ड्योढ़ी कीमत और बीस हजार टिन की मुफ्त की कमाई !

मांगेलाल — हां, यही तो है जो है सो, दो नम्बर की कमाई। फिर ब्याज पर रुपये उधार चलाता हूं, जिसके बारे में सरकार को जरा भी पता नहीं। इसके बाद एक काम ऐसा भी है जिससे मैं हर साल शुद्ध दो लाख रुपये बचा लेता हूं।

विजय — वह कौन सा काम है ?

मांगेलाल — हर साल धंधे में घाटा दिखाकर मैं इन्कम टैक्स पूरी की पूरी बचा लेता हूं जो है सो !

नीरज — यानि एक पैसा भी इन्कम टैक्स नहीं देते ?

मांगेलाल — सरकार ने बहुत ज्यादा दबाव डाला तो हजार-पांच सौ दे देता हूं जो है सो।

नीरज — माफ करना मांगेलाल जी, आपका शरीर भी दो नम्बर का है।

मांगेलाल — [जरा गर्म होकर] क्या मतलब, जो है सो ?

नीरज नहीं-नहीं, इसमें गर्म होने की बात नहीं। आपके इस शरीर को देखकर सरकार को भी यकीन करने को मजबूर होना पड़ता होगा कि सचमुच आपको धंधे में घाटा हो रहा होगा वरना आप इस तरह सूखे-सूखे कैसे रहते होंगे!

मांगेलाल [खुश होकर] ऐसी बात है! जो है सो, निगाह तुम्हारी बड़ी तेज है नीरज बाबू!

नीरज सचमुच आपकी हैसियत जब इतनी है तो पचास हजार रुपये मांगकर तो आपने दीनदयाल जी पर एहसान ही किया है।

मांगेलाल मेरी प्रमुख मांग ही क्या थी नीरज बाबू, पचास हजार रुपये और एक स्कूटर!

नीरज लेकिन मैं आपके हैसियत को तौहीन नहीं होने दूंगा मांगेलाल जी! मैं आपको एक लाख रुपये और एक कार दूंगा।

मांगेलाल [उत्साहित होकर] जो है सो, क्या सच!

नीरज और नहीं तो क्या! जिस घर में हमारी बहन जाकर राजरानी बनकर रहेगी उस के लिये जितना भी दिया जाये उतना ही थोड़ा है।

मांगेलाल तुम आदमी समझदार मालूम पड़ते हो नीरज बाबू! जो है सो, तुमने बात ही बात में मामले की नब्ज पकड़ ली।

नीरज हां, जरा आय-व्यय का ब्योरा अच्छी तरह मुझे समझाकर लिखकर दे दीजिये।

मांगेलाल लिखकर दे दूं ! [चौंककर] जो है सो क्यों ?

नीरज अरे सीधी सी बात है भाई, जब दीनदयाल जी सुनेंगे कि मैं शादी में कार दे रहा हूं और एक लाख रुपये तो वे मुझ पर उखड़ जायेंगे। कहेंगे, जब बात स्कूटर और पचास हजार पर निपट सकती थी तो मैंने इतना फिजूल खर्च क्यों किया या क्यों करना मंजूर किया। तब आपकी आय का ये ब्यौरा दिखाकर मैं उनको आपके जबरदस्त हैसियत का यकीन दिला सकूंगा।

[मांगेलाल सर झुकाकर सोचने लगता है। नीरज विजय को आंख मारकर संकेत करता है। विजय उठकर चला जाता है और अगले पल हाथ में कलम कागज लिये लौटता है।]

नीरज अरे, आप तो खामखा सोच में पड़ गये मांगेलाल जी। जिस तरह लोग वर-वधू की कुण्डली जांच-परख लेते हैं उसी तरह आजकल आय-व्यय के ब्यौरे की भी जांच-परख लोग कर लेते हैं। आजकल तो यह आम होने लगा है। विजय, इन्हे कलम कागज दे दो।

[विजय से कलम-कागज लेकर मांगेलाल एक गहरी सांस लेता है।]

मांगेलाल ठीक है, जब तुम इतना कह रहे हो तो लिख देता लिखते हुये] पर लाख रुपये और कार की बात है न ? जो है सो…

नीरज   मर्दों की जबान एक होती है। पर एक नम्बर-दो नम्बर की बात जरा खुलासा लिखियेगा।

[मांगेलाल परचा लिखकर नीरज को देता है।]

मांगेलाल   लो, इसमें सब कुछ खुलासा लिख दिया है! जो है सो, तो अब बात पक्की समझूं?

[नीरज कुछ क्षणों तक परचे को गौर से देखता है, फिर एक गहरी सांस लेता है।]

नीरज   [उठ खड़े होते हुये] मांगेलाल, क्या तुमने कभी यह कहावत सुनी है कि सयाना कौआ ही अक्सर गन्दगी पर बैठता है?

मांगेलाल   जो है सो, क्या मतलब?

नीरज   मतलब ये कि अब तुम शादी की तो नहीं अपने जेल जाने की तैयारी करो!

मांगेलाल   [बुरी तरह चौंककर] ज...ज...जेल! जो है सो क्यों?

नीरज   इसलिये कि मैं इंजीनियर नहीं इन्कम टैक्स का इंस्पेक्टर हूं। इन्कमटैक्स की चोरी, मुनाफाखोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी, मिलावट ये सब जुर्म तुम पर एक साथ लगेंगे। सबूत है, तुम्हारे ही हाथ से लिखा यह परचा।

(मांगेलाल घबराकर उठ खड़ा होता है और हाथ जोड़ने लगता है।)

मांगेलाल हुजूर, मैंने आपको पहचानने में भूल की, मुझे माफ कर दीजिये ।

नीरज अदालत भले ही तुम्हें माफ कर दे, पर मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगा । हरगिज नहीं । तुम समाज व देश के दुश्मन हो । विजय, जरा मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें परचा लिखकर देता हूं उसे लेकर थाने चले जाओ । थानेदार से कहना हथकड़ी लेकर आये ।

(नीरज के पीछे विजय अन्दर जाता है ।)

मांगेलाल (अपने आप से) हथकड़ी लग गई तो समाज और शहर में इज्जत पर झाड़ू फिर जायेगा । अभी वे दोनों अन्दर हैं । मौका अच्छा है, भाग चलूं !

(मांगेलाल उठकर सहमे-सहमे कदम उठाता दरवाजे की ओर बढ़ता है । तभी सहसा नीरज की अन्दर से आती ऊंची आवाज वहां गूंजती है ।)

नीरज (आवाज) विजय जाकर देखो, कहीं वह मांगेलाल का बच्चा भाग न जाये ।

(यह सुनते ही मांगेलाल तेजी से दरवाजे की ओर भागता है पर बेहद बदहवासी में उसकी एक टांग दूसरे टांग के धोती की लांग में फंस जाती है और वह चारों खाने चित्त गिर पड़ता है । तभी नीरज और विजय प्रवेश करते हैं और उसे देखकर हंसते हैं ।)

मांगेलाल (नीचे पड़ा हुआ ही हाथ जोड़कर) हुजूर, मुझ पर दया कीजिये, जो है सो हथकड़ी मत लगवाइये···जो है सो इस उम्र में किरकिरी हो जायेगी···

नीरज ठीक है मांगेलाल, तुम उठो और जाओ। लेकिन आईंदा शादी के नाम पर अगर किसी गरीब को सौदेबाजी कर सताया तो याद रखना, तुम्हारे हाथ का लिखा हुआ परचा, मैं कानून लागू कर दूंगा।

मांगेलाल [उठकर) दोनों कान पकड़ता हूं हुजूर···जो है सो ऐसी गलती अब नहीं होगी।

नीरज जहां तक रही इस रिश्ते की बात तो तुम इसे भूल जाओ। तुम जैसे दहेज के भूखे भेड़िये के हाथ हम अपनी बहन नहीं सौंप सकते (जोर से) अब जाओ।

मांगेलाल जाता हूं हुजूर, जो है सो…

[मांगेलाल बाहर जाता है। नीरज और विजय जोर से हंसते हैं। इसी समय अन्दर से दीनदयाल प्रवेश करते हैं।]

दीनदयाल बड़ी मिट्टी पलीद की तुम लोगों ने उस बेचारी को।

विजय बेचारा! [व्यंग्य से] एक गरीब स्कूल मास्टर से दहेज के नाम पर पचास हजार रुपये मांगने वाला वह कुत्ता अब तुम्हारे लिये बेचारा हो गया।

दीनदयाल वह तो ठीक है, पर अब कहीं वह हमारी समाज में बदनामी न करे।

विजय करता है तो करे! समाज, समाज, समाज! समाज को आपकी फिक्र नहीं पर आपको समाज की फिक्र है। आज आपकी बेटी की शादी नहीं हो रही है तो समाज उस पर उंगली उठाने को तैयार हो जायेगी लेकिन समाज ऐसा कोई उपाय नहीं करेगी जिससे आपकी बेटी की शादी हो जाये।

नीरज आज यह बदमाश इस बुरी कदर फंस गया था कि बिना कुछ लिये ही मीना को अपनाने को तैयार हो जाता। लेकिन फिर बाद में मीना का जो हाल होता, उसे देखकर आप की रूह कांप जाती।

दीनदयाल अरे भाई, दहेज-प्रथा का अंत जोर-जबरदस्ती से नहीं बल्कि लोगों को इस दिशा में शिक्षित करने से ही होगा।

मांगेलाल   जाता हूं हुजूर, जो है सो…

[मांगेलाल बाहर जाता है। नीरज और विजय जोर से हंसते हैं। इसी समय अन्दर से दीनदयाल प्रवेश करते हैं।]

दीनदयाल   बड़ी मिट्टी पलीद की तुम लोगों ने उस बेचारी को।

विजय   बेचारा! [व्यंग्य से] एक गरीब स्कूल मास्टर से दहेज के नाम पर पचास हजार रुपये मांगने वाला वह कुत्ता अब तुम्हारे लिये बेचारा हो गया।

दीनदयाल   वह तो ठीक है, पर अब कहीं वह हमारी समाज में बदनामी न करे।

विजय   करता है तो करे! समाज, समाज, समाज! समाज को आपकी फिक्र नहीं पर आपको समाज की फिक्र है। आज आपकी बेटी की शादी नहीं हो रही है तो समाज उस पर उंगली उठाने को तैयार हो जायेगी लेकिन समाज ऐसा कोई उपाय नहीं करेगी जिससे आपकी बेटी की शादी हो जाये।

नीरज   आज यह बदमाश इस बुरी कदर फंस गया था कि बिना कुछ लिये ही मीना को अपनाने को तैयार हो जाता। लेकिन फिर बाद में मीना का जो हाल होता, उसे देखकर आप की रूह कांप जाती।

दीनदयाल   अरे भाई, दहेज-प्रथा का अंत जोर-जबरदस्ती से नहीं बल्कि लोगों को इस दिशा में शिक्षित करने से ही होगा।

[सहसा नीरज जोरों से ठठाकर हंस पड़ता हैं।]

दीनदयाल तुम तो इस तरह हंस रहे हो-मानो मैंने तुम्हें कोई चुटकला सुना दिया हो !

नीरज चुटकुला नहीं तो और क्या है। दहेज को अगर हम अभिशाप मान लें तो इस अभिशाप से सबसे अधिक अभिशप्त हैं शिक्षित वर्ग के सम्पन्न लोग। क्या आज तक आपने कभी ये सुना है कि निचले तबके के किसी व्यक्ति ने दहेज के लिये अपनी बहू को जलाया हो या उस पर अत्याचार किया हो ? दहेज के नाम बहू को जलाने या उसे प्रताड़ित-प्रातंकित कराने के लिये भी बेटी का बाप ही अधिक जिम्मेदार होता है।

दीनदयाल यह तुम क्या कह रहे हो बेटा ! भला कौन बाप चाहेगा कि दहेज की वेदी पर उसकी बेटी की बलि दे दी जाये !

नीरज लेकिन यह रहस्योद्घाटन आज मैं पहली दफा कर रहा हूं कि इसके लिये अप्रत्यक्ष रूप से वही जिम्मेदार होता है।

विजय यार नीरज, बात कुछ मेरी समझ में भी नहीं आई।

नीरज मैं तुम्हें समझाता हूं। हर बाप चाहता है कि उसकी बेटी व्याह के बाद आजीवन सुखी रहे। इसके लिये वह अपनी हैसियत से ज्यादा ही इधर उधर से इन्तजाम कर उसे देता है। लेकिन जिस तरह शेर के मुंह में खून लगने से वह आदमखोर हो जाता

है उसी तरह शादी के बाद लड़के वाले सोचते हैं कि उन्होंने गलती कर दी और लड़की वालों से कम मांग बैठे। अगर वे ज्यादा भी मांग लेते तो लड़की वाले उन्हें दे देते। बस, इसके बाद और मांगों को लेकर लड़की पर प्रताड़ना व अत्याचार का सिलसिला शुरू होता है जो आखिर में बहू की मौत पर ही खत्म होता है।

विजय हां बात कुछ हद तक तो सही है, पर इस समस्या का हल क्या है?

नीरज हल है, लड़के वालों की मांगों को शुरू से ही नकार देना। उनसे साफ कह देना कि उन्हें लड़की व उसके गुणों से लगाव हो तो ब्याह तय करें वरना कोई और घर देखें। उनसे जितना बन पड़ेगा वे तो अपनी बेटी को देंगे ही लेकिन इस बारे में कोई सौदेबाजी वे बरदाश्त नहीं करेंगे।

दीनदयाल लेकिन बेटा, लड़के वाला क्या लड़की वालों की ऐसी शर्तें कभी मानने को तैयार होगा? जब हर लड़के वाला ऐसी शर्तें सुनकर अपना मुंह फेर लेगा तो लड़की तो बिन ब्याही बैठी रह जायेगी।

नीरज यदि सभी लड़की वाले ऐसा संकल्प कर लें तो उल्टे वह लड़का ही कुंआरा बैठा रह जायेगा जो अपनी मांगों के अनुरूप दुल्हन ढूंढ रहा होगा।

विजय तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि इसके लिये सबसे पहले लड़की के अभिभावकों को एकजुट होकर आगे आना होगा।

नीरज — बिलकुल। लड़की का सहयोग तो उन्हें मिलेगा ही। क्योंकि कोई भी बेटी नहीं चाहती कि अपने घर की तबाही व बरबादी पर अपने भावी सुख की आधार-शिला रखे।

दीनदयाल — औरों की तो नहीं पर मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या वक्त पड़ने पर तुम अपने इन आदर्शों को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से उतारोगे?

नीरज — बिलकुल। समय आने पर मैं खुद इसका सबूत दूंगा।

विजय — हां बाबूजी, और मैं दूंगा नीरज का साथ।

दीनदयाल — वह तो ठीक है विजय, पर समस्या तुम्हारे विवाह की नहीं बल्कि बेटी मीना के विवाह की है।

नीरज — वह भी कोई समस्या नहीं, आपने उसे समस्या बना रखी है। आज के बाद मैं आपसे कहता हूं कि अगर कोई मीना को देखने आये तो आप उसे बेशक दिखा दें लेकिन अगर शादी-ब्याह के लेन-देन की वह कोई बात करना चाहे तो आप उससे कोई बात न करें और मुझे बुला लें।

विजय — जब बात यहां तक आ गई है तो मैं भी अपने दिल की बात कह दूं। बाबूजी, सिर्फ लड़के के पसन्द कर लेने से ही मीना की शादी नहीं होने दूंगा। मैं मीना से भी यह जानना चाहूंगा कि उसे लड़का पसन्द है या नहीं।

ीनदयाल चल बाबा, तू भी अपने मन की कर लेना। जो है सो, इस समय मेरे मन की कर लो। पेट में चूहे कबड्डी खेल रहे हैं, चलकर पहले खाना खा लो।

नीरज बात बाबूजी ने पते की कही है, जो है सो...

[तीनों ठहाका मारकर हंसते हैं और अन्दर जाने लगते हैं। दृश्य-परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश गुल होता है]

पुन: प्रकाश होने पर मंच पर विजय और दीनदयाल नज़र आते हैं। दीनदयाल सोफे पर बैठा है जबकि विजय आतुरता से यहां से वहां टहल रहा है।]

विजय [रुककर] मैंने घन्नामल को एक बजे का वक्त दे रखा है। नीरज ने कहा था कि वह ठीक समय पर पहुंच जायेगा। पर यहां बारह बजने को हैं और नीरज का कहीं कोई पता नहीं है।

दीनदयाल सरकारी अफसर ठहरा बेटा, किसी जरूरी काम काज में फंस गया होगा। वैसे जब उसने आने को कहा है तो आयेगा जरूर!

[तभी हाथ में एक ब्रीफ-केस लेकर नीरज तेजी से प्रवेश करता है।]

दीनदयाल बड़ी लम्बी उम्र है बेटे तेरी। अभी हम तेरा जिक्र ही कर रहे थे और तू आ गया।

[नीरज ब्रीफ-केस बगल से रख सोफे की कुर्सी पर बैठता है।]

नीरज क्यों अभिशाप दे रहे हैं बाबूजी!

दीनदयाल अभिशाप ! कैसा अभिशाप ?

नीरज यही, उम्र लम्बी करने का ।

विजय यह अभिशाप है क्या ?

नीरज (मुस्कराकर) और नहीं तो क्या ! आज के जमाने में लम्बी उम्र तक जीने को कहने का सीधा मतलब है लम्बी उम्र तक जियो और भोग-भोग कर मरो ।

(तीनों जोरों से हंस पड़ते हैं ।)

नीरज हां, तो आज पधारने वाले महाशय की मांग क्या है ?

दीनदयाल वही जो हर लड़के वाले की होती है । पचास हजार रुपया नकद, एक स्कूटर, टी. वी., फर्नीचर, घड़ी वगैरह ।

नीरज तो ठीक है । फिर इस महाशय को आज तिगनी का नाच नचायें । हां, लड़के ने मीना को देख और पसन्द तो कर लिया है न ?

विजय बिलकुल । लड़का आठवीं फेल और अपने बाप के साथ पेढ़ी पर बैठता है । गल्ले की आढ़त है उनकी, लेकिन मीना को लड़का बिलकुल पसन्द नहीं है ।

नीरज अपनी मांगें क्या उन्होंने उसी समय रख दी थीं ?

विजय हां, उसी समय । पर हमने कह दिया था कि हमारे पास देने-दुलाने को कुछ है नहीं । हमारे ताऊजी के इकलौते बेटे यानि अपने बड़े चचेरे भाई से मैं कहूंगा । वह जैसा समझेंगे वैसा करेंगे ।

नीरज — यानि आज मुझे तुम्हारे बड़े चचेरे भाई की भूमिका करनी है। कोई बात नहीं।

दीनदयाल — लेकिन नीरज बेटे, इसी तरह हर लड़के वाले को तुम मखौल उड़ा-उड़ाकर भगा दोगे तो मीना की शादी का क्या होगा ?

नीरज — मैंने आपसे क्या कहा था बाबूजी ? मीना की शादी सही ढंग के लड़के से होगी।

विजय — और ऐसे लड़के से जिसे मीना भी पसन्द करे।

(तभी बाहर से घन्नामल की आवाज सुनाई पड़ती है।)

घन्नामल — (आवाज) दीनदयाल जी'''दीनदयाल जी'''

विजय — लो भाई, यह तो आध घंटा पहले ही आ धमका।

नीरज — बाबूजी, आप कुछ देर उसे यहीं बिठाकर इधर-उधर की बात कीजिये। मैं और विजय अन्दर जा रहे हैं। विजय ज्यों ही यहां आये आप अन्दर आ जाइयेगा। इस बीच मैं विजय को सारी योजना समझा दूंगा।

घन्नामल — (थोड़ी ऊंची आवाज) दीनदयाल जी'''घर पर नहीं हो क्या भाई ?

(विजय और नीरज अन्दर जाते हैं दीनदयाल मंच के एक कोने तक।)

दीनदयाल — आइये-आइये घन्नामल जी !

(दीनदयाल के पीछे-पीछे घन्नामल अन्दर आकर सोफे पर बैठता है।)

धन्नामल क्या बात है, आप सो रहे थे क्या ? कई आवाजें लगाई मैंने।

दीनदयाल नहीं, मैं जरा अन्दर के कमरे में था। और सब कुशल-मंगल तो है।

धन्नामल कुशल-मंगल न होता तो मैं यहां आता ही कैसे ! हां, वो आपके भाई साहब के सुपुत्र को आपने बुलवा भेजा था क्या ?

दीनदयाल क्यों नहीं। वह आ गया है और अन्दर स्नान कर रहा है।

(तभी विजय वहां आता है, उसे देख दीनदयाल उठ खड़े होते हैं।)

दीनदयाल आप इनसे बात करें, मैं जरा तब तक अन्दर आराम करता हूं।

[दीनदयाल अन्दर जाते हैं।]

विजय [सामने बैठकर] धन्नामल जी, आपके बेटे ने हमारी बहन को पसन्द कर लिया यह तो आपने उसी दिन बता दिया था। पर आपने यह नहीं पूछा कि हमारी बहन ने आपके बेटे को पसन्द किया या नहीं ?

धन्नामल क्या मतलब ? क्या कभी लड़की की पसन्द-नापसन्द भी पूछी जाती है ?

विजय हां, पहले नहीं पूछी जाती थी, पर अब नया जमाना है। दोनों की पसन्द-नापसन्द जानना जरूरी है। क्योंकि इसमें अगर जरा भी गड़बड़ी हुई तो गृहस्थी की गाड़ी डगमगा जाती है। आपने सुना नहीं, पति पत्नी गृहस्थी की गाड़ी के दो पहिये हैं। गाड़ी ठीक चलने के लिये दोनों पहियों का ठीक होना जरूरी है।

धन्नामल यह बात तुमने उसी दिन क्यों नहीं कही ?

विजय क्योंकि आपके जाने के बाद ही हमारी बहन ने अपना फैसला हमें बताया।...

धन्नामल कि उसे लड़का पसन्द नहीं है ?

विजय जी हां।

धन्नामल यानि आज मेरा यहां आना बेकार रहा ?

[तभी अन्दर से नीरज प्रवेश करता है।]

नीरज अरे भाई, क्यों अपने ऊल-जलूल सवालों से नाहक धन्नामल जी को परेशान कर रहे हो। लड़किय

तो नादान होती हैं, उनमें समझ ही कितनी होती है, अच्छे-बुरे के पहचान की।

धन्नामल यह बात आपने कही लाख रुपये की।

विजय यही हैं हमारे ताऊ के बेटे यानि मेरे चचेरे बड़े भाई नीरज !

नीरज (सामने बैठकर) मुझे आपकी मांगों के बारे में मालूम पड़ चुका है।

धन्नामल फिर आपने क्या फैसला किया ?

नीरज फैसला क्या करना है ! हमारी एक ही तो बहन है। उसकी शादी में भी अगर कंजूसी बरती तो लानत है हम भाइयों पर। आप तो जो मांगेंगे मिलेगा। यह लीजिये शगुन के सवा रुपये और बात पक्की समझिये !

(जेब से सवा रुपये निकालकर जबरन धन्नामल के हाथ रख देता है।)

न्नामल तो शादी कब को रखने का इरादा है ?

ीरज शुभस्य-शीघ्रम ! जितनी जल्द हो सके। बल्कि सप्ताह भर के अन्दर रख लीजिये। क्योंकि इससे ज्यादा समय मैं यहां न लगा सकूंगा।

नामल इतनी जल्दी आप सारी तैयारियां कर लेंगे ?

रज मैं तो कर लूंगा, आप अपनी सोचिये। (रुककर) हां, एक बात के लिये मैं आपसे माफी चाहूंगा।

ामल किस बात के लिये ?

नीरज कायदे के अनुसार मुझे आपको नगद पचास हजार की रकम में से आधी इसी समय दे देनी थी ताकि आप अपना खर्च चलाते। फिर बारात वगैरह लाने का भी त खर्च आपको करना पड़ेगा। पर वह रकम अभी और इसी वक्त मैं आपको नहीं दे पाऊंगा।

धन्नामल लेकिन आखिर ऐसे कैसे हो सकेगा ? मेरा मतलब है···

नीरज मेरी मजबूरी समझिये। पिताजी का देहान्त अभी पन्द्रह दिनों पहले ही हुआ है। अभी उनकी जायदाद पर मुझे कानूनन हक नहीं मिला है। चार-पांच दिनों में वह मिल जायेगा। आप ऐसा कीजिये सारा खर्च अभी अपनी ओर से कीजिये।

धन्नामल सारा खर्च अपनी ओर से करूं ?

नीरज हां, आपके बेटे की बरात द्वार पर लगी नहीं कि अगवानी से पहले आपको सारी रकम मिल जायेगी बल्कि आप नगद रकम पचास हजार की जगह साठ हजार रुपये कर लीजिये।

धन्नामल ठीक है ! बरात कितनी बड़ी लानी होगी ?

नीरज जितनी बड़ी आप ला सकें। बरात जितनी बड़ी होगी, हमारी आपकी शान बढ़ेगी, शादी की रौनक बढ़ेगी। हां, आपको क्या क्या देना होगा उसकी एक फेहरिस्त बना दीजिये ताकि मैं उसका इन्तजाम

कर सकूं और ऐन मौके पर कोई चीज रह न जाये ।

(नीरज के इशारे पर विजय फौरन कलम कागज निकालकर रख देता है । घन्नामल कलम हाथ में ले कागज पर लिखने को झुकता है कि दृश्य-परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश गुल होता है ।)

पुनः प्रकाश होने पर उसी सजी हुई बैठक में बेहतरीन कपड़े पहने नीरज, विजय और दीनदयाल खड़े दिखाई देते हैं ।)

दीनदयाल तुम लोगों ने मुझे चकरचिन्नी बना दिया है । समझ में नहीं आता क्या कर रहे हो । मण्डप लगा लिया, बारातियों के लिये खाना बनवा लिया, मेहमान इकठ्ठा कर लिये महज एक भले आदमी का मखौल उड़ाने के लिये ।

विजय नहीं, बल्कि एक दहेज लोभी को सबक सिखाने के लिये ।

दीनदयाल और हजारों रुपये फूंक डाले इसमें !

विजय आपसे तो नहीं लिये न, पर लगे तो किसी न किसी के !

(तभी सहसा शोर के साथ पार्श्व से बैंड बजने की आवाज आती है ।)

दीनदयाल लगता है, बरात आ गई है । भगवान, मैं उस घन्नामल को मुंह कैसे दिखाऊंगा । वह सोचेगा

यह सारा मखौल मेरे इशारे पर हुआ है। मुझे तो अन्दर जाकर किसी कोने में मुंह छिपाकर पड़े रहना चाहिये।

[दीनदयाल तेजी से अन्दर जाते हैं।]

नीरज योजनानुसार सारा सामान तैयार है न?

विजय बिल्कुल। अब घन्नामल का इन्तजार है।

[तभी बढ़िया कपड़े पहने घन्नामल बिफरता सा अन्दर आता है।]

घन्नामल क्यों नीरज बाबू, यह शादी है या मजाक? न हमें स्टेशन पर कोई लेने गया, न यहां अगवानी के लिये कोई...

नीरज नाराज होने की बात नहीं घन्नामलजी, मैंने आपसे पहले ही कहा था कि आप की मांग पूरी करने के बाद ही सारी रस्म अदा की जायेगी। सो अपनी रकम व सारा सामान सम्भाल लीजिये फिर हम द्वार-चार की रस्म अदा करते हैं।

(विजय से) विजय, सारा सामान अन्दर से ले आओ।

(विजय अन्दर जाता है और थोड़ी देर में एक ट्रे लेकर आता है जिसमें टिन के बने स्कूटर, कामधारी, टी.वी. और ... रखे हुए हैं। पास ही है नोटों की एक ...)

नीरज	देख लीजिये घन्नामल जी, सामान तो पूरा है न। यह रहा स्कूटर, यह रही अालमारी, यह रहा टी. वी. और ये रहे फर्नीचर्स। और ये आपके साठ हजार रुपये।

घन्नामल	(बिफरकर) ये क्या मजाक है। ये खिलौने और ये चूरन के नोट।

नीरज	आपके कहे मुताबिक ही सारा सामान है। आपने सिर्फ स्कूटर कहा था न कि पेट्रोल से सड़क पर चलने वाला स्कूटर, आपने सिर्फ आलमारी कही थी न कि सामान आदि रखने की आलमारी। वैसे ही आपने सिर्फ रुपये कहे थे न कि खरीद-फरोख्त में आने वाले सरकारी रुपये!

धन्नामल मेरे हजारों रुपये फुंकवाकर तुम लोग मेरा मजाक उड़ा रहे हो ! मैं पुलिस बुलवाकर एक-एक को मुश्कें कसवा दूंगा ।

नीरज अपने होश की दवा करो धन्नामल ! पुलिस तो हमने बुलवाई है, क्योंकि कानूनन दहेज लेना और देना जुर्म है और तुमने दहेज की मांग की थी इसके सबूत में हमारे पास तुम्हारे हाथ की बनाई फेहरिस्त है । चुपचाप यहां से रफूचक्कर हो जाओ नहीं तो तुम, तुम्हारा दूल्हा बना बेटा और सारे बराती हवालात की हवा खाते नजर आओगे ।

धन्नामल (घबराकर) पुलिस ! अरे बाप रे !

(धन्नामल घबराकर भागता है । विजय और नीरज जोरों से हंसते हैं । तभी अन्दर से दीनदयाल प्रवेश करते हैं ।)

दीनदयाल अपनी जीत की खुशी में खुश होकर हंस रहे हो, पर इसका अंजाम भी सोचा है । इसके बेटे का तो कुछ न बिगड़ेगा पर कल को सब कहेंगे कि मेरे घर के दरवाजे से मेरी बेटी की बरात लौट गई थी । कितनी बदनामी होगी । किस-किसको जवाब दूंगा, क्या मुंह दिखाऊंगा मैं लोगों को ।

विजय मुंह तो आप यही दिखायेंगे और जवाब आपको देना नहीं होगा ।

दीनदयाल क्या मतलब ?

नीरज मतलब ये कि मोना की शादी इसी मण्डप पर थोड़ी देर बाद होगी ।

दीनदयाल	किस लड़के से ? कौन है लड़का, कैसा है ?
विजय	लड़का जवान और खूबसूरत है, खाते-पीते घर का है और अपना देखा-भाला है। मजे की बात यह है कि मीना भी उससे शादी करने को तैयार है।
दीनदयाल	पर लड़का कौन है ? मैं शादी से पहले उसे देखना और उससे मिलना चाहता हूँ।
विजय	मैं अभी उसे आपके पास लेकर आया। आओ नीरज !

(विजय और नीरज जाते हैं, दीनदयाल आतुरता से मंच पर टहलते हैं। कुछ पलों बाद सर पर सेहरे का साफा बांधे नीरज विजय के साथ प्रवेश करता है।)

विजय लीजिये बाबूजी, मिलिये अपने होने वाले दामाद से मिस्टर नीरज कुमार।

दीनदयाल (चकित सा) नीरज…तुम…तुम बेटे…कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूं।

नीरज (दीनदयाल के पैर छूते हुये) स्वप्न नहीं हकीकत है बाबूजी। अब आप मुझे आशीर्वाद दीजिये।

(दीनदयाल कंधों से पकड़कर नीरज को अपने गले से लगा लेता है।)

दीनदयाल नीरज बेटा, तुम सचमुच महान् हो…तुमने मुझे उबार लिया…

नीरज (अलग होकर) आप कैसी बात करते हैं बाबूजी! सिर्फ आदर्शों को बात करने ही से समाज का कल्याण नही होता। इन आदर्शों को अपने जीवन में भी हमें उतारना होगा। मैंने भी यही तो किया है।

दीनदयाल बेटा, मगर तुम्हारी मिसाल को आज के हर नौजवान अपने जीवन में उतार लें तो जाने कितनी ही युवतियों का उद्धार हो जाये, कितने ही घर तबाह होने से बच जायें।

विजय अरे भाई, अब मण्डप में चलो, लग्न का मुहूर्त हो रहा है।

दीनदयाल हां-हां, चलो।

(नीरज को कंधे से पकड़े दीनदयाल जाने लगता है। उनके पीछे विजय है। सहसा विजय को कुछ याद आता है। वह भागकर मंच के सामने की ओर आता है और बैठे हुये दर्शकों से मुखातिब हो कहता है।)

विजय — अरे, आप लोग बैठे क्यों हैं? आप लोग शादी में शरीक नहीं होंगे क्या? तो चलिये, उठिये।

[इसके साथ ही परदा धीरे-धीरे बंद होता है।]

[परदा एक साधारण परिवार के मकान की बैठक में खुलता है ।]

बैठक बड़े ढंग से सजी हुई है, इस बैठक को देखकर कोई भी यह सहज तौर पर कह सकता है कि यह किसी ऊँचे दरजे के अफसर या सेठ साहुकार की बैठक है । लेकिन बात ऐसी नहीं है । बात यह है कि यह बैठक है तो एक साधारण परिवार की ही, लेकिन चूंकि इस परिवार के सभी लोग अच्छी तबियत वाले हैं, इसलिये उनके जीवन के रंग में एक अच्छाई है । बैठक में एक कीमती सोफा सेट, रंगीन टी. वी., कूलर जैसी हर वह चीज मौजूद है, जो आम तौर से एक अच्छी बैठक में होनी चाहिये । दीवार पर चित्रकारी का एक अच्छा नमूना, एक दीवार पर कपड़े लटकाने का हैंडिंग और एक कलेंडर, इस तरह से टंगा हुआ है कि दीवार के तीनों कौने उनसे ढके दिखाई देते हैं । सोफासेट के बीच में शीशे से ढकी हुई एक अंडाकार मेज है, जिस पर दो तीन अंग्रेजी हिन्दी के साहित्यिक पत्र बेढंग से पड़े हुए हैं । मेज के निचले हिस्से में भी कुछ ऐसे ही पत्र रखे हुए हैं । सोफे की एक कुर्सी पर एक अखबार भी पड़ा हुआ है ।

परदा खुलने के पलभर बाद बाहर से अन्दर वाले दरवाजे पर दो टुकड़ों वाले परदे को हटाकर क्रमशः अजय और फजल प्रवेश करते हैं । बैठक के दोनों ओर दो दरवाजे हैं । एक बाहर से अन्दर आने के लिये और दूसरा घर में अंदर के कमरों में जाने के लिये । दोनों पर दो टुकड़ों वाले परदे पड़े हुए हैं ।

अजय और फजल दोनों अठारह वर्ष के नये विचारों के कालेज के प्रथम वर्ष के पढने वाले छात्र हैं। कद साधारण, तन्दुरुस्ती अच्छी और दीखने में अच्छा पहनावा, बालों की सजावट एकदम आधुनिक। ऐसा कहना चाहिये कि इक्कीसवीं सदी की ओर जाती हुई।]

फजल — कालेज में राष्ट्रीय कार्यक्रम का संयोजक तुमको बनाया गया है। कुछ सोचा, तुम्हें क्या करना है?

अजय — [हंसकर] करना क्या है, राष्ट्रीय एकता वाले दो चार गीत गवा देंगे, और ऐसा ही कोई नाटक करवा देंगे।

(दोनों आकर सोफे पर बैठ जाते हैं।)

फजल — बस, इसी में तीन घंटे का कार्यक्रम पूरा हो जायगा ?

अजय — हां ! शायद जितना मैं कह रहा हूं, उसके लिये भी समय नहीं मिल सके। मुख्य अतिथि बनकर जो मंत्री आयेगा न, कम से कम वह दो घंटे का भाषण तो जरूर बोलेगा। भाषण में बार-बार यही बताने की कोशिश करेगा कि वह जनता का कितना हिमायती है। जनता का कितना भला चाहने वाला है।

फजल — जबकि असलियत कुछ और है। देश के नेता और मंत्री मुल्क के शुभचिंतक भले ही न हों, प्रधान के चमचे तो जरूर होने चाहियें।

अजय — जिस रेडियो और टी. वी. को आप समाजवाद का स्वतन्त्र प्रचारक कह रहे हैं, वह भी प्रधान की चमचागिरी से बाज नहीं आता, तो फिर ये नेता और मंत्री यदि अपने खुद के फायदे के लिये ऐसा कर रहे हैं, तो इसमें क्या दोष है ?

फजल — खुद का फायदा ?

अजय — और नहीं तो क्या। इससे क्या देश और जनता का कुछ भला हो रहा है !

फजल — कभी कभी मैं एक बात सोचता हूं, क्या कौमी एकता के नारों, भाषणों और कार्यक्रमों से ही देश एक हो जायगा ?

अजय — एक जमाने में न ऐसे नारे लगते थे, न भाषण दिये जाते थे और न कार्यक्रम बनाये जाते थे, फिर भी हम एक थे।

फजल फिर अचानक ऐसा क्या हुआ कि हम बिखर गये?

अजय बिखर नहीं गये बल्कि बिखेर दिये गये।

फजल क्या मतलब ?

अजय मतलब समझने के लिये तुम्हें हमारे देश के पिछले इतिहास को उठाकर देखना होगा। हमारे स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास।

फजल स्वाधीनता का संग्राम तो सभी कौमों ने कन्धे से कन्धा भिडा कर लडा था।

अजय तब कहां था जातीय भेदभाव हममें, तब कहां था हममें अलगाव ? फिर हमें आजादी मिली। कई राजनैतिक पार्टियों का उदय हुआ। उन्होंने ही अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिये हमें बिखेरना शुरू कर दिया। भाई से भाई को लड़ा दिया।

फजल और लड़ने वालों से यह कभी नहीं कहा कि लड़ाई बन्द कर दो, बल्कि इस लड़ाई में घायलों को मरहम पट्टी करके कहा कि जाकर फिर लड़ो।

अजय बिल्कुल सही। इन्होंने ही कौमो को बिखेर कर इतना अलग-अलग कर दिया कि आज उन्हें एक करने के लिये, मिलाने के लिये नारे, भाषणों और प्रोग्रामों की जरूरत पड़ रही है।

फजल मैं यही पूछ रहा था कि इन नारों, भाषणों और प्रोग्रामों से क्या कौमें एक हो जायेंगी ?

अजय यह कल्पना ही हास्यास्पद है। केवल बेकार। अब तुम हिन्दुओं को ही ले लो वे चार वर्गों में बटे हुए है, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। क्या इन

चारों में एकता है ? क्या आज भी वर्ण संघर्ष के समाचार हमें पढने और सुनने को नहीं मिलते ?

फजल मुसलमान भी शिया और सुन्नी में बंटे हुए हैं। उसमें भी चार भेद हैं–शेख, सैयद, मुगल, पठान।

अजय फजल ! राष्ट्रीय एकता की बात तो दूर, एक कौम, एक सम्प्रदाय में भी आज एकता नहीं है। मैंने अभी हिन्दुओं के वर्ग बताये। तुम्हें यह भी बता दूं कि इनमें से एक वर्ग तक में एकता नहीं है।

फजल नही अजय, ऐसा तो नहीं हो सकता। ब्राह्मण तो ब्राह्मण ही रहेगा न ?

अजय तुम नहीं समझते फजल, ऐसा नहीं है। ब्राह्मणों में अनेक भेद हैं। उपवर्ग, कौंजेय, गौड, सारस्वत सरयूपारीय, कान्यकुब्ज आदि। सबकी अलग-अलग संस्थायें हैं, संघ हैं। हर संघ अपने को श्रेष्ठ और दूसरों को खराब बताता है। तब ऐसी स्थिति में एकता कैसे हो सकती है ?

फजल क्या हिन्दुओं के दूसरे वर्गों में भी ऐसा ही है ?

अजय बिल्कुल ! दूसरे वर्गों में भी ऐसा ही है।

फजल पर सरकार तो हरिजनों के उत्थान के लिये बहुत कोशिश कर रही है। उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए अभियान चला रही है।

अजय समाज में हरिजनों को बराबरी का दरजा भले ही मिल जावे, उनका उत्थान भले ही हो जावे, परन्तु वर्ग संघर्ष और जातीय भेदभाव कभी समाप्त नहीं होगा।

फजल एक बात मैं अक्सर सोचता हूं अजय ! एक ओर तो सरकार हरिजनों को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने की कोशिश कर रही है, दूसरी ओर इस कोशिश में सबसे ज्यादा सरकार ही उन्हें उनके हरिजन होने का अहसास करा रही है।

अजय अहसास कैसे ?

फजल नौकरी और हर सरकारी कार्यक्रमों में छूट और रियायत देकर, उन्हें हर तरह की सुख सुविधा मुहैया कराकर। मगर वे समाज के दूसरे वर्गों के बराबर हैं तो छूट और रियायतें वे क्यों चाहते हैं। वे स्वयं बराबरी की योग्यता दिखायें। जो भी किसी को बताता है कि उसे नौकरी या अमुक योजना में छूट मिली है, लोग उसे हरिजन मानकर हेय दृष्टि से देखते हैं।

अजय तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है फजल ! इसकी बजाय यह छूट गरीब वर्ग के लोगों को दी जानी चाहिये। भले ही वे किसी भी वर्ग, सम्प्रदाय या जाति के क्यों न हों ?

फजल तुमने अभी कहा था अजय ! कि कौमी एकता के कार्यक्रमों से किसी को कोई लाभ नहीं होता, पर मैं कहता हूं कि होता है ।

अजय किसे फायदा होता है ?

फजल उन संस्थाओं को, जो कौमी एकता के प्रचार प्रसार के नाम पर सरकार से अच्छी खासी रकम मदद के नाम पर झटक लेती है, और फिर उसका उपयोग अपने मौज मजे के लिये करती हैं ।

अजय (हंसकर) हां, यह बात तो है । अब मुझे ही देख

लो। कॉलेज को कौमी एकता का संयोजक क्या बना, प्राचार्य ने तुरन्त ही दो हजार रुपये कार्यक्रम की तैयारी के लिए निकाल कर दे दिये।

फज़ल — और वैसे कोई गरीब छात्र समय पर अपनी फीस जमा नहीं कर सकेगा तो उसे परीक्षा में बैठने भी नहीं देंगे।

[इसी समय मोहन हाथ में ट्रे लिये प्रवेश करता है। ट्रे में दो कप चाय है। मोहन सोलह वर्ष का साधारण कद व स्वस्थ, चेहरा आकर्षक, श्याम रंग का, सर पर गांठ बंधी हुई चोटी, हालांकि बाल आधुनिक ढंग से संवारे हुए]

मोहन — (होकरों की नकल करता हुआ) 'चाय गरम'।

अजय — वाह बे मोहन! तू तो बड़ा समझदार है।

मोहन — समझदार तो मैं बहुत हूं, पर किस्मत में तो आपकी सेवा करना ही लिखा है। तो समझदारी क्या करेगी, बाबू?

(ट्रे सोफे के सामने की मेज पर रख देता है)

अजय — (चिढ़कर) मैंने तुझसे कितनी बार कहा कि मुझे बाबू मत कहा कर, अजय भैया कहा कर।

मोहन — दर असल बात यह है बाब……ओह अफसोस… अजय भैया कि हमारे मुल्क में जो घर के मालिक होते हैं, उन्हें बाबू हो कहा जाता है और जो छोटे मालिक होते हैं, उन्हें बबुआ। इसलिये हमारी ऐसी आदत पड़ गई है।

फजल — और मालकिन और छोटी मालकिन हुई तो?

मोहन — मालकिन हुई तो बबुआइन और छोटी मालकिन हुई तो बबनी।

अजय (फजल से) यह सीमा को भी बवनी कहता है। मां इसे अपने मायके के गांव से ले आई है। हालांकि यह गंवार नहीं, पढ़ा लिखा है।

फजल अच्छा कहां तक पढ़े हो मोहन ?

मोहन मैं तो बी. ए., एम. ए. करके अफसर भी बन जाता अब तक। पर भाग्य में नहीं लिखा जा। दुश्मनाई ने मेरी जिन्दगी चौपट कर दी।

फजल दुश्मनाई ! कैसी दुश्मनाई ! किससे दुश्मनाई !

मोहन अरे, ये हाईस्कूल बोर्ड वाले···जाने किस जन्म की दुश्मनी निकाल रहे हैं ? तीन साल तक हाईस्कूल में अंग्रेजी में लुढ़का दिया।

अजय तो इसमें दुश्मनी की क्या बात हो गई ?

मोहन कैसे नहीं बबुआ ? (दांत से जीभ चबाकर) माने अजय भैया ! हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है न ! तो हिन्दी में तो हम पास हैं। फिर पास करो।

फजल (कृत्रिम गम्भीरता से) हां, बात तो ठीक है।

मोहन बिल्कुल मार्के की है, फजल बाबू। अब देखा, अंग्रेजों को फिरंगी कहकर लोगों ने हिन्दुस्तान से निकाला तो क्रांतिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी और जाने क्या क्या कहलाये। हम फिरंगियों की भाषा को यहां से निकालना चाहते हैं, तो हमें कोई क्रान्तिकारी नहीं कह रहा, उल्टे फेल कर रहे हैं।

अजय भारत से अंग्रेजी निकालना इतना आसान नहीं है, मोहन !

मोहन क्यों भैया, क्या अंग्रेज लोग हमारी सरकार को अपनी भाषा चलाने के लिये कुछ कमीशन दे रहे हैं?

फजल अरे भाई ! अगर इस देश से अंग्रेजी चली गई तो और कौन सी भाषा बोलकर लोग अपना रौब झाड़ेंगे ? अपना बड़प्पन दिखायेंगे ?

मोहन बात बिल्कुल सही है साहब ! हमारे देश के नेता, मंत्री सब अपने भाषण में कहते हैं–हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करो और खुद अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने के लिये भेजते हैं।

फजल हां, और हिन्दी उर्दू, स्कूलों-मदरसों को गंवारों का स्कूल कहते हैं। वहां कायदे और सभ्यता नहीं सिखाये जाते।

मोहन और एक बात बतायें अजय भैया ! हमारे टी. वी. में भी जब देखो तब अंग्रेजी प्रोग्राम हो जाते हैं।

विदेशों को भारी रकम दे देकर टी. वी. के लिये विदेशी प्रोग्राम खरीदे जाते हैं। क्या अपने देश में कलाकार और प्रोग्रामों की कमी है।

अजय मोहन ! अब जाकर अपना काम कर। मम्मी पापा के लौटने का समय हो गया। आते ही नाश्ता मांगेंगे।

मोहन हमारा काम बिल्कुल तैयार है, अजय भैया ! हम तो यह सोचकर रुक गये कि आप कप खाली दो तो हम लेते जावें।

(अजय और फजल चाय पीकर खाली कप ट्रे में रख देते हैं

फजल लो भाई ! हो गये कप खाली।

(मोहन ट्रे उठाकर अन्दर चला जाता है। तभी टेले फोन की घण्टी बजने लगती है। अजय आगे बढ़ कर रिसी उठाकर कान से लगाता है)

अजय हलो'''हां मम्मी, मैं अजय'''क्या ? सीमा फोन आपके पास आया था ?'''हां हां, वह रा भर अपनी सहेली के यहाँ ही रुक जायगी।'''प वह तो सहेली की जन्म दिन की पार्टी में गयी थ न ?'''एँ, क्या कहा ? आप भी उसी के पास ज रही हैं ?'''ठीक है मम्मी'''नहीं, अभी पापा लौ नहीं हैं'''जो समस्या हो'''ओ. के.।

(रिसीवर रखकर वापिस सोफे पर आकर बैठ जाता है)

फजल किसका फोन था ?

अजय मम्मी का था। उन्होंने बताया कि वे रात को घर नहीं आयेंगी। सीमा के पास ही चली गई हैं। सीमा अपनी सहेली के जन्म दिन में गयी है।

फजल — एक बात तो है यार अजय, तुम्हारा नौकर है बड़ा समझदार।

अजय — दर असल इसका परिवार मम्मी के मायके के पड़ोस में ही रहता है। अभी मम्मी मायके गयी थी तो इसका बाप मम्मी के पीछे पड़ गया कि मेम साहब इसे अपने साथ ले जाओ। पढ़ता लिखता कुछ है नहीं, यहां रहेगा तो बिगड़ जायेगा।

फजल — लेकिन बात उसने दोनों सही कहीं। राष्ट्रभाषा वाली और टी. वी. वाली।

अजय — फजल ! तुमने वो मिसाल सुनी है ?

फजल — कौन सी ?

अजय — एक नेता ने मद्य निषेध पर इतना लम्बा और जोरदार भाषण दिया कि उसका गला खुश्क हो गया। भाषण समाप्त होते ही उसे अपना गला तर करने के लिये पास के बार का रुख लेना पड़ा।

फजल — (हंसकर) तो हिन्दी से इसका तुक ?

अजय — हिन्दी के साथ भी इनका यही सलूक है। भाषण देंगे, वक्तव्य जारी करेंगे कि अपने काम काज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करो और अपनी औलादों को पढ़ायेंगे अंग्रेजी माध्यम के कालेज स्कूलों में।

फजल — बिना अंग्रेजी के तो सरकार, अर्ध सरकार और बैंक भी तो नौकरी नहीं देते। भारत के बड़े बड़े उद्योगों को देख लो। भिलाई स्टील प्लांट, भारत एल्यूमिनियम, भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स आदि, वहां दक्षिण भारतीय या बंगाली अफसर ही मिलेंगे, क्योंकि वे अंग्रेजी जानते हैं।

अजय हालांकि ये सारे उद्योग हिन्दी भाषी प्रदेशों में ही हैं।

फजल नियमानुसार उद्योग जिस प्रान्त या प्रदेश में हों, वहां के ही लोगों को नौकरियों में प्राथमिकता मिलनी चाहिये।

अजय उन्हें नौकरी जरूर दी जाती है, लेकिन तृतीय या चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में।

फजल इसमें एक खतरा और है।

अजय वह क्या?

फजल कल को मानलो कि इन प्रदेशों के लोगों में यह सनक जाग उठी कि बाहरी प्रदेशों के लोग उनका हक मारकर उन पर शासन कर रहे हैं, अतः उन्हें निकाल देना चाहिये तो स्थिति विस्फोटक भी हो सकती है।

अजय हां, कुछ समय पहले दक्षिण भारतीयों के खिलाफ बम्बई में शिवसेना ने ऐसा ही किया था। (कुछ रुक कर) वैसे सरकार अगर चाहे तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के कई उपाय हैं। इससे हिन्दी कारगर ढंग से स्थापित हो जावेगी और आज जो लोग हिन्दी का विरोध कर रहे हैं, वे स्वयं हिन्दी को स्वेच्छा से अपना लेंगे।

फजल अच्छा! ऐसा कोई उपाय है क्या?

अजय कई हैं एक तो मैं ही बतला सकता हूँ।

फजल अच्छा! बताओ यार बतलाओ।

अजय सरकार ऐसा कानून बना दे कि जो हिन्दी लिखना पढना नहीं जानता वह किसी भी तरह का चुनाव लड़ने के योग्य नहीं है।

फजल फिर सरकार ऐसा कानून बनाती क्यों नहीं ?

अजय सरकार हिन्दी विरोधियों को जो, मुख्यतः दक्षिण भारतीय हैं, नाराज करना नहीं चाहती। उन्हें अपने वोटों की चिन्ता है।

फजल यानी, वोट देश से कीमती हैं।

अजय आज यही समझ लो, हां (उठकर खड़ा हो जाता है) मुझे एक बात याद आती है फजल! एक विदेशी ने एक बार मुझसे कहा था।

फजल क्या कहा था ? (अजय घूमा और जाकर सोफे के पीछे खड़ा हो जाता है।)

फजल सुना है, पहले स्कूलों में एक और गीत गाया जाता था–विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।

अजय सही मायने में तो यही राष्ट्र गीत था। पर इसके रचयिता को चूंकि नोबल पुरस्कार जैसा कोई पुरस्कार नहीं मिला था, अतः सरकार इसे राष्ट्रगीत का सम्मान देकर अपनी तोहीन कराना नहीं चाहती थी। इसके रचयिता की कुछ वर्ष पहले ही कानपुर में बड़ी गुमनामी मौत हुई।

फजल निश्चय ही अजय! मुझे आप पर गर्व है, आपका दिमाग बहुत तेज है।

श्यामलाल (बाहरी दरवाजे से अन्दर आते हुए) कौन किसको लपेट रहा है, भाई! (श्यामलाल परदा उठाकर अन्दर आ जाता है) औसत कद, अच्छा स्वास्थ्य, अवस्था 45 से 50 के मध्य। सर बीच में गंजा।

श्याम	हाँ बात तो तुम्हारी ठीक है ।

(मोहन का प्रवेश)

मोहन	आपके लिये नाश्ता और चाय लाऊं, बाबूजी ?

श्याम	भाई, समारोह में तो काफी कुछ खा लिया है । नाश्ता तो रहने दे । एक कप कॉफी बनाकर ले आ ।

अजय	और सुन, दो कप हमारे लिये भी बना लाना ।

श्याम	हां मेरी भी कॉफी यहीं ले आ । तब तक मैं हाथ मुंह धोकर और कपड़े बदलकर यही आ जाता हूं । (फजल से) बेटे फजल, तुम जाना मत । मेरे पास तुम्हारे लिए और भी समाचार हैं ।

(श्यामलाल अन्दर जाता है, और उसके पीछे मोहन भी)

फजल	यार अजय! एक बात का लोहा तो मैंने मानता हूं ।

अजय	किस बात का ?

फजल	चाचा हैं बड़े हंस मुख और खुश मिजाज । मैं आज तक कभी इन्हें मायूस नहीं पाया । माथे पर कभी कोई शिकन नहीं देखी ।

अजय	हां फजल ! इस मामले में मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं । जानते हो, पापा हमसे क्या कहा करते हैं ?

फजल	क्या कहते हैं ?

अजय	वे कहते हैं, जितना हंस सको, हंसो । हंसने से उम्र बढ़ती है । फिर सुनाते हैं, सब के साथ हंसते रहो और एकांत में सोचो विचारो । यही बुढ़ापे में तुम्हारे काम आयगा ।

फजल	सत्युत्तम! किसकी कविता है ?

अजय	उमर खय्याम की ।

फजल — उर्दू में भी ऐसा ही एक शेर है—'जिन्दगी जिन्दा-दिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं ?'

अजय — मैं एक और बात सोच रहा हूं, फजल !

फजल — वह क्या ?

अजय — पापा ने अभी तुमसे कहा है कि मेरे पास तुम्हारे लिये एक और खुशखबरी है। वह खुशखबरी क्या हो सकती है ?

फजल — अरे ! तो इसमें सोचने को कौन सी बात है ? अभी दो मिनट में चाचा आये जाते हैं। मालूम पड़ जायगा। और तुम दो मिनट तक सब्र रक्खो, ऐसे अधीर मत बनो।

(तभी मोहन ट्रे में कॉफी की तीन प्यालियां लेकर आ जाता है और मेज पर रख देता है। फिर वह मुड कर अन्दर के दरवाजे की ओर देखता है।)

मोहन — बड़े बाबु कपड़े बदल कर अभो तक नहीं आये ?

अजय — आये जाते हैं। उन्हें क्या मालूम था कि तू इतनी जल्दी कॉफी बनाकर ले आवेगा।

फजल — तेरा काम तो बड़ा फटाफट है यार ! तुझे तो सरकार के योजना विभाग में होना चाहिए था। सब योजनायें फटाफट पूरी हो जातीं।

अजय — योजनायें तो फटाफट पूरी नही होतीं, अलबत्ता इसकी नौकरी जरूर चली जाती।

मोहन — सो क्यों, बबुआ ?

अजय — (चिढकर) फिर बबुआ ?

मोहन — (दांत से जीभ काटकर) यानि, अजय भैया !

अजय   इसलिये कि सरकार को फटाफट योजनायें पूरी करने वाले ईमानदार अफसरों की जरूरत नहीं। सरकारी नौकरी में निष्ठा से काम करने वाले ईमानदार लोगों की बड़ी दुर्दशा होती है। न तो उनसे सरकार खुश रहती है, और न सरकार के चाटुकार उद्योगपति और ठेकेदार।

(पजामे के ऊपर लम्बा सा गाउन पहने और गाउन को बन्द करने का नाड़ा बांधते हुए श्यामलाल जी अन्दर के कमरे में आते हैं)।

मोहन   आइये बड़े बाबू, कॉफी ठंडी हो रही है

श्याम   ठंडी हो रही है तो हो जाने दो। थोड़ी ठंडी ही पी लेंगे। तुझे गर्म करने को नहीं कहेंगे।

(श्याम लाल आकर सोफे की एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं और काफी की एक प्याली उठा लेते हैं। अजय और पंकज भी एक एक प्याली उठा लेते हैं।)

श्याम   (चुस्की लेकर) आखिर मंत्रिमण्डल में फेर बदल हो ही गया।

अजय   मंत्रिमण्डल में बीच बीच में फेर बदल होना जरूरी है। इससे प्रधानमन्त्री के दूरदर्शी और विवेकी होने का पता लगता है।

श्याम   अच्छा ! वह कैसे भाई ! (मोहन सोफे के पीछे हाथ बांधे हुए खड़ा होता है)।

अजय   ऐसे कि बीच बीच में मंत्रिमण्डल के फेर-बदल से प्रधानमन्त्री यह दरशाते रहते हैं कि कोई मन्त्री सीनियर नहीं होने पाये।

फजल — उर्दू में भी ऐसा ही एक शेर है—'जिन्दगी ज़िन्दा दिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक करते हैं?'

अजय — मैं एक और बात सोच रहा हूं, फजल!

फजल — वह क्या?

अजय — पापा ने अभी तुमसे कहा है कि मेरे पास तु लिये एक और खुशखबरी है। वह खुशखबरी हो सकती है?

फजल — अरे! तो इसमें सोचने को कौन सी बात है? दो मिनट में चाचा आये जाते हैं। मालूम जायगा। और तुम दो मिनट तक सब्र रक्खो, अधीर मत बनो।

(तभी मोहन ट्रे में कॉफी की तीन प्यालियां लेकर जाता है और मेज पर रख देता है। फिर वह मुड़ कर अन्द के दरवाजे की ओर देखता है।)

मोहन — बड़े बाबू कपड़े बदल कर अभी तक नहीं आये?

अजय — आये जाते हैं। उन्हें क्या मालूम था कि तू इत जल्दी कॉफी बनाकर ले आवेगा।

फजल — तेरा काम तो बड़ा फटाफट है यार! तुझे त सरकार के योजना विभाग में होना चाहिए था सब योजनायें फटाफट पूरी हो जातीं।

अजय — योजनायें तो फटाफट पूरी नहीं होतीं, अलबत्त इसकी नौकरी जरूर चली जाती।

मोहन — सो क्यों, बबुआ?

अजय — (चिढ़कर) फिर बबुआ?

मोहन — (दांत से जीभ काटकर) यानि, अजय भैया!

अजय	इसलिये कि सरकार को फटाफट योजनायें पूरी करने वाले ईमानदार अफसरों की जरुरत नहीं। सरकारी नौकरी में निष्ठा से काम करने वाले ईमानदार लोगों की बड़ी दुर्दशा होती है। न तो उनसे सरकार खुश रहती है, और न सरकार के चाटुकार उद्योगपति और ठेकेदार।

(पजामे के ऊपर लम्बा सा गाउन पहने और गाउन को बन्द करने का नाड़ा बांधते हुए श्यामलाल जी अन्दर के कमरे से आते हैं)।

मोहन	आइये बड़े बाबू, कॉफी ठंडी हो रही है।

श्याम	ठंडी हो रही है तो हो जाने दो। थोड़ी ठंडी ही पी लेंगे। तुझे गर्म करने को नहीं कहूंगा।

(श्याम लाल आकर सोफे को एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं और काफी की एक प्याली उठा लेते हैं। अजय और फजल भी एक एक प्याली उठा लेते हैं।)

श्याम	(चुस्की लेकर) आखिर मंत्रिमण्डल में फेर बदल हो ही गया।

अजय	मंत्रिमण्डल में बीच बीच में फेर बदल होना जरूरी है। इससे प्रधानमंत्री के दूरदर्शी और विवेकी होने का पता लगता है।

श्याम	अच्छा! वह कैसे भाई! (मोहन सोफे के पीछे हाथ बांधे हुए खड़ा होता है)।

अजय	ऐसे कि बीच बीच में मंत्रिमण्डल [illegible] ल में प्रधानमन्त्री यह [illegible] मन्त्री सोनिय[illegible]

श्याम (हंसकर) क्या कलाकारी है ? लेकिन सुना है कि अब मन्त्रीमण्डल में बडे काबिल लोगों को लिया गया है ।

अजय लेकिन अगर ये बडे काबिल हो थे तो उन्हें पहले क्यों नहीं लिया गया । अब तो मन्त्रियों की केवल एक ही योग्यता होना बहुत जरूरी है ?

फ़जल और वह क्या ?

अजय वे प्रधानमन्त्री के अच्छे चमचे होने चाहियें । वे हमेशा यह ही देखते रहते हैं कि उन्हें भी कोई अवसर मिलना चाहिये ।

याम कौन अच्छा कौन बहुत अच्छा ?

ाजय वही सबसे अच्छा है, जिसमें प्रधान की अधिक दिलचस्पी हो । प्रधान अगर किसी को अपना सबसे अच्छा चमचा मान लेते हैं तो वह विवेकहीन प्रधान कहलाता है ।

ज़ल ऐसा क्यों ?

जय ऐसा इसलिये कि सबसे अच्छा मानने का मतलब है कि उसे दो नम्बर का अधिकार देना । और कोई भी होशियार प्रधान किसी भी अपने चमचे को दो नम्बर का अधिकार देकर अपनी कुर्सी के लिये भारी खतरा पैदा करना नहीं चाहता ।

ाम ठीक अजय । अब तुम क्रम-क्रम से उन्नत होते जा रहे हो । मुझे तुम पर बहुत अभिमान है ।

ज़ल चाचा ! आप मुझे कोई खुशखबरी सुनाने वाले थे !

श्याम — अरे हां, वह तो मैं भूल ही गया था। (कुछ रुक कर) आज आफिस में विदाई पार्टी में मुझे एक बचपन का दोस्त मिल गया।

अजय — आपका आशय है कि आपका कोई बचपन का दोस्त भी है। लेकिन उसकी चर्चा करने को इस समय क्या जरूरत थी।

श्याम — अरे यार, पहले पूरी बात सुन लो, फिर तुम खुद मान लोगे कि यह समाचार तुम्हारे बड़े मतलब का है।

कमल — हां यार अजय। बीच में मत टोको। अंकल को पूरी बात कह लेने दो।

श्याम — पहले वह बम्बई में था। अब उसका तबादला यहीं दिल्ली में हो गया है।

अजय — किस विभाग में?

श्याम — बस यही बात तो तुम्हारे मतलब की है।

अजय — क्या मतलब?

श्याम — मतलब यह है कि पहले वह आल इंडिया रेडियो में निदेशक था। पर उसे अब उन्नति देकर दूर दर्शन में निर्माता बना दिया गया है और दिल्ली भेज दिया है।

कमल — दूरदर्शन में? यह तो बहुत अच्छी बात है।

श्याम — भाई। तुम और अजय अक्सर दूरदर्शन की गल्तियां निकालते रहते हो न, उसके कार्यक्रमों की आलोचना करते रहते हो न, तो तुम्हारी भावनाओं

का खयाल रखते हुए मैंने ग्राज रात उसे ग्रप
यहां खाना खाने के लिये बुला लिया है।

फजल — खाना खाने के लिये बुलाया है! यह कहना ठीक नहीं लगता ग्रंकल। यह कहिये कि डिनर प बुलाया है।

श्याम — नहीं मैंने उसे डिनर पर नहीं, खाना खाने को ह बुलाया है।

फजल — इन दोनों में फर्क क्या है?

श्याम — फर्क यह है कि खाना खाने का मतलब है, जो जैसा रोज मैं खाता हूं, वही उसे भी खाना होगा। डिनर के लिये खास तैयारी करनी होती है। विशेष रकाबियां लगाई जाती हैं।

ग्रजय — एक बहुत जोरदार बात सोच रहा हूं, पापा!

श्याम — सिर्फ सोचने के लायक हो तो तुम्हीं सोचते रहो, ग्रौर सुनाने लायक हो तो हमे भी सुना दो, क्यों फजल?

फजल — बिलकुल ठीक, ग्रंकल।

ग्रजय — ग्रापके दोस्त का नाम क्या है, पापा। ग्रौर वे कब ग्राने वाले हैं?

श्याम — नाम तो उनका हरिश्चन्द्र वर्मा है, पर वे एच. सी. वर्मा लिखना ज्यादा पसन्द करते हैं। खाना तो हम सदा की तरह नौ दस बजे खायेंगे, पर खाना खाने के पहले एक-दो घंटे गप्पे भी लडायेंगे ग्रौर इसलिये वे सात बजे ग्रा जायेंगे।

ग्रजय — (चुटकी बजाकर) ग्रच्छा! ग्रब तेल देखो ग्रौर तेल की धार देखो।

श्याम तेल भी देखेंगे और तेल की धार भी देखेंगे, पर इसका मुद्दा तो बताओ ?

अजय पापा ! मम्मी और सीमा तो आज घर पर हैं नहीं क्यों न हम यहीं एक ड्रामा खेलें ?

श्याम ऐं, सीमा और सुषमा कहां गयी हैं ? और अब तक तुमने कुछ बताया क्यों नहीं ? अब से खामोश ही हो इस बारे में ?

अजय पापा ! यह इतना आवश्यक तो था नहीं।

श्याम (बनावटी गुस्से से) भाड़ में गया तुम्हारा ड्रामा। मेरी सबसे प्यारी पत्नी और बेटी तो कहीं चली गईं, और तुम कहते हो, कि यह इतना आवश्यक तो था नहीं।

अजय ओह पापा ! अब कृपा कर...

श्याम नहीं, कोई बात नहीं सुनूंगा, तुम्हारी। यह पहले और सबसे आवश्यक है, पहले मुझे यह मालूम होना चाहिए कि सीमा और उसकी मम्मी कहां गयी हैं? क्यों गई हैं ?

अजय ओ. के., ओ. के.। तो सुनिये, कान खोलकर सुन लीजिए। सीमा अपनी एक सहेली के जन्म दिवस की पार्टी में गई है। मम्मी को जब यह मालूम पड़ा कि सीमा वहां रात भर रुकेगी, तो वह भी उसी के पास चली गई।

श्याम लो, यह अच्छी रही। मैंने अपने दोस्त वर्मा को यहां बुलाया ही इसीलिए था कि उसे सुषमा से मिलाऊंगा। मगर यह बात मुझे पहले से मालूम

का खयाल रखते हुए मैंने आज रात उसे अपने यहां खाना खाने के लिये बुला लिया है।

फजल खाना खाने के लिये बुलाया है! यह कहना ठीक नहीं लगता अंकल। यह कहिये कि डिनर पर बुलाया है।

श्याम नहीं मैंने उसे डिनर पर नहीं, खाना खाने को ही बुलाया है।

फजल इन दोनों में फर्क क्या है?

श्याम फर्क यह है कि खाना खाने का मतलब है, जो जैसा रोज मैं खाता हूं, वही उसे भी खाना होगा। डिनर के लिये खास तैयारी करनी होती है। विशेष रकाबियां लगाई जाती हैं।

अजय एक बहुत जोरदार बात सोच रहा हूं, पापा!

श्याम सिर्फ सोचने के लायक हो तो तुम्हीं सोचते रहो, और सुनाने लायक हो तो हमें भी सुना दो, क्यों फजल?

फजल बिलकुल ठीक, अंकल।

अजय आपके दोस्त का नाम क्या है, पापा। कब आने वाले हैं?

श्याम नाम तो उनका हरिश्चन्द्र वर्मा है, पर वर्मा लिखना ज्यादा पसन्द करते हैं। सदा की तरह नौ दस बजे खायेंगे, प के पहले एक-दो घंटे गप्पे भी लड़ायेंगे वे सात बजे आ जायेंगे।

अजय (चुटकी बजाकर) अच्छा। अब दे की धार देखो।

फजल हां, अब आप समझ गये, अजय की बात ।

श्याम (अजय से) क्यों बे तूने कभी स्कूल-कॉलेज में ड्रामा किया है ?

अजय भाषण तो बहुत दिये हैं, पर ड्रामा नहीं किया ।

श्याम फिर आज अचानक तुझे ड्रामा करने की कैसे सूझी?

अजय (साश्चर्य) आप जानते हैं !

श्याम हां हां, मैं तेरा बाप हूं । मैं नहीं जानूंगा तो और कौन जानेगा ? तूने यह सुना है कि नहीं कि बेटे की रगों में बाप का खून होता है ।

अजय हां, सुना है ।

श्याम तो अब यह समझ ले, ये तेरी रगों में उसी खून की तासीर है कि जो आज तुझे ड्रामा करने के लिए प्रेरित कर रही है ।

अजय . मैं समझा नहीं ।

श्याम (फजल से), तुम समझे, बेटे ?

फजल (सिर हिलाकर) मैं भी नहीं समझा अंकल ।

श्याम अो हो, अपने को तीसमार खां समझते हो, और इतनी सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आयी ।

फजल अब आप ही समझा दीजिये अंकल ।

श्याम अरे भाई ? कॉलेज के जमाने में मैं बड़ा जबरदस्त ड्रामा कलाकार था । मेरा खयाल था कि अगर इसकी रगों में मेरा खून होगा तो यह एक दिन जरूर ड्रामा की ओर आकर्षित हो जायेगा । पर जब यह हाई स्कूल पास कर गया और ड्रामा करना

तो हुए, तुमको अभी तक नहीं को तो मुझे लगा'''
कुछ लगा'''

अजय क्या लगा था पापा ?

श्याम मुझे लगा कि कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं ?

अजय ओह पापा ! (अजय हँसता है)

श्याम अब देखो, मेरे बेटे ने नाम डुबाया, मेरा खून रंग लाया । आज इसने मुझ पर ड्रामा करने की बात कही ।

(अजय ठहाका लगाता है, श्याम और भरी हँसी हँसता है ।)

श्याम (अजय की पीठ थपथपा कर), हाँ तो क्या ड्रामा करोगे बेटे ?

अजय हम आपसे पापा हम दूर दर्शन के बारे में ही आपके दोस्त से कुछ दिलचस्प सवाल करेंगे पर ड्रामा के जरिये ।

श्याम इससे मेरा दोस्त नाराज तो नहीं होगा ? हमारी दोस्ती तो नहीं टूटेगी ?

अजय नहीं पापा नहीं । आपकी दोस्ती से इसका जरा भी तालुक नहीं होगा । पर आपको मोहन को तैयार करना पड़ेगा ।

श्याम अगर ऐसी बात है, तो मैं पीछे नहीं हटूंगा ।

अजय (पीछे देखकर) और मोहन को भी इस ड्रामे में पार्ट करना होगा ।

फजल	क्यों रे, कभी स्कूल के नाटक वाटक में भाग लिया है ?
मोहन	स्कूल के नाटक में तो हिस्सा नहीं लिया, लेकिन मोहल्ले की रामलीला में एक बार जरूर हनुमान का पार्ट किया था ।
श्याम	अरे भाई, इसे नाटक में शामिल मत करो । यह शामिल हो गया तो खाना-वाना कौन बनायगा ?
अजय	आप फिक्र क्यों करते है, बाबू जी, ड्रामा तो पन्द्रह बीस मिनट में खतम हो जायगा ।
मोहन	और खाना मैं फटाफट एक घण्टे में बना डालूंगा ।
श्याम	यह साला भी तुम्हारे ही रंग में रंग गया लगता है ।

तो दूर, उसकी चर्चा तक नहीं की तो मुझे लगा···
मुझे लगा···

फजल क्या लगा अंकल ?

श्याम मुझे लगा कि कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं ?

अजय ओह पापा ! (फजल हंसता है)

श्याम पर देखो, मेरे लहू ने आज पुकारा, मेरा खून रंग लाया। आज इसने खुद ब खुद ड्रामा करने की बात कही।

(फजल ठहाका लगाता है, अजय झेंप भरी हंसी हंसता है।)

श्याम (अजय की पीठ थपथपा कर), हां तो क्या ड्रामा करोगे बेटे ?

अजय दर असल पापा हम दूर दर्शन के बारे में ही आपके दोस्त से कुछ दिलचस्प सवाल करेंगे पर ड्रामा के जरिये।

श्याम इससे मेरा दोस्त नाराज तो नहीं होगा ? हमारी दोस्ती तो नहीं टूटेगी ?

अजय नहीं पापा नहीं। आपकी दोस्ती से इसका जरा भी ताल्लुक नहीं होगा। पर आपको मोहन को तैयार करना पड़ेगा।

श्याम अगर ऐसी बात है, तो मैं पीछे नहीं हटूंगा।

अजय (पीछे देखकर) और मोहन को भी इस ड्रामे में पार्ट करना होगा।

फजल — क्यों रे, कभी स्कूल के नाटक वाटक में भाग लिया है ?

मोहन — स्कूल के नाटक में तो हिस्सा नहीं लिया, लेकिन मोहल्ले की रामलीला में एक बार जरूर हनुमान का पार्ट किया था ।

श्याम — अरे भाई, इसे नाटक में शामिल मत करो । यह शामिल हो गया तो खाना-वाना कौन बनायगा ?

अजय — आप फिक्र क्यों करते है, बाबू जी, ड्रामा तो पन्द्रह बीस मिनट में खतम हो जायगा ।

मोहन — और खाना मैं फटाफट एक घण्टे में बना डालूंगा ।

श्याम — यह साला भी तुम्हारे ही रंग में रंग गया लगता है ।

अजय — अच्छा अब मैं आपको पूरा ड्रामा समझा देता हूं, और किसे क्या करना है, वह भी बताये देता हूं। (फजल से) फजल, तुम तो कॉलेज के जाने माने कलाकार हो। सबसे अहम पार्ट तुम्हें ही करना है। (फजल उठ खड़ा होता है कि इसी समय दृश्य परिवर्तन के संकेत में मंच का प्रकाश गुल हो जाता है। एक मिनट बाद मंच पर जब प्रकाश होता है तो सोफे पर सिर्फ श्यामलाल आराम से बैठे, कोई मैगजिन पढ़ते हुए दिखाई देते हैं। कुछ पल तक यही स्थिति रहती है। फिर दरवाजे की घण्टी बजती है। मैगजीन मेज पर रख कर श्यामलाल उठ खड़े होते हैं)

श्याम — (बुदबुदा कर) लगता है आ गया ?
बाहर वाले दरवाजे का दो टुकड़े वाला परदा उठाकर श्यामलाल लुप्त हो जाते है।

श्याम — (क्षण भर बाद सिर्फ आवाज) आओ यार, मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। पता ढूंढने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?
(श्यामलाल और एच. पी. शर्मा आगे पीछे परदा हटाकर बैठक में आते हैं। एच. पी. शर्मा कद्दावर गौरवर्णीय, मूंछों और घंघराले बालों से युक्त आकर्षक चहरा। श्यामलाल के हम उम्र, आंखों पर ऐनक।)

शर्मा — बड़े शहरों में पता ढूंढने में ज्यादा तकलीफ नहीं होती, बशर्ते आपके पास एकदम सही पता हो (हंसकर) और फिर मुझे तो बम्बई का भी अनुभव है।

(वर्मा आकर सोफा पर बैठ जाता है ।) श्यामलाल बगल में खड़े रहते हैं ।

श्याम — कॉफी लोगे या ठण्डा शर्बत !

वर्मा — नहीं कॉफी ही ठीक रहेगी । पर तुम बैठो न, खड़े क्यों हो ?

श्याम — (हंसकर) पहले कॉफी तो बना लाऊं ।

वर्मा — (आश्चर्य से) क्या ! तुम कॉफी बनाओगे ?

श्याम — दर असल बात यह है कि आस पड़ोस में एक लड़की की सगाई है, सो पूरा परिवार तो वहां गया ही है, नौकर भी साथ चले गये हैं ।

वर्मा — तब कॉफी रहने दो यार ! तुम बैठो, जरा गप्प मारेंगे ।

श्याम — अरे एक मिनट में तैयार हो जायगी । तब तक तुम पत्रिका देखो !

(श्यामलाल अन्दर जाता है । वर्मा पत्रिका उठाकर अनमने भाव से उसे देखता हुआ पन्ने पलटने लगता है । सचमुच एक मिनट बाद ही दोनों हाथों में कॉफी की दो प्याली लेकर श्यामलाल आ जाता है)

श्याम — भाई ! प्याली ट्रे में लाने की रस्म अदा नहीं की । इसका कुछ खयाल मत करना ।

वर्मा — (चौंककर) कमाल है यार, तुमने इतनी जल्द कॉफी तैयार कर डाली ।

श्याम — भाई । मेरा खयाल था, घर वालों के साथ नौकर भी चला गया है । मुझे क्या मालूम था कि उसकी तबियत ठीक न होने से वह घर पर ही रुक गया

है। किसी के माने की माहट पाकर ही उसने कॉफी पड़ा दी थी।

वर्मा — बड़ा समझदार नौकर है। (प्याला श्यामलाल से लेकर घूट लेने लगता है।)

श्याम — (सोफे पर बैठकर) प्रजी, बहुत। अभी तुम उसकी समझदारी के जलवे देखोगे-सुनोगे तो दंग रह जाओगे।

वर्मा — (गहरी सांस लेकर) तुम किस्मत वाले हो भाई मुझे बम्बई से आये एक महीना हो गया और मु यहां अब तक कोई नौकर ही नहीं मिला। नौक के लिये घर में बीबी ने मेरा जाना हराम कर रख है। उसे ऐसा लग रहा है मानो मुझे नौकर बहु से मिल रहे हैं और मैं ही नहीं रख रहा हूं।

श्याम — वैसे नौकर रखने के बारे में जरा सावधान रहना यह दिल्ली है। जरा भी गफलत से धोखा ख जाओगे। आगे तुम खुद ही समझदार हो।

वर्मा — हां इन दिनों घरेलू नौकरों को वश में रखते हुए काम लेना कुछ कठिन है। जिस तिस को तो रखा भी नहीं जा सकता। ठोक बजाकर रखना होगा। अब यह बात श्रीमती जी को कौन बतावे।

श्याम — मुझे ले चलो, मैं समझा दूंगा।

वर्मा — अबे तुझे तो ले ही जाऊंगा। तेरी ही सफाई से मैं बच जाऊंगा। तेरी रिहाइश दिल्ली में पुरानी है। यह जानकर नौकर ढूंढने की झंझट को तो तेरे ही सिर पर पटक देगी। और मैं बच जाऊंगा।

श्याम — औलाद कितनी हैं?

वर्मा तीन ! एक लड़का, दो लड़कियां ।

श्याम क्या कर रहे है ?

वर्मा मेरा कर्म फोड रहे हैं । शहजादे हैं, जो हजारों रुपये ट्यूशन के पीछे बहाकर भी दो साल से हायर सैकण्डरी में ही गोते खा रहे हैं । लड़कियां भी उससे बेहत्तर नहीं हैं ।

श्याम (हंसकर) भाई ! जैसे मां-बाप होंगे, वैसा ही दिमाग तो औलाद पायेगी ।

वर्मा सिर्फ मां कह दे, बाप के साथ तो तू पढ़ा है, क्या नहीं जानता वो हमेशा प्रथम श्रेणी में रहा है ।

श्याम जानता हूं, पर एक और तरीका भी है ।

वर्मा कैसा तरीका ?

श्याम यार हरीश ! अकसर यह देखा गया है कि जो लड़के शादी के पहले होशियार होते है वे शादी के बाद गधे हो जाते हैं, और जो शादी के पहले गधे होते हैं वे शादी के बाद तेज हो जाते हैं ।

वर्मा रविश ! कहां देखा तुमने ?

श्याम क्यों, तुम्हें क्या नहीं देख रहा हूं ?

वर्मा तुम बेवकूफ आदमी......अबे तू अपनी भी तो कह !

श्याम अपनी क्या कहूं ? शादी के पहले भी मैं न गधा था न होशियार, बीच में था सो शादी के बाद भी वैसा ही रह गया ।

वर्मा मजाक करने की तेरी पुरानी आदत गई नहीं, अभी तक ।

श्याम — और मरते दम तक जावेगी भी नहीं।

वर्मा — हां, तूने नहीं बताया, तेरे कितने हैं ?

श्याम — क्या, कितने ?

वर्मा — तेरे नाम को रोने वाले ?

श्याम — घर में तीन है। एक इकलौती बीवी, एक बेटा और एक बेटी। बाहर बीमा कम्पनी है और चौक का बनिया है, जिसके यहां से घर का राशन आता है।

वर्मा — बेटा बेटी के क्या हाल हैं ?

श्याम — जो आजकल के बेटी बेटों का होना चाहिये, वही है। वैसे घिसट-घिसटा कर हर साल पास होकर अगली कक्षा में जरूर पहुंच जाते हैं। पर मुझे लगता है कि यह भी उनकी मां की ही कृपा से है। मेरी श्रीमती जी एक हाई स्कूल में प्रधानाध्यापिका है।

वर्मा — अच्छा बेटा, कमाऊ बीबी ढूंढ ली है, तभी घर में इतनी ऐश-आराम की चीजें जुटा रक्खी हैं।

श्याम — बीबी ही तो ढूंढी है, कोई चोरी तो नहीं की है और बीबी भी मैंने नहीं ढूंढी है, बल्कि यह कहना ज्यादा बेहतर होगा कि बीबी के बाप ने मुझे ढूंढा है। कभी-कभी लड़की के बाप। किस्मत वाले निकल आते हैं। उन्हें रास्ते में ही ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे पड़े मिल जाते हैं, और वे उन्हें ही दामाद बना लेते हैं।

वर्मा — अच्छा ! कोई उदाहरण ?

श्याम — हां ! तुम जो सामने बैठे हो।

वर्मा — अबे श्याम ! अगर अब भी तू बाज न आया तो

मार बैठूंगा । इस समय यहां कोई है भी नहीं देखने वाला ।

श्याम — बेटा ! यह मत भूलना कि मेरे ही घर बैठा हुआ है ।

वर्मा — यानि अपने घर पर दादा गिरी पेलेगा ?

श्याम — तूने सुना नहीं कि अपनी गली में तो बच्चा भी शेर हो जाता है और फिर दादागिरी और मारने-पीटने की बात शुरु किसने की है, तूने ही तो !

(तभी द्वार की घंटी बजती है)

श्याम — अब इस समय कौन आ मरा ?

वर्मा — तेरे परिवार के लोग सगाई से लौट आये होंगे ?

श्याम — देखता हूं, जाकर ।

(श्यामलाल उठकर पर्दा उठा कर बाहरी दरवाज
पर जाता है। अगले पल जब श्यामलाल लौटता है
तो उसके पीछे अजय और मोहन हैं। वर्मा उन्हीं
की ओर उत्सुक निगाहों से देख रहा है। अजय और
मोहन दोनों की वेशभूषा बदली हुई है। अजय के
शरीर पर कुर्त्ता, पाजामा, जाकेट, पैरों में चप्पल,
आंखों पर सुनहरे फ्रेम की जीरो पावर का चश्मा।
तथा मोहन के बदन पर घुटने तक की धोती और
बंडी। सरपर पगड़ी बांधी हुई थी)।

श्याम कहो बेटे राकेश ! कैसे आना हुआ ?

अजय वह बात यह है अंकल ! कि आप तो जानते ही
हैं कि मैं टेलिविजन प्रोग्राम का कितना दिवाना हूं
सो अभी जब अजय ने बताया कि आपके यहां
कोई टेलिविजन कार्यक्रम के निर्माता आने वाले हैं
तो मैं खुद को नहीं रोक सका और उनसे मिलने
चला आया।

मोहन हम हू टी. वी. के बहुत शौकीन हैं बाबूजी। इसका
अब रस्ता या तो राजेश बबुआ बताइये कि कल ओ
टी. वी. वाला आपके यहां अइ हैं तो हम सबै काम
छोंडि के बबुआ के साथ आय गवा।

श्याम हां हां, आओ बैठो। ये हैं मिस्टर हरीश वर्मा
(हाथ से इशारा करता है) मेरे दोस्त और टेली-
विजन के ड्रामा निर्माता।

अजय नमस्कार साहब !

मोहन	राम राम हुजूर।
(दोनों हाथ जोड़कर अभिनन्दन करते हैं)

वर्मा	नमस्कार (मुंह बनाकर) राम-राम (श्याम से) आप लोगों की तारीफ?

श्याम	ये मेरे करीब ही रहते हैं, मिस्टर राकेश! मेरे बेटे अजय के अच्छे दोस्त हैं। (मोहन की ओर संकेत करके) और यह है मेरा दूध वाला बाबू।

वर्मा	दूध वाला! (अजय सोफे पर और मोहन फर्श पर पालथी मारकर बैठता है।)

श्याम	हां! तुम्हें तो खुश होना चाहिए हरीश कि टी. वी. की जनरुचि अब साधारण जनता तक भी हो गयी है।

वर्मा	(अजय से) आप क्या करते हैं?

अजय	जी पढ़ता हूं, हायर सैकेण्डरी में। मेरा मतलब है, हायर सैकेण्डरी में यह मेरा तीसरा वर्ष है।

वर्मा	(व्यंग्य से) बड़े होशियार हैं आप!

अजय	जी, जो कुछ भी हूं, आपकी बदौलत।

वर्मा	क्या मतलब?

अजय	मतलब यह कि किसी के पास फेल होने में होशियारी का कोई ताल्लुक नहीं होता। क्या आप इसे नहीं मानते?

वर्मा	हूं, कुछ हद तक मानता हूं। (कुछ रुककर) ये सब बातें छोड़िये और मुझे यह बताइये कि आप मुझसे क्यों मिलना चाहते थे?

अजय	(श्यामलाल जी की ओर संकेत करके) इनसे पूछिये कि मैंने दूरदर्शन वालों को कितनी चिट्ठियां लिखी, पर एक का भी जवाब उन्होंने नहीं दिया।

वर्मा — हो सकता है कि आप की चिट्ठियां जवाब देने के काबिल ही न रही हों ?

अजय — या हो सकता है दूरदर्शन वालों के पास मेरी चिट्ठियों में पूछे गये सवालों का जवाब ही नहीं हो। अपने कार्यक्रमों की आलोचना को चिट्ठियों को भी वे अपने पत्रोत्तर कार्यक्रम में शामिल करने के लायक न समझते हों। इसलिए जब मैंने आपके यहां होने की बात सुनी तो सोचा कि रूबरू आप से मिलकर ही अपनी जिज्ञासा शान्त कर लूं।

श्याम — हां हां, जो पूछना हो, शौक से पूछो बेटे। वर्मा जी दूरदर्शन में आखिर कोई ऐसे वैसे पद पर नहीं, निर्माता के पद पर हैं—अफसर हैं।

मोहन — हम हूं कछु पूछें चाहिये, साहब !

श्याम — हां हां, तुम भी पूछो।

मोहन — हमार सवाल फिलम 'रामायण' से है साहेब ! हम का ई बताया साहेब ! कि जब राम बनवास जात रहा तो आपन दाढ़ी बनावै खातिर संग का ले जात रहा—उस्तरा कि रेजर ? फिलम के सबै भाग मां उनके सकल तो बड़े साफ-सुथर, चिक्कन चुक्कन दिखात हैं। (श्यामलाल हंसता है वर्मा गुस्से से मोहन की ओर देखता है।)

श्याम — (वर्मा से) हां हां, बताओ यार !

वर्मा — जब रामचन्द्र जी वनवास के दौरान उस्तरे से दाढ़ी बना रहे थे या रेजर से यह मैं क्या जानूं ? रामानन्द सागर से पूछो।

मोहन — हमार राम उनके पता होत तो हम उन्हें से पूछत साहेब । आपके पास तो उनके पता होई । टी. वी. में एह सवाल का जवाब दई दिहौं तो हमार साथ सबै देखनवारे का समझ मा आ जई ई बात ।

अजय — हां, अहम् सवालों का जवाब तो दूरदर्शन पर ही दे देना चाहिए ताकि मुद्दे की बात एक साथ सभी दर्शकों तक पहुच जावे ।

मोहन — एक सवाल अऊर रहा साहेब हमार। बजरंग बली कऊन स्कूल मां पढे रहिन, और उनके मास्टर के नाम का रहिस ?

(वर्मा सहम कर थूक निगलता है)

अजय — बजरंग बली और स्कूल ?

मोहन — हां बबुआ ! जब सेतु बांधे जात रहा तो हनुमान जी खड़िया हाथ में लिहै मनै पत्थर मां राम-राम लिखत रहा । आप नहीं देखे भये ?

श्याम — बताओ यार वर्मा, कुछ तो बताओ इनको ।

वर्मा — इन सवालों का जवाब तो रामायण सीरियल का निर्माता–निदेशक यानी रामानन्द सागर ही दे सकता है । यार श्याम, एक बात स्पष्ट कर दूं कि कि दूरदर्शन में मैं निर्माता जरूर हूं, पर मेरे पास चार्ज विज्ञापन विभाग का है ।

अजय — विज्ञापन विभाग में भी मेरी कुछ जिज्ञासायें हैं, वर्मा साहब ।

श्याम — तो चुप क्यों हो, बोलो बेटा ! विज्ञापन तो वर्मा जी का दफ्तर ही है, उसके बारे में किसी भी सवाल का जवाब देने में यह पीछे नहीं हटेंगे ।

अजय एक बात तो यह बताइये वर्मा साहब। आप दूर-दर्शन पर तरह तरह के टूथपेस्ट के विज्ञापन दिखाते हैं, पर अपने बड़े बड़े दांतों से पेड़ की बड़ी-बड़ी डालियों को चबा जाने वाला हाथी और कच्चे मांस को नोंच-नोंच कर खाने वाला शेर कौनसा टूथपेस्ट इस्तेमाल करते हैं ?

(वर्मा निरुत्तर होकर सर झुका लेता है)

श्याम (वर्मा को कोहनी मारकर) बोलो यार, कुछ तो बोलो।

वर्मा अब इन के इस सवाल का मैं क्या जवाब दे सकता हूं।

अजय मेरे कहने का अर्थ है कि जिसके लिए आपको ला-जवाब होना पड़े, ऐसे विज्ञापन आप लेते ही क्यों हैं ?

वर्मा जनाब विज्ञापन के पैसे मिलते हैं।

अजय इसका मतलब तो यह हुआ कि पैसे देकर दूरदर्शन पर उचित-अनुचित कुछ भी दिखाया जा सकता है।

वर्मा हम अपने दर्शकों को यह तो नहीं कहते कि फलां कम्पनी का फलां उत्पादन उन्हें खरीदना ही होगा। यह तो दर्शकों को मरजी पर है। खरीदने के पहले उन्हें यह तसदीक कर लेनी चाहिए कि यह उचित है अनुचित। इसके लिए दूरदर्शन और दूरदर्शन वाले कहां तक जिम्मेवार हैं ?

अजय इसलिए इसके लिए दूरदर्शन जिम्मेवार नहीं, जिसके लिए जिम्मेवार है मैं उसकी ही बात पूछता हूं।

श्याम (वर्मा से) लेकिन यार वर्मा, टूथ पेस्ट वाली बात तो मुझे भी जंच रही है।

(वर्मा ठण्डी निगाहों से श्यामलाल को देखता है)

अजय अभी कुछ दिन पहले आपके कृषि-दर्शन कार्यक्रम में एक नेत्र विशेषज्ञ को यह बताने के लिए बुलाया गया था कि आंखों की रोशनी के लिए कौन-कौन सी साग-भाजियां फायदे मन्द हैं (श्याम से) मजे की बात यह है अंकल कि वे विशेषज्ञ महोदय खुद चश्मा लगाये हुए थे।

(श्यामलाल ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं।)

मोहन आंखन का ऊजर बनाये खातिर सबसे बढ़िया और मुफीद चीज है, घास खाओ।

श्याम क्या कहा ? घास ?

मोहन हां साहेब ! घास खाये से आंखन की ज्योति बढ जात है। आपने कऊनो घोड़ा अउर गैया को कभी चश्मा लगात देखा है का ?

(श्याम और अजय हंसते हैं। वर्मा गुस्से से मोहन को देखता है।)

श्याम भाई, तुम्हारी इस बात का जवाब तो हमारे दोस्त वर्मा जी के पास है। वह यह कि वे विज्ञापन विभाग के निर्माता हैं, कार्यक्रमों के नहीं।

मोहन अब विज्ञापनेई की बात सई लो साहेब। ऊ एक विज्ञापन टी. वी. पर आत है न, का कहत हैं ऊका फेर एण्ड लौली।

कलाकारों व संस्थाओं को जानता हूं जो दूरदर्शन के लिये बेहतर कार्यक्रम पेश कर सकते हैं, लेकिन सिफारिश और पैसे के बिना उनकी दाल नहीं गल पाती।

वर्मा इस बारे में मैं कोई आश्वासन नहीं दे सकता।

अजय एक बात और, आपके ही विभाग से सम्बन्धित। क्या सिगरेट और शराब के निर्माता आपको विज्ञापन नहीं देते जो आप लोग उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं? इनकी बुराई कराने के लिये जब-तब तरह-तरह के विज्ञापन और कार्यक्रम चलाये जाते हैं।

श्याम भाई! ये चीजें तो सचमुच बुरी हैं।

अजय अंकल, मैं यह नहीं कहता कि ये चीजें अच्छी हैं और न इनका मैं हिमायती ही हूं। मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं कि अगर ये चीजें बुरी हैं तो सरकार इन्हें क्यों बिकने दे रही है।

श्याम क्या बिकवा रही है सरकार? सिगरेट?

अजय नहीं, पर शराब के ठेके तो नीलाम करवाती ही है। आपको मालूम है अंकल कि सिर्फ सिगरेट से सरकार को हर साल लगभग नौ सौ पचास करोड़ रुपया एक्साइज के रूप में मिल रहा है। शराब से मिलने वाले टैक्स तो हजारों करोड़ से ऊपर हैं। यह रुपया कहां काम आता है? देश की योजनाओं

में। मगर शराब और सिगरेट बन्द हो जाय तो इतना घाटा सरकार कहां से पूरा करेगी।

वर्मा (बोर होता हुआ सा, कलाई घड़ी पर नजर डाल कर) यार श्याम ! जरा टेलीविजन तो खोलना। समाचारों का समय हो गया है।

(श्यामलाल टेलीविजन का खटका दबा कर उसे खोल देते है। टेलीविजन मन्च पर इस तरह रखा होना चाहिये कि उसकी तसवीरें दर्शकों को न दिखाई पड़ें, सिर्फ आवाज ही सुनाई पड़े। टेली-विजन खुलने को आवाज सुनाई पड़ती है)

आवाज इस बुलेटिन के समाचार यहीं समाप्त होते हैं। एक विशेष सूचना—दिल्ली पुलिस ने लोगों को खास तौर पर चौकस और होशियार रहने के लिये आग्रह किया है। अनुमान है कि विगत दिनों होशियारपुर में पुलिस हिरासत से फरार कुख्यात आतंकवादी तरसेमसिंह इन दिनों दिल्ली में है। इस पर पचास हजार रुपये का इनाम है। सूचना समाप्त होती है।

श्याम लो यार, समाचार तो खतम भी हो गये, बन्द कर दूं !

(और वर्मा के उत्तर को प्रतीक्षा किये बिना श्याम-लाल टेलीविजन का खटका दबाकर प्रसारण बन्द कर देते हैं।

वर्मा (अजय से) हां, आपको और कुछ पूछना है ?

अजय	आप जब किसी बात का जवाब दे ही नहीं पा रहे है, तो पूछने का फायदा भी क्या है। मैं नहीं कह सकता कि दूरदर्शन के पास जितने घटिया कार्यक्रम है क्या इतना ही घटिया स्टाफ भी है।

वर्मा	(गुस्से से खड़े होकर) शट्-अप ! तुम्हारी इतनी जुर्रत कि तुम मुझे घटिया कहो।

अजय	मेरा यह मतलब नहीं था।

वर्मा	(स्वर ऊंचा कर) फिर क्या मतलब था तुम्हारा ? (इसी समय बाहरी दरवाजे का परदा उठाकर झपटता हुआ हाथ में स्टेनगन लिये फजल अंदर आता है। वेशभूषा सरदार जैसी। ढीला पाजामा-कुर्त्ता, पैरों में सैंडल, सर पर पगड़ी और दाढी मूछे)

फजल	खबरदार ! कोई अपनी जगह से मत हिलना। (सब भयातुर निगाहों से फजल को देखते हैं, वर्मा थर-थर कांपने लग जाता है।)

श्याम	(अभिनय करते हुए) क···क···कौन हो तुम ?

फजल	तरसेम का नाम कभी सुना है ?

वर्मा	(कांपते हुए) तो···तो···तुम तरसेम हो, जिस पर सरकार ने पचास हजार···

फजल	ओए, तो तेणू चहिये दा पचार हजार···

वर्मा	(घबड़ा कर तेजी से हाथ हिलाता) नहीं, नहीं, मुझे नहीं चाहिये।

फजल तेणू नहिं चहिये, कोई गल नहीं, पर मेणू तो चहिये। बता, कित्तो है माल आलमारी में। ते संदूक नाल होये तो चाबी हडु···ओये, जल्दी कर···

वर्मा म···म···मैं यहां नहीं रहता···मैं तो यूं ही··· (थूक निगल कर श्याम की ओर संकेत कर) इनका घर है ये···मैं तो···मैं तो

फजल हां, की करदा है तू······

वर्मा म···म···मैं तो टेलीविजन में······

फजल अच्छा, तू टेलिविजन वाला है। हमारे बारे में सच्चा-जुट्ठा खबरें देने वाला। अब तो तेणू नई छड्डना, तेणू तो गोली मारणाई मारण।······

वर्मा (कांपते स्वर में) सरदारजी, समाचार मैं नहीं देता······कसम खाकर कहता हूं, मैं नहीं देता··· अब जाओ······आपका बहुत उपकार होगा यदि······

फजल (डांट कर) ओये, खामोश...मैं णू पक्का पता है तू ही खबरें देता है······छोडूंगा नहीं······(स्टेनगन उठाकर वर्मा की ओर तानता है) अपने भगवान नू याद करले··· ।

श्याम सरदारजी ! सचमुच ये खबरें नहीं देते ।

फजल मैंणू यकीन नही आंदा······

वर्मा अब आपको मैं कैसे यकीन दिलाऊं, सरदार जी···

फजल ठीक है, अपणे दोनों हाथ दी अपणे कान पकड़ और बोल, सदा सों, मैंने खबरां नहीं दियां पकड़, कान पकड़......

(घबड़ा कर वर्मा अपने दोनों कान पकड़ लेता है।)

वर्मा रब्बदा सों, मैंने खबरां नहीं दिया......

फजल ठीक है, ठीक है, अब पांच वार उठक-बैठक लगा...

श्याम (वर्मा को कोहनी मार कर) लगादे यार, नही तो खामखां जान चली जायगी।

(वर्मा दोनों कान पकड़कर उठक बैठक करने लग जाता है। तभी कद्दावर स्वस्थ गौरवर्णीय 50 वर्षीय इन्सपेक्टर हैदरअली वर्दी में बाहरी दरवाजे का परदा हटाकर अन्दर आते है, उनके हाथ में पिस्तौल है, जिसे वह फजल पर तान देते हैं।)

हैदर हिलने की कोशिश मत करना, तरसेमसिंह ! वरना मेरी एक ही गोली तुम्हारा भेजा उड़ा देगी।

(श्याम से) मैं ठीक समय आ पहुंचा न श्याम-लाल जी ?

फजल लेकिन इन्सपेक्टर साहब !......

हैदर (जोर से) चुप ! मैंने कहा न, हिलना भी नहीं और न अपनी जबान खोलना। इस मकान को पुलिस ने चारों ओर से घेर रक्खा है। अब तू बच के नहीं जा सकता और जल्दी से अपने हाथ की स्टेनगन नीचे डाल दे।

फजल तेणू नहिं चहिये, कोई गल नहीं, पर मेणू तो चहिये । बता, कित्तो है माल आलमारी में । ते संदूक नाल होये तो चाबी हड़ु···ओये, जल्दी कर···

वर्मा म···म···मैं यहां नहीं रहता···मैं तो यूं ही··· (थूक निगल कर श्याम की ओर संकेत कर) इनका घर है ये···मैं तो···मैं तो

फजल हां, की करदा है तू······

वर्मा म···म···मैं तो टेलीविजन में······

फजल अच्छा, तू टेलिविजन वाला है । हमारे बारे में सच्चा-जुट्ठा खबरें देने वाला । अब तो तेणू नई छड्डुना, तेणू तो गोली मारणाई मारणा······

वर्मा (कांपते स्वर में) सरदारजी, समाचार मैं नहीं देता······कसम खाकर कहता हूं, मैं नहीं देता··· अब जाओ······आपका बहुत उपकार होगा यदि······

फजल (डांट कर) ओये, खामोश...मैं णू पक्का पता है तू ही खबरें देता है······छोडूंगा नहीं······(स्टेनगन उठाकर वर्मा की ओर तानता है) अपणे भगवान नू याद करले··· ।

श्याम सरदारजी ! सचमुच ये खबरें नहीं देते ।

फजल मैंणू यकीन नहीं आंदा······

वर्मा अब आपको मैं कैसे यकीन दिलाऊं, सरदार जी···

फजल ठीक है, अपणे दोनों हाथ दी अपणे कान पकड़ और बोल, सदा सो, मैंने खबरां नहीं दियां पकड़, कान पकड़......

(घबड़ा कर वर्मा अपने दोनों कान पकड़ लेता है।)

वर्मा रब्बदा सों, मैंने खबरां नहीं दिया......

फजल ठीक है, ठीक है, अब पांच वार उठक-बैठक लगा...

श्याम (वर्मा को कोहनी मार कर) लगादे यार, नहीं तो खामखां जान चली जायगी।

(वर्मा दोनों कान पकड़कर उठक बैठक करने लग जाता है। तभी कद्दावर स्वस्थ गौरवर्णीय 50 वर्षीय इन्सपेक्टर हैदरअली वर्दी में बाहरी दरवाजे का परदा हटाकर अन्दर आते है, उनके हाथ में पिस्तौल है, जिसे वह फजल पर तान देते हैं।)

हैदर हिलने की कोशिश मत करना, तरसेमसिंह ! वरना मेरी एक ही गोली तुम्हारा भेजा उड़ा देगी।

(श्याम से) मैं ठीक समय आ पहुंचा न श्याम-लाल जी ?

फजल लेकिन इन्सपेक्टर साहब !......

हैदर (जोर से) चुप ! मैंने कहा न, हिलना भी नहीं और न अपनी जबान खोलना। इस मकान को पुलिस ने चारों ओर से घेर रक्खा है। अब तू बच के नहीं जा सकता और जल्दी से अपने हाथ की स्टेनगन नीचे डाल दे।

(फजल सिर झुकाकर कुछ सोचने लगता है।)

हैदर — सुना नहीं, मैं क्या कह रहा हूं ?······
(हैदर हवा में गोली चला देता है–धांय) फजल घबड़ा कर स्टेनगन नीचे फेंक देता है।
श्यामलाल और अजय भी घबड़ा जाते हैं।

श्याम — इसे गोली मत मर देना, हैदर ! यह तरसेम नहीं फजल है।

हैदर — (हंसकर) यह तो मैं भी जानता हूं, यह लाख भेस बदलकर, हुलिया बदल कर अपने को छिपाने की कोशिश करे, पर क्या बेटा कभी बाप की निगाह से छिप सकता है। अबे, अगर तू नाटककार है तो हम भी नाटककार के बाप हैं।

अजय — अच्छा, तो क्या आपको मालूम था कि यह सब एक नाटक है ?

हैदर — हां, मैं गश्त के लिये निकला था कि तुम्हारे पड़ोस में रहने वाला राकेश मुझे मिल गया। उसने मुझे सारी बात बता दी कि तुम लोग भेष बदल कर कौन सा नाटक खेलने जा रहे हो ?

वर्मा — आपने कहा कि आपको राकेश ने खबर दी। (अजय की ओर संकेत कर) पर राकेश तो यह खड़ा है।

हैदर — यह श्यामलाल का बेटा अजय है। (हंसकर) मेरा जहां तक अन्दाज है आपही टी.वी. के निर्माता हैं ?

वर्मा — जी हां, लेकिन आपने···

हैदर — अजी जनाब, आपके ही खातिर तो इन्होंने यह नाटक खेला था।

वर्मा — (आश्चर्य से) मेरे लिये ?

हैदर — जी हां। और असलियत तो यह है कि आपके दोस्त श्यामलाल भी इसमें शामिल हैं।

(शर्मा श्यामलाल की पीठ पर धौल जमाता है।)

वर्मा — क्यों बे, नाटक और शैतानी करने की तेरी कॉलेज की पुरानी आदत अभी गई नहीं ?

श्याम — (हंसकर) कभी-कभी मन बहलाने के लिये गुजरे जमाने को इसी तरह याद कर लिया करता हूं।

हैदर — (सोफे के करीब आकर, मोहन से) अबे ये पगड़ा-सगड़ा खोल और जल्दी से अन्दर जाकर चाय बना ला।

वर्मा — यह कौन है ?

हैदर — (हंसकर) यह है श्यामलाल का नोकर मोहन, यह भी इस नाटक में रोल कर रहा था।

(फजल की ओर संकेत कर) और यह है मेरे सुपुत्र और अजय के दोस्त फजल। अबे अब पगड़ी और दाढ़ी-मूंछ तो निकाल दे।

(फजल झेंप कर पगड़ी और दाढ़ी मूंछ निकालने लगता है।)

श्याम — हैदर ! तुमने जब गोली चलाई तो सचमुच मेरी तो रूह ही फना हो गई थी ।

हैदर — अरे, तो गोली भी कौन असली थी । जैसे पिस्तौल नकली, वैसे ही गोली भी नकली । मैं भी इस तरह ड्रामे में शरीक हो गया था ।

(अजय उठकर फजल के पास आ जाता है । मोहन सर की पगड़ी उतार कर अन्दर चला जाता है । फजल और अजय कुछ सलाह करके वर्मा के पास आते हैं ।)

अजय — अंकल ! यह सिर्फ ड्रामा था । आपको जलील करने या नीचा दिखाने का हमारा कतई कोई इरादा नहीं था । फिर भी आपके मन को अगर हमारी हरकतों से कोई ठेस पहुंची हो तो हमें माफ कर दीजियेगा ।

(दोनों झुककर घुटने के बल बैठ जाते हैं और वर्मा का एक-एक पैर पकड़ लेते हैं । वर्मा उन्हें कन्धे से खींचकर अपने से सटा लेता है और उनके माथे पर प्यार से हाथ फेरने लगता है । अब सभी के चेहरों पर हंसी व्याप्त थी ।

ऐसा ही कोई बढ़िया नाटक दूरदर्शन के लिये भी तैयार करो । मैं वादा करता हूं कि बिना किसी की सिफारश के और बिना किसी को कोई पैसा खिलाये तुम्हारा नाटक विशेष स्वीकृति के आधार पर ले लिया जावेगा ।

अजय
फजल धन्यवाद आपको चाचा, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

(मोहन हाथ में ट्रे उठाये प्रवेश करता है । ट्रे लाकर वह मेज पर रख देता है ।)

मोहन चाय अभी लेकर आता हूं, तब तक आप मुंह मीठा-खारा कर लीजिए।

वर्मा (अजय-फजल से) हां अपने नाटक में इस जमूरे को भी जरूर रखना ।

(मोहन को ओर देखकर सब लोग ठहाका लगाते हैं । मोहन अचकचाकर सब को ओर भोंदू को तरह ताकता है ।)

इसी पर परदा बन्द हो जाता है ।